टर्निंग पांइट
(प्रवचन संग्रह)

मंगल आशीर्वाद
समाधिस्थ परम पूज्य आचार्य 108
श्री विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज

एवं

समाधिस्थ परम पूज्य सराकोद्धारक षष्टम पट्टाचार्य
108 श्री ज्ञानसागर जी महाराज

रचयित्री
परम पूज्य विदुषी लेखिका, भारत गौरव,
गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माता जी

प्रकाशक
श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)
Website : www.jainswastisandesh.com
Link to Facebook : swastibhushanmataji

कृति : टर्निंग पांइट
पंचम संस्करण : 1100 प्रतियाँ
प्रकाशन वर्ष : 2024
न्यौछावर राशि : 70.00 मात्र (साहित्य सृजन हेतु)
प्रकाशक : श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)

प्राप्ति स्थान :

1. **राकेश जैन, महामंत्री-श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)**
   दूरभाष : 9650946696
2. **उमेश जैन, मंत्री-श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)**
   दूरभाष : 7982630514
3. **श्री जैन साहित्य सदन, लाल मन्दिर, चाँदनी चौक, दिल्ली**
   दूरभाष : 09311168299, 011-23253638
4. **श्री आदिनाथ सेवा संस्थान**
   श्री सोनागिर सिद्ध तीर्थ क्षेत्र, दतिया (मध्य-प्रदेश)
5. **श्री 1008 मुनिसुव्रत नाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्तिधाम**
   शाहपुरा रोड़, जहाजपुर, जिला भीलवाड़ा, राजस्थान
   दूरभाष : 8824620107

स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.) की नव गठित कार्यकारिणी
संरक्षक - स्वराज जैन (फरीदाबाद)
अध्यक्ष - शीतल प्रसाद जैन (रोहिणी, दिल्ली) ❊ **उपाध्यक्ष - नरेश जैन** (पेपर वाले, दिल्ली)
महामंत्री - राकेश जैन (कलकते वाले, दिल्ली) ❊ **मंत्री - उमेश जैन** (रामनगर, दिल्ली)
कोषाध्यक्ष - पंकज जैन (सूर्यनगर, गाजियाबाद)
कार्यकारणी सदस्य - टी. सी. जैन (रोहिणी, दिल्ली) **कोमल जैन** (रामनगर, शाहदरा, दिल्ली)
प्रचार प्रसार संयोजक : राहुल जैन (दिल्ली)
संगठन मंत्री - ब्र. मनीष भैया (संघस्थ) **ब्र. प्रियंका दीदी** (संघस्थ) **मनीष जैन** (करेली)

मुद्रक : दिपिशा एंटरप्राइज (दिल्ली) मो. 9210488047

प्रशांत मूर्ति आचार्य शांतिसागर प्रथम 'छाणी' और उनकी आचार्य परम्परा

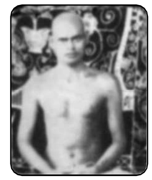

बाल ब्रह्मचारी, प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज प्रथम 'छाणी' (उत्तर)

जन्म तिथि – कार्तिक वदी एकादशी, वि.सं. 1945 (31.10.1888)
जन्म स्थान – ग्राम - छाणी, जिला - उदयपुर (राजस्थान)
जन्म नाम – श्री केवलदास जैन
पिता का नाम – श्री भागचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमति माणिक बाई जैन
क्षुल्लक दीक्षा – सन् 1922 (वि.सं. 1979), ग्राम गढ़ी, बाँसवाड़ा (राजस्थान)
मुनि दीक्षा – भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी वि.सं. 1980 (23.09.1923), सागवाड़ा जिला-डूंगरपुर (राज.)
आचार्य पद – सन् 1926 (वि.सं. 1983), गिरिडीह (झारखंड)
समाधिमरण – ज्येष्ठवदी दशमी (वि.सं. 2001) 17 मई, 1944, सागवाड़ा डूंगरपुर (राज.)

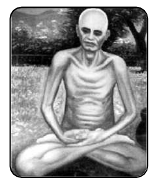

परम पूज्य प्रथम पट्टाचार्य 108 श्री सूर्यसागर जी महाराज

जन्म तिथि – कार्तिक शुक्ल नवमी, वि.सं. 1940 (09.11.1883)
जन्म स्थान – प्रेमसर, जिला - ग्वालियर (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री हजारीमल पारेवाल जैन
पिता का नाम – श्री हीरालाल जैन
माता का नाम – श्रीमती गेदा बाई जैन
ऐलक दीक्षा – आसोज शुक्ल छठ वि.सं. 1981 (04.10.1924, इन्दौर (म. प्र.)
मुनि दीक्षा – मार्गशीर्ष वदी ग्यारस वि.सं. 1981 (23.11.1924), हॉटपिपल्या जिला-देवास (म.प्र.)
दीक्षा गुरु – आचार्य श्री शांतिसागर 'छाणी' महाराज से
आचार्य पद – कार्तिक शुक्ल दशमी वि.सं. 1985 (22.11.1928), कोडरमा (झारखंड)
समाधिमरण – श्रावण कृष्ण अष्टमी वि.सं. 2009 (14.07.1952), डालमिया नगर (झारखंड)

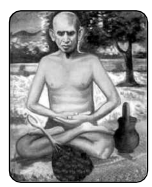

परम पूज्य द्वितीय पट्टाचार्य श्री 108 विजयसागर जी महाराज (वचन सिद्धि आचार्य)

जन्म तिथि – माघ सुदी अष्टमी, वि.सं. 1938 (26.01.1882)
जन्म स्थान – सिरौली, जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री चोखेलाल जैन
पिता का नाम – श्री मानिक चन्द जैन
माता का नाम – श्रीमती लक्ष्मी बाई जैन
क्षुल्लक दीक्षा – इटावा (उत्तर प्रदेश)
ऐलक दीक्षा – मथुरा (उत्तर प्रदेश)
मुनि दीक्षा – वि.सं. 2000 (सन् 1943) मारोठ जिला-नागौर (राज.)
दीक्षा गुरु – प्रथमपट्टाचार्य श्री 108 सूर्यसागर जी महाराज
आचार्य पद – लश्कर, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)
समाधिमरण – पौष वदी नवमी वि.स. 2019 (20.12.1962) मुरार, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)

परम पूज्य तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमल सागर जी महाराज (भिण्ड वाले)

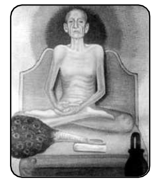

जन्म तिथि – पौष शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 1948 (01.01.1892)
जन्म का नाम – श्री किशोरी लाल जैन
जन्म स्थान – ग्राम-मोहना, जिला-ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
पिता का नाम – श्री भीकमचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमति मथुरा देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – वि.सं. 1997 (सन् 1941)
ऐलक दीक्षा – कापरेन नगर जिला कोटा (राज.)
मुनि दीक्षा – अगहन वदी पंचमी वि.सं. 2000 (17.11.1943) कोटा (राज.) में
दीक्षा गुरु – द्वितीय पट्टाचार्य श्री विजयसागर जी महाराज द्वारा पाटन, झालावाड़ (राज.)
आचार्य पद – वि.सं. 2030 (सन् 1973), हाड़ौती (राज.) में
समाधिमरण – बैशाख कृष्ण अष्टमी, वि.सं. 2030 (26.04.1973), दिन गुरुवार, सांगोद जिला कोटा (राज.)

मासोपवासी, समाधि सम्राट परम पूज्य चतुर्थ पट्टाचार्य 108 श्री सुमतिसागर जी महाराज

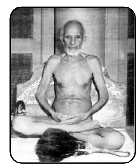

जन्म तिथि – आसोज शुक्ल चतुर्थी, वि.सं. 1974 (20.10.1917)
जन्म स्थान – ग्राम - श्यामपुर, जिला - मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री नत्थीलाल जैन
पिता का नाम – श्री छिद्दूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमति चिरौंजी देवी जैन
ऐलक दीक्षा – चैत शुक्ल त्रियोदशी वि.सं. 2025 (11.04.1968), रिवाड़ी (हरियाणा) में
ऐलक नाम – श्री वीरसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू – तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमलसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा – अगहन वदी द्वादशी वि.सं. 2025 (17.11.1968), गाजियाबाद (उ.प्र.)
आचार्य पद – ज्येष्ठ सुदी पंचमी वि.सं. 2030 (05.06.1973), मुरैना (म.प्र.)
(तृतीय पट्टाचार्य श्री विमलसागर जी 'भिंड' महाराज से)
समाधिमरण – क्वार वदी त्रियोदशी वि.सं. 2051(03.10.1994), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)

परम पूज्य पंचम पट्टाचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज

जन्म तिथि – अगहन वदी चतुर्थी, वि.सं. 2006 (10.11.1949)
जन्म स्थान – बरवाई, जिला - मुरैना (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री सुरेश चन्द जैन
पिता का नाम – श्रीमंत सेठ श्री बाबूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमती सरोज देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – फाल्गुन शुक्ल तृतिया वि.सं. 2028 (17.02.1972) श्री सम्मेदशिखर जी (झारखंड)
मुनि दीक्षा – चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरी जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)
दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमतिसागर जी महाराज
आचार्य पद – चैत्र सुदी पंचमी वि.सं. 2046, (10.04.1989) नरवर जिला- शिवपुरी (म.प्र.) पंचकल्याणक महोत्सव के उत्सव पर
समाधिमरण – फाल्गुन सुदी तृतीया वि.सं. 2069 (14.03.2013)

परम पूज्य राष्ट्रसंत, सराकोद्धारक, वात्सल्यमूर्ति षष्टपट्टाचार्य श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज

जन्म तिथि – वैशाख सुदी द्वितीया, वि.सं. 2014 (01.05.1957)
जन्म स्थान – मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री उमेश कुमार जैन
पिता का नाम – श्री शांतिलाल जैन
माता का नाम – श्रीमती अशर्फी देवी जैन
ब्रह्मचर्य व्रत – वि.सं. 2031 (सन् 1974)
क्षुल्लक दीक्षा – कार्तिक सुदी चतुर्दशी वि.सं. 2033 (05.11.1976) सोनागिरि सिद्धक्षेत्र में
क्षु. दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमति सागर जी महाराज
क्षु. दीक्षोपरान्त नाम – क्षुल्लक 105 श्री गुणसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा – चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)
मुनि दीक्षोपरान्त नाम – मुनि श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्रीसुमतिसागर जी महाराज
उपाध्याय पद – माघ वदी अष्टमी वि.सं. 2045 (30.01.1989), सरधना (मेरठ)
आचार्य एवं षष्ठपट्टाचार्य पद – ज्येष्ठ वदी तृतीया वि.सं. 2070 (27.05.2013) तीर्थ क्षेत्र बड़ागाँव जिला-बागपत (उ.प्र.)
समाधि – कार्तिक कृष्ण अमावस्या वि.सं. 2077, भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव, 15.11.2020, दिन रविवार, बारां (राज.)

गणिनी आर्यिका रत्न श्री 105 स्वस्तिभूषण माता जी

जन्म तिथि – 1-11-1969 कार्तिक कृष्ण सप्तमी दिन, शनिवार (वि.सं. 2026)
जन्म स्थान – छिंदवाडा (मध्य प्रदेश) बचपन सिवनी
जन्म नाम – संगीता जैन (गुड़िया)
पिता का नाम – श्री मोती लाल जैन (निवासी सिवनी) वर्तमान में (क्षु. श्री 105 परिणामसागर जी महाराज)
माता का नाम – श्रीमती पुष्पा देवी जैन वर्तमान में (क्षु. श्री 105 अर्हत मती माताजी)
प्रथम ब्रह्मचर्य व्रत – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज
लौकिक शिक्षा – एम. ए. (संस्कृत)
आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत
दीक्षा गुरू – प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शान्ति सागर जी (छाणी) महाराज (उत्तर) के पंचम पट्टाचार्य सिंहरथ प्रवर्तक त्रिलोकतीर्थ प्रणेता आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज
दीक्षा तिथि व स्थान – 24 जनवरी 1996 माघ शुक्ल पंचमी, दिन बुधवार, (वि.सं. 2052) इटावा (उ.प्र.)
वर्तमान पट्टगुरु व गणिनी पद प्रदाता – परम पूज्य सराकोद्धारक तीर्थोद्धारक षष्ठम पट्टाचार्य श्री 108 ज्ञान सागर जी महाराज
तिथि एवं स्थान – 13 फरवरी 2020 फाल्गुन कृष्ण पंचमी, दिन बृहस्पतिवार (वि.सं. 2076), तीर्थ क्षेत्र स्वस्ति धाम, जहाजपुर (राजस्थान)

नई दिशा, नई प्रेरणा देने वाली गुरुमाँ

आज कि इस भौतिकता की चकाचोंध में हर व्यक्ति अंधा सा प्रतीत होता जा रहा है, वह अपने बचपन, जवानी और बुढ़ापे को सार्थक नहीं कर पा रहा, उसने जैसे अपने जीवन जीने की कला को ही नष्ट सा कर दिया है। जीवन जीने का एक बहुत अच्छा उदाहरण हर व्यक्ति के जीवन में अवश्य होना चाहिए। ऐसे ही बहुत से उदाहरण पूज्य माता जी ने आपके हाथों में इस पुस्तक मे दिये है। पूज्य माता जी ने कहा है कि सूर्य उगता है, चढ़ता है, ढल जाता है। फूल कली बनती है, खिलती है, मुरझती है और गिर जाती है। ठीक मनुष्य इसी तरह जन्म लेता है, जवान होता है, बूढ़ा होता है और मर जाता है। ये प्रकृति का नियम है, इस पर चिंतन और मनन करना चाहिए। जी हां पूज्या माता जी ने ठीक ही तो कहा है, अगर हम इस कृति में दिये सभी ही नहीं बल्कि कुछ उदाहरण को भी अपनायेंगे, तो निश्चित ही हम अपने इस क्षण भंगुर जीवन को बहतर बना पायेगे। पूज्य माता जी द्वारा लिखी गई एक-एक लाइन हमें एक नई सीख, एक नई प्रेरणा को एक नई दिशा प्रदान करती है।

माता श्री ने अपने मन मे उत्पन्न होने वाले अच्छे-अच्छे भावों को इस कृति में संजोया है। जैसे प्रकृति ने सबको एक सा नहीं बनाया, मृत्यु नहीं होती तो क्या होता, मन की कीमत, सांसारिक सुख में दुखः साथ है, आत्मा पावर हाऊस है, परिवार ने क्या नहीं दिया आपको, पाप पुण्य बन जाता है और पुण्य पाप आदि ऐसे बहुत से प्रवचन जो की बहुचर्चित बने हुए हैं, आप भी उन प्रवचन को पढ़कर अपने जीवन में एक नया आयाम स्थापित कर सकेंगे, जब आप इस पुस्तक को एक बार पढ़ेगे तो मैं कहती हूँ निश्चित ही

आप उसे अपने जीवन की यथार्थता समझेगे, ऐसा महसूस करेगे मानों यह मेरे स्वयं के जीवन की ही घटना हो। पूज्य माता जी द्वारा लिखित 85 कृतियों में से एक यह कृति जो आपको अवश्य ही पढ़कर अपने जीवन में उतारनी चाहिए।

सूरज के दर्शन से जलज खिलता है।
पारस के स्पर्श से लोहा सोना बन जाता है॥
स्मरण गुरू का बड़ा आलौकिक है।
बिना प्रयत्न सब मिलता है।।

ऐसी भावना भाते हुए पूज्या गुरू मां को त्रयबार वंदामि, वंदामि, वंदामि।

शालू दीदी
(संघस्थ)

1

मिलावट में दुखावट है

जहाँ-जहाँ कष्ट है वहाँ-वहाँ पर मिलावट अवश्य है। यदि मिलावट नहीं होती तो कष्ट भी नहीं होता। शुरूआत प्रकृति से करते हैं जहाँ सर्दी और गर्मी का मौसम मिला हुआ हो वहाँ बीमारियां होती हैं। जहाँ गर्मी और बरसात का मौसम है, लोग बहुत बीमार पड़ते हैं। अकेली सर्दी या अकेली गर्मी स्वास्थ्य खराब नहीं करती।

इसी तरह आत्मा और शरीर दो वस्तुयें हैं, यदि ये अकेले-अकेले हों तो दोनो ठीक रहते हैं। पर Mix होने पर आत्मा बहुत परेशान होती है। क्योंकि परेशानी महसूस करने की ताकत आत्मा में ही है। जब ये दोनों साथ रहते हैं, और मन कंट्रोल ना हो तो, निश्चित ही ये मिलावट आत्मा को नरक पहुँचा देती है। प्रकृति की मिलावट तो शरीर का स्वास्थ्य खराब करती है, दो द्रव्यों की मिलावट तो आत्मा को ही खराब कर देती है। प्रकृति की मिलावट अस्पताल भेजती है, और भावों की मिलावट नरक भेजती है।

''एक चेहरे पर कई चेहरे, बहुत-बहुत ये गहरे हैं। पर धर्म के क्षेत्र में, सभी अंधे और बहरे हैं।'' इसी तरह हम माला फेरने बैठे हैं तो मन वचन काय सब माला (भगवान) में ही होने चाहिये पर यहाँ भी Mixing चलती है हाथ माला फेरता है वचन मंत्र पढ़ता है और मन दुनिया दारी में घूमता है। ऊपर वाला काम तो हो गया पर अंदर वाला काम नहीं हुआ। दिखने वाला काम कर लेते हैं। पर नहीं दिखने वाले को छोड़ देते हैं। इसीलिये हमें दिखने वाला सुख तो मिल जाता है पर नहीं दिखने वाला आत्मिक सुख शांति नहीं मिल पाती। दिखने वाला सुख कोठी बंगला, गाड़ी, बच्चे, परिवार, अच्छे कपड़े सोना, चांदी आदि-आदि...।

कभी-कभी तो मिलावट इतनी ज्यादा होती है कि असली वस्तु की पहचान ही नहीं आती है। बहुत सारे भक्त आते हैं उनमें से कुछ भक्तों का, बाद में पता चलता है कि वह तो बाहर जाकर निंदा कथा में व्यस्त हैं। ऐसे व्यक्ति धर्म करने

नहीं यहाँ की कमियाँ ढूंढने आते हैं। ऐसे दोमुंहे को पहचानना बड़ा मुश्किल होता है।

वर्तमान में मिलावट की वस्तुयें चरम सीमा पर हैं। इंसान नकली सजावट करके अपने चेहरे तक को बदल देता है। बाल कलर करके, बालों के रंग को बदल देता है। इससे असली इंसान को पहचानना मुश्किल हो जाता है।

दिखावट में सजावट है,
सजावट में बनावट है।
बनावट में मिलावट है।।

आज भोजन की ऐसी कौन सी वस्तु है जिसमें मिलावट नहीं है। नाम गिनाना बेकार है, क्योंकि सबसे जरूरी दूध, सब्जी, मसाले, गेहूँ, चावल सब पर पॉलिस करके चमकाया जाता है। इस विषय में उपभोक्ता स्वयं ज्यादा समझदार है।

2

हम भगवान का ध्यान करते हैं तो भगवान किसका ध्यान करते हैं?

वर्तमान की आने वाली पीढ़ी अत्यंत होशियार और सूक्ष्म दृष्टि वाली है। एक बच्चे ने मेरे से प्रश्न किया कि माता जी हम भगवान का ध्यान लगाते हैं तो भगवान किसका ध्यान लगाते हैं? प्रश्न बड़ा जानदार था, दम है प्रश्न में। हमारे बड़े बुजुर्गो की श्रद्धा इतनी होती थी कि उनके प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होते हैं आज के बच्चे श्रद्धा के साथ ज्ञान से भी जाग्रत हैं। अब शास्त्रों में खोजना है कि भगवान ने ऐसा कौन सा ध्यान लगाया कि भगवान बन गये और अब वे किसका ध्यान करते हैं।

वैराग्य आते ही जीव भोग और उपभोग की वस्तुयें छोड़ देता है। परिवार से मोह समाप्त कर देता है। राग के कारण इंद्रिय विषय और परिवार अपना लगता था। पर जब पता हुआ कि ये जीवन क्षण भंगुर है, यहां कोई अपना नहीं तो वे सब चीजें छूट गई। जिव्हा का स्वाद का विषय, रूप निहारना छोड़ दिया, और सबसे नाता तोड़ दिया। गंध सुगंध छोड़ दिया। विचार करें कि घर में 24 घण्टे में इन वस्तुओं के विचार छूटते हैं अर्थात इन विषयों से हम बाहर निकलते है। आँख से निकले तो कान की इच्छा करने लगे। कान से निकले तो मुँह की इच्छा पूर्ति करने लगे, मुंह से निकले तो, कोमल शैय्या खोजने लगे, वहां से उठे तो फिर भोग उपभोग में लग गये। प्रभु को जब वैराग्य आया तो उन्होने ये सब कुछ छोड़ दिया, वस्त्र आभूषणों का भी त्याग कर दिया। परिवार से संबंधित विचार समाप्त कर जंगल में अकेले चले गये।

इस शब्द का अर्थ समझें कि जंगल में अकेले गये, अर्थात संसार के विचारो की भीड़ भी महलों में छोड़ कर गये। अब घर के विषय में सोचना नहीं इंद्रिय विषय में सोचना नहीं, अब ध्यान कहाँ लगायेंगे इस बात पर गौर करना है। तभी

हम भगवान को समझ पायेंगे। इस विषय को समझे बिना भगवान को समझना बहुत मुश्किल है। दुनिया भगवान को भगवान मानती तो है पर जानती नहीं है। इन्ही विषयों से प्रारंभ करें कि जंगल में कुछ नहीं है अब प्रभु वहां करते क्या हैं? आप भी कल्पना करो कि आप बिल्कुल अकेले जंगल में गये, योजना बनाओ कि आप वहाँ जाकर क्या करोगे। प्रभु को अनुभव में लाने के लिये उनके जैसे अनुभव लेना शुरू कर दो।

दीक्षा के समय तीर्थंकर के साथ देवों की और मनुष्यों की भीड़ होती है पर दीक्षा कल्याणक संपन्न होते ही सभी वहाँ से चले जाते हैं और प्रभु वहाँ ध्यान में लीन हो जाते हैं। आपसे कहा जाये कि आंख बंद करके ध्यान लगाओ आपका मन कहाँ जायेगा? आप आँख बंद करके भटक जाते हैं। और खुली आँख से संसार में भटक रहे हैं। लेकिन प्रभु खुली आंख से भी रास्ते पर हैं और आंख बंद करने पर अंदर ध्यान और ज्ञान का रास्ता खुल जाता है। मन का दरवाजा अंदर और बाहर दोनों तरफ खुलता है। अर्थात जब मन बाहर होता है इंद्रियों की विषय पूर्ति करवाता है, और ध्यान में जब अंदर खुलता है तो ज्ञान और ध्यान कराता है। ध्यान में लीन होना ही मन शुद्धि है।

ध्यान में सर्व प्रथम आसन आवश्यक है। खडगासन, पद्मासन अर्द्धपद्मासन, ये तीनों आसन ना बन सके तो सुखासन लगाया जाता है। लेकिन प्रभु केवल दो ही आसन में ध्यान लगते हैं खड्गासन और पद्मासन। शरीर ध्यान करने के लिये व्यवस्थित हो जाता है। फिर तत्वों का चिंतन द्रव्यों का चिंतन, प्रारंभ हो जाता है। सात तत्व हैं। जीव, अजीव, आस्त्रव बंध, संवर, निर्जरा, मोक्ष, तत्व-जीव से शुरू होते हैं और मोक्ष पर समाप्त होते हैं। जीव तत्व के चिंतन में जीव तत्व की खोज में दिन महीनें निकल जाते हैं, प्रभु को पता भी नही चलता है। इन सात तत्वो का स्वरूप छोटे रूप में भाग में समझाया जाता है। इसी तत्व को बड़े में समझाने के लिये आ. उमास्वामी के द्वारा तत्वार्थ सूत्र नामक पूरा ग्रंथ लिखा है। इसको और विशाल रूप में समझाने के लिये षट्खंडागम (धवला) की सोलह किताबे, महाधवल की सात किताबें हैं और जयधवला की भी अनेक किताबें हैं। मात्र सात तत्वो की व्याख्या में 39 किताबे हैं। कहा जाता है कि जैन धर्म के विरोधियो ने एक समय, में जैन धर्म के इतने शास्त्र जलाये कि छह महीने तक आग नहीं बुझी। उसमें जैन धर्म के अनेक ग्रंथ विलुप्त हो गये।

जितना भगवान की दिव्य ध्वनि में आया है उसका कुछ हिस्सा गणधर ने झेला, जितना गणधर ने झेला उसका कुछ हिस्सा आचार्यो को मिला। और उसका कुछ हिस्सा ही शास्त्रो में लिपिबद्ध किया गया। इस तरह सात तत्वो के चिंतन को इतनी गहराई से लंबे समय तक करते हैं, इसके अलावा अन्य विचार नहीं करते। जब मन वचन काय को एकाग्र करके ध्यान लगाते हैं तो वर्तमान में संवर होता है अर्थात कर्मो का आना रूक जाता है। पुराने कर्म भागना शुरू कर देते हैं। और आत्मा में विशुद्धि बढ़नी प्रारंभ हो जाती है। स्वयं के द्वारा स्वयं की खोज स्वयं में की जाती है। एक न एक दिन शुद्ध जीव की प्राप्ति हो जाती है।

जब प्रभु ध्यान में लीन होते हैं तब इतनी एकाग्रता होती है कि कोई उपसर्ग भी करे तो पता नहीं चलता। पारसनाथ जी पर उपसर्ग हुआ, भगवान महावीर पर हुआ, पांडवो पर, सुकौशल मुनि, सुकमाल मुनि, चाणक्य मुनि आदि अनेक महामुनिराज के ऊपर उपसर्ग हुआ। इसी ध्यान की शक्ति से वे उपसर्ग विजेता बने। और इसी ध्यान रूपी तलवार से कर्मों को काट कर मोक्ष पधारे। इसी ध्यान ने इंसान को भगवान बना दिया।

अब आपका अगला प्रश्न होगा, भगवान अब किसका ध्यान करते हैं? क्या अब भी तत्वों का चिंतन करते हैं? नहीं अब भगवान तत्वों का चिंतन नहीं करते। अब शब्द रूप चिंतन वर्गणाऐं उनके पास नहीं हैं। उन्हे कितना आनंद आता होगा। थोडे प्रश्न पहले आपसे करूँ? कभी-कभी रात सोते समय आप गहरी नींद में सो जाते हो तो आप सुबह कहते हो, आज बहुत अच्छी नींद आई। आपसे कहा जाये कि आप विस्तार से शब्दो में व्याख्या करें। तो आप कहोगे कि आज सोते हुये बाहर का कुछ भी पता चला कोई विचार नहीं, कोई सपने नहीं, बस खो गये थे। लेकिन नींद कैसी थी ये आप नहीं बता सकते। ठीक ऐसे ही प्रभु 18 दोषो से रहित हो गये, इंद्रिय सुख नहीं बल्कि आत्मिक सुख प्राप्त होता है और उस सुख का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता।

यो चित्त निज में थिर भये, तिन अकथ जो आनंद लहे।
सो इन्द्र नाग नरेन्द्र वा, अहमिन्द्र के नाही कहे।।

अर्थात प्रभु को इतना सुख मिला कि जितना इन्द्र, धरणेन्द्र, अहमिन्द्र के पास भी नहीं है। ये कहा जाता है कि सारे संसार का सुख तराजू के एक पलड़े में रखे और दूसरा एक सिद्ध भगवान का सुख ज्यादा है। **अथवा भगवान**

भक्तों में नहीं बल्कि अपनी आत्मा में रहते हैं। यही ध्यान का स्वरूप है। विशेष ध्यान की व्याख्या ज्ञानार्णव ग्रंथ मे दी हुई है, ध्यान के लिये रूचि जाग्रत करने के लिये यह ग्रंथ अवश्य पढ़े एवं दो मिनट ध्यान लगायें और ध्यान के लिय ज्ञान आवश्यक है तो स्वाध्याय अवश्य करें।

बड़ा ही महत्व है

गाने में तान का
शरीर में जान का
मंदिर में भगवान का
बड़ा ही महत्व है।

समुद्र में जलयान का
आकाश में वायु यान का
भगवान के ध्यान का
बड़ा ही महत्व है।

पक्षियों में काग का
महलो में बाग का
जैन धर्म में त्याग का
बड़ा ही महत्व है।

3

प्रकृति ने सबको एक सा नहीं बनाया

संसार में समस्त व्यक्ति, वस्तु, पेड़-पौधे, पशु, पक्षी, कीडे-मकौड़े, सब अलग-अलग हैं। भगवान महावीर कहते हैं ''नाना कम्मा, नाना जीवा'' अर्थात अनेक-अनेक प्रकार के कर्म हैं, और अनेक-अनेक प्रकार के जीव है। इन्हीं से मिलकर संसार बना है। यदि सब जीव एक जैसे हो जाये तो संसार नाम ही समाप्त हो जाये। किन्तु ऐसा हो नहीं सकता है। हाथ में पाँच अगुँलियाँ है किन्तु पाँचों की लंबाई अलग-अलग है। एक अंगूठा है दूसरी तर्जनी है, तीसरी मध्यमा है, चौथी अनामिका है और पांचवी छिगुँली है। सबके नाम भी अलग-अलग है। यदि हम चाहें कि सारी अँगुली बराबर लंबाई चौडाई की हो तो कितना अच्छा लगेगा। कल्पना कीजिये यदि सारी अंगुली बराबर हो गई तो आप थाली में रखी रोटी का ग्रास उठाकर मुँह में नहीं रख सकते, सामान नहीं उठा सकते हैं। अर्थात कोई काम नहीं कर सकते। संसार के काम करने के लिये इनका छोटा बड़ा होना आवश्यक है। अँगुली यदि बराबर हो जाये तो आप आहार दान नहीं दे सकते और मुनिराज आहार ले नहीं सकते। लिखाई पढ़ाई नहीं हो सकती। अतः किसी भी व्यवस्थाके लिये छोटा बड़ा होना आवश्यक है। इसी तरह संसार में अनेक तरह के लोग हैं तभी संसार की व्यवस्था बनी है।

आम के बगीचे में सौ पेड़ आम के लगे हैं। आप देखिये कि सौ पेड़ो की ऊँचाई मोटाई सबकी बराबर नहीं होगी, सब पेड़ों में लगने वाले आम के फल का स्वाद भी अलग-अलग होगा। कोई खट्टा होगा, कोई मीठा होगा, कोई कम खट्टा कम मीठा होगा। कुछ ना कुछ अंतर अवश्य होगा। हम चाहते हैं कि सारे पेड़ एक से हो और सबका स्वाद एकसा हो तो हमारे चाहने से नहीं हो सकता।

किसान खेत में बीज बोता है, बीज डालना किसान का काम है पर वो ये नहीं देखता कि सारे बीज पेड़ बने या ना बने। क्योंकि उसे भी पता है कि सारे बीज पेड़ बन ही नहीं सकते। क्योंकि कुछ बीज तो चिड़िया खा जाती है, कुछ बीज गल जाते हैं। कुछ बीज के पेड़ छोटे होते हैं और कुछ में बहुत अच्छे दाने आते हैं। किसान ने 1000 बीज बोये और 700 में भी पेड लग गये तो, किसान खुश रहता है।

एक क्लास में 90 बच्चे एक साथ पढ़ते हैं। पढाने वाले टीचर सबके एक ही होते हैं किन्तु उनमें से कोई बच्चा 100% से पास होता है और कोई 90, 80, 70 अथवा 33% से पास होता है और कोई तो फेल हो जाता है। इसमें आप किसे दोष देगे। टीचर को, यदि टीचर को देते है, तो 100% वाला बच्चा भी उसी ने पढ़ाया है, दूसरा फेल हो गया तो वो क्या करें। उत्तर ये है कि सबका ज्ञानावरणी कर्म का क्षयोपशम अलग-अलग होता है उसके अनुसार ही वो ग्रहण कर सकता है। वर्तमान समय में बच्चो की पढ़ाई को लेकर माता-पिता बहुत परेशान रहते हैं और पाप कर्मों का बंध करते हैं।

संसार में प्रतिदिन लाखों बच्चे जन्म लेते हैं। क्या वे सारे बच्चे एक सी जिन्दगी, बुद्धि, स्वास्थ्य प्राप्त कर सकते हैं? नहीं किसी की कोई गारंटी नहीं है। उनमें से कितने बच्चे जन्म होते ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। कुछ थोड़े बड़े होकर चले जाते हैं। कुछ मंद बुद्धि होते हैं। और कुछ कम दिमाग के होते हैं और कुछ बहुत होशियार होते हैं, कुछ बीमार होतें हैं। शायद इस विषय पर कभी किसी ने कोई चर्चा नहीं की वरना, स्पष्ट रिजल्ट सामने आ जाते हैं। जिस दिन प्रधान मंत्री का जन्म हुआ था लाखो बच्चे पैदा हुये होंगे, पर सब प्रधानमंत्री नहीं बने।

किसी-किसी को डा. बहुत अच्छे लगते हैं। बाकी से उन्हे घृणा होती है वे कहते है डा. के अलावा सब बेकार है। सोचो। यदि संसार में सारे लोग डा. बन जाये तो, मकान कौन बनायेगा, कपड़ा कौन बनायेगा, खेती कौन करेगा, पढ़ने के लिये किताबे कौन लिखेगा, कौन छापेगा, व्यापार कौन करेगा। आपके लिये सब्जी, दूध कहाँ से आयेगा। और डा. बन गये किन्तु दवाई बनाने वाला नहीं

रहेगा तो आप खाओगे क्या? झाड़ू बनाने वाला ना हो तो, संसार में कितनी गंदगी हो जायेगी अर्थात आप किसी से घृणा मत करो। ये संसार है। संसार में सब तरह के लोग आवश्यक हैं। सबके साथ ही संसार की व्यवस्था सुचारू रूप से चल पायेगी। समय पर सुई भी काम आती है और तलवार भी। जब सुई से काम हो रहा है तो तलवार बेकार नहीं है समय पर वो भी काम आयेगी। सर्दी के मौसम में आम के पेड़ पर फल नहीं लगते किन्तु उन्हे काट कर नहीं फेंकते, गर्मी आयेगी तो फल लगेगे। ऐसा नहीं है कि जब आम चाहिये तो आम का पेड़ लगालो, ऐसा नहीं हो सकता। फल नहीं देने की स्थिति में भी उसकी सुरक्षा की जाती है।

एक जंगल में शेर सो रहा था। चूहा ने देखा कि शेर सो रहा है। वह इधर-उधर कूदने लगा। शेर की नींद खुल गई शेर ने उसे पंजे में पकड़ लिया। चूहा गिड़गिड़ाने लगा मुझे छोड दो मैं कभी तुम्हारे काम आऊँगा। शेर हँसा और बोला मैं जंगल का राजा, शक्तिशाली, मुझे क्या किसी की जरूरत, तूने मेरी नींद खराब की है, मैं तुझे मारूँगा। चूहा फिर गिड़गिड़ाया और बोला पता नहीं शायद काम आ जाऊँ एक बार छोड़ कर देखो तो सही, यदि काम नहीं आया तो आप मुझे खा जाना। शेर ने उसे छोड़ दिया।

एक दिन शेर सो रहा था। शिकारियों ने सोते शेर पर जाल डाल दिया। शेर शिकारियों के जाल में फँस गया। वह चाहकर भी नहीं निकल पा रहा था। तभी घूमता हुआ चूहा आया उसने शेर को जाल में फँसे देखा। तो उसने अपने छोटे-छोटे दाँतो से सारा जाल काट दिया, और शेर स्वतंत्र हो गया। इस तरह छोटा चूहा भी शेर के काम आ गया। संसार की कोई भी चीज व्यर्थ नहीं है।

सौ व्यापारी एक साथ व्यापार शुरू करते हैं। चलते-चलते कुछ का व्यापार बंद हो जाता है, कुछ मध्यम से करते हैं और कुछ शहर देश, विदेश में नाम कमा लेते हैं। व्यापार बुद्धि के साथ-साथ भाग्य से भी चलता है। सबका एक सा भाग्य नहीं होता। जिसने जैसे कर्म किये उसका जीवन वैसा ही बन जाता है। एक पिता के पांच पुत्र हो तो पाँचो एक से नहीं होते। पिता चाहता है सबको खूब बड़ा आदमी बना दूँ किन्तु बच्चों का अपना भाग्य भी होता है। माता पिता

जन्म देते हैं, पुरुषार्थ करते हैं पर भाग्य बच्चे का भी होना चाहिये। माता पिता बच्चे का भाग्य नहीं बना सकते।

हमारी दो आँखे भी बराबर नहीं हैं। थोड़ा अंतर होता ही है। छोटे और बड़े की चर्चा में निंदा में समय नष्ट न करो, उसे व्यवस्था मानकर स्वीकार करो। जहाँ पुरुषार्थ में सफलता न मिले वहाँ भाग्य और व्यवस्था का चिंतन प्रारंभ कर दें वरना, ये सभी विषय दुखी करने के अलावा कुछ नहीं करेंगे। तुम्हारा छोटा बच्चा गाड़ी की चाबी, चूडे और छल्ले से खुश हो जाता है पर बड़ो को खुश करने में बड़ी से बड़ी वस्तु भी छोटी हो जाती है। लेकिन संसार की सच्चाई पर चिंतन किया जाये तो निश्चित ही जीवन के सार को प्राप्त कर सकते हैं।

- आ. स्वास्ति भूषण

बड़ा ही महत्व है

अच्छे काम की प्रगति का
होने में सुगति का
जीवों के लिये प्रकृति का
बड़ा ही महत्व है।

बच्चो के लिये माता का
कर्मों में साता का
पहचानने में अपनी योग्यता का
बड़ा ही महत्व है।

लड़कियो में सखी का,
बरसात में मक्खी का,
नहीं होने में दुखी का,
बड़ा ही महत्व है।

4

मृत्यु नहीं होती तो क्या होता?

मुस्कुराती सुबह, शाम में ढली होती है।
जिन्दगी की पीठ पर, मौत लिखी होती है।।
बढाना है कदम तो, जल्दी-जल्दी बढ़ाओ।
वरना श्वांसो की कोई, गारंटी नहीं होती है।।

सूर्य उगता है चढ़ता है, ढल जाता है। फूल कली बनती है, खिलती है, मुरझाती है और गिर जाती है हर व्यक्ति और वस्तु की एक उम्र होती है। उसके पश्चात उसका अंत अवश्य है। ठीक मनुष्य भी इसी तरह जन्म लेता है, जवान होता है, बूढ़ा होता है और मर जाता है। ये प्रकृति का नियम है, इस पर चिंतन मनन अवश्य करना चाहिये।

एक लकड़ी के जैसे दो छोर होते है वैसे ही इस जीवन के दो छोर हैं जिसमें जन्म और मृत्यु हैं। जन्म के बाद मृत्यु है, तो मृत्यु के बाद जन्म भी है। इंसान जन्म लेता है पर मृत्यु को भूल जाता है और मृत्यु से डरता है पर मृत्यु के बाद जन्म भी तो है। जो मृत्यु को जानते हैं, वे भी मरते हैं और जो मृत्यु को नहीं जानते वे भी मरते हैं। ये क्रम अनादि काल से चल रहा है इस जन्म मृत्यु के चक्र को देव, दानव, सुर, असुर, पशु पक्षी नारकी कोई नहीं तोड़ सकता। मात्र मानव ही एक महाशक्ति है जो इसे तोड़ सकता है, सारे जीव जन्तुओं को जन्म-मरण अवश्य होता है। ना चाहते हुये भी, या ना जानते हुये भी। पर मनुष्य आत्म धर्म से इस चक्रव्यूह से बाहर निकल सकता है। 84 लाख योनि के शरीर में से एक मनुष्य योनि का दरवाजा है जिससे हम बाहर निकल सकते हैं। वह रास्ता मृत्यु से ही जाता है। मृत्यु को समाधि बनाये तो, समाधि मृत्यु को निर्वाण बना देती है। जहाँ से दोबारा कभी मृत्यु नहीं होती।

मात्र मृत्यु को सुधार लें तो जीवन सुधर जायेगा। और जीवन को सुधारे तो मृत्यु सुधर जायेगी, जैसे स्वास्थ्य के प्रतिकूल भोजन करें तो, बीमार हो जायेंगे, और स्वास्थ्य के अनुकूल भोजन करें तो बीमारी ठीक हो जायेगी। भोजन दोनो तरह से किया जा रहा है, एक भोजन में संयम, धर्म और ज्ञान तीनो काम करेंगे, दूसरे में इंद्रिय लिप्सा, असंयम और अधर्म तीनो काम करेंगे। ठीक इसी तरह मृत्यु नामक क्रिया दोनो में होगी, शरीर को दोनो छोड़ेंगे पर एक ज्ञान पूर्वक छोड़ेगा दूसरा अज्ञान पूर्वक छोड़ेगा। इस अंतर को छोटा ना समझे, दोनो में जमीन आसमान का अंतर है। मृत्यु आपको तिर्यंच और नरक गति में ले जायेगी तथा समाधि सीधे स्वर्ग ले जायेगी और परम्परा से मोक्ष जाने में सहयोगी बनेगी। इसलिये जीवन में जितनी जरूरी सांस लेना है उतना ही जरूरी जीवन में धर्म है। बिना धर्म के शरीर केवल सांस भरने वाली मशीन है।

भगवान महावीर कहते हैं कि हर क्षण हमारा मरण हो रहा है। अर्थात जितनी सांस हमने छोड़ दी उतना हमारा मरण है। इसका नाम उन्होंने अवीचिमरण कहा है। शरीर छोड़ने के वक्त जो आखिर सांस छोडते हैं, हम उसे मरण मानतें हैं। पर हर क्षण हम मृत्यु की ओर जा रहे हैं। हमारे हर कदम की यात्रा की मंजिल मृत्यु है। यह सत्य आपको आज समझ में आजाये या अंतिम समय में, समझना तो पड़ेगा। अभी समझ जायेंगे तो जिन्दगी ज्ञान पूर्वक और धर्म सहित होकर जियेंगे, यदि नहीं समझे, तो संसार ऐसे ही अज्ञानी लोगों के द्वारा चल रहा है, चलेगा और चलता रहेगा। जिन्हे समझ में आ जाता है वे मृत्यु को समाधि बना लेते हैं और जीवन के सत्य को जान लेते हैं।

जब कोई अपनो की, जिससे मोह हो उसकी मृत्यु हो जाये तो, लोग कहते हैं, हे भगवान मृत्यु क्यों बनाई? ये मृत्यु ने मेरे बेटे या जो भी, उसको मार दिया है भगवान मृत्यु को मार दो ये हमें बहुत परेशान करती है। ऐसी प्रार्थना लोग भगवान से करते हैं। कितने भोले हैं, कितने अज्ञानी हैं, सत्य को समझ ही नहीं रहे। कुछ लोग तो सीधा आरोप भगवान के ऊपर लगाते हैं। भगवान ने हमारे साथ बहुत बुरा किया। बहुत अन्याय किया। अपने कर्मो को भगवान के ऊपर थोप रहे हैं। अपनी गल्ती भगवान के माथे मढ़ रहे हैं। हिंसा का फल है मृत्यु, और अहिंसा का फल अमरता है। दिन भर में न जाने कितने जीवों

की हिंसा करते हैं, दूसरो को मारते हैं और खुद के मरने से दुखी होते हैं। प्रभु ने पूर्ण अहिंसा का पालन किया और अमर हो गये।

सोचो मृत्यु ना होती? तो क्या होता आपको यहाँ रहने को स्थान मिलता? यहाँ तिल रखने की भी जगह ना होती। तुम्हारी कितनी पीढ़ियां घर के अंदर होती कितने दादा और कितनी दादियाँ होती। मृत्यु न होती तो चीटीं, मच्छर, मक्खी, कुत्ता, गाय, बैल, भैंस, शेर, चीते, कोई भी ना मरता। और जब कोई न मरता, तो सोचो इस धरती पर कितने शेर होते, कितने कुत्ते होते, कितने चूहे होते, कितने चीटियां और मक्खी, मच्छर होते। कल्पना करो कि मृत्यु ना होती, यह धरती कैसी होती। अथवा मृत्यु के बिना जीवन की कल्पना मुश्किल है।

मृत्यु न होती तो मोक्ष की कल्पना भी नहीं की जा सकती। एक उम्र होने के बाद जब घर वाले, सरकार, सब ही रिटायर कर देते हैं, जब कोई शरण नहीं देता तब हम मृत्यु की शरण में जाने के भाव बनाते हैं। और मृत्यु हमें इस जर-जर पुराने सड़े गले शरीर से निकाल कर नया शरीर देती है। बुढ़ापे के कष्टों से मुक्ति देती है। मृत्यु दुख से सुख में पहुँचाती है यदि ज्ञान पूर्वक करे तो।

यह संसार क्षण भंगुर है, इसे मृत्यु से पहले जान लेना चाहिये और संसार शरीर, भोगो से मोह कम करके जीवन को सफल बनाना चाहिये।

छोटी-छोटी बुराईयाँ कभी-कभी बड़ी-बड़ी लड़ाईयां करवा देती हैं। जैसे छोटी सी चिन्गारी से पूरा जंगल जल जाता है। छोटी सी जहर की कणिका पूरा जीवन नष्ट कर देती है। ठीक वैसे ही छोटी सी बुराई को समय पर ना सुधारा जाये तो वह आदत बन जाती है फिर सुधरना बड़ा मुश्किल हो जाता है। जैसे घर का निरीक्षण करके घर का कचरा निकालते रहते हैं वैसे ही स्वयं का निरीक्षण कर बुराईयां निकालते रहना चाहिये। मन रूपी घर जिससे स्वच्छ और साफ सुथरा रहेगा।

जीवन की एक छोटी सी बुराई का नाम है, चुगली। अर्थात नहीं बताने वाली एक बात दूसरों को जाकर बताना जिससे इसके दुष्परिणाम भी होते हैं। आपसी मन मुटाव आपस में झगड़ा, आदि। बच्चा जब छोटा होता है तो, मम्मी की बात पापा से कहता है पापा की बात मम्मी से। तोतली भाषा में भोले पन में कहता है, बुरा नहीं लगता है, सब हँसते हैं बच्चे को भी अच्छा

लगता है, वह सोचता है कि मैं कोई अच्छा काम कर रहा हूँ। वह उसकी क्वालिटी और क्वानटिटी और बढ़ा देता है। फिर यही उसकी आदत बन जाती है। नानी के यहाँ जायेगा तो दादी की बात करेगा, दादी के पास बैठेगा तो नानी की बात करेगा। बच्चा समझते हैं, इसलिये कोई कुछ नहीं कहता। वही बड़ा होकर एक बड़ा चुगल खोर बन जाता है। और घरों के लड़ाई झगड़े करवाने लगता है। यदि उसे बचपन में ही डाँट दिया जाये तो आदत आगे नहीं बढ़ेगी।

इस आदत में महिलायें बहुत आगे हैं। भोजन के बाद जब अड़ोस पडोस इकट्ठा होता है, घर-घर की कहानी शुरू हो जाती है, वो अपनी सास की बुराई, वो अपनी जेठानी की बुराई, वो अपनी बहू की बुराई करनी शुरू हो जाती है। एक माहौल बनता है और बुराई की नदिया बह निकलती है। बाद में वहाँ तो चर्चा हुई जिसकी चर्चा हुई बाद में वहाँ से पहुँचाने का काम शुरू हो जाता है। तेरी सास ये कह रही थी तेरी देवरानी ये कह रही थी और बिना वजह घरों में लड़ाईयाँ शुरू हो जाती हैं। घर में क्लेश का वातावरण बन जाता है। आपस में मन मुटाव होता कि पीछे ये हमारी बुराई करती हैं कभी-कभी ये क्लेश, एक घर के दो घर बना देता है। इस क्लेश के कारण से साथ में प्रेम से बैठकर भोजन करना बंद हो जाता है। एक दूसरे से सलाह लेना बंद हो जाता है। एक दूसरे के बच्चे से सहयोग करना भी बंद हो जाता है। इन सारी लड़ाई की जड़ वह चुगल खोर है। जिसने यहां की बात वहां की। यदि वह नहीं कहता तो कुछ नहीं होता।

पुरुष भी इन सब कामों में पीछे नहीं हैं आज राजनीति में, समाज में, लड़ाई के कारण ऐसे ही लोग हैं जिन्हे दो मुंहा कहते हैं।

5

प्रतिक्रमण क्यों करें

संसार में प्रायः लोग यह कहते हैं, कि हे भगवान हमारे ऊपर ऐसा दुख क्यों आया? या ऐसी बीमारी मुझे क्यों हुई? मैंने ऐसा काम तो कोई किया नहीं, मैने किसी को कोई दुख तो दिया नहीं। फिर हमारे ऊपर ऐसी परेशानी क्यों आई। कोई हमारे साथ ऐसा क्यों कर रहा है। तरह-तरह की शिकायत हम भगवान से करते हैं। कई बार तो भगवान से इतने नाराज हो जाते हैं, कि भगवान का नाम लेना छोड़ देते हैं। सबसे भगवान की शिकायत करते हैं। क्योंकि साक्षात भगवान तो स्वयं सुनते नहीं हैं। हम सारे कष्टों, हर गल्ती के लिये दूसरो को जिम्मेदार ठहराते हैं। जब कोई ना मिले तो भगवान को ही पकड़ लेते हैं मगर स्वयं को जिम्मेवार या स्वयं की गल्ती को मानने तैयार नहीं होते हैं जब हम सामने वाले को गल्ती का जिम्मेवार ठहराते हैं तो वह जवाब भी देता है, प्रतिकार भी करता है, कई बार बात भी बढ़ जाती है। पर भगवान के ऊपर आरोप लगाना सबसे आसान है, वे जवाब नहीं दे सकते, ना ही प्रतिकार कर सकते हैं।

ज्ञान का काम है हमारे भीतर की आँखे खोलना और इस रहस्य को खोलना कि घटना का जिम्मेवार सच में कौन है। ज्ञान ध्यान की विशेषता है कि उसमें हर विषय की सूक्ष्म से सूक्ष्म परत खुल जाती है। ऊपर से दिखता कुछ और है और अंदर से होता कुछ और है, संसार का हर धर्म कहता है कि हर घटना हमारे ही बोये कर्मो के बीजो का फल हैं। कड़वा बीज बोया था, इसीलिये कड़वा फल मिला है।

कर्म तो बहुत किये, जानकर किये, अनजाने में किये, हँस-हँस कर कर्मों का बंध किया निंदा बुराई करके कर्मों का बंध किया। झूठ बोला, चोरी की, वासना के वशीभूत घृणित कार्य किये धन के लिये पाप किया। ईष्या और द्वेष में दूसरों को नीचा दिखाया। क्रोध मान माया लोभ किया। क्या नहीं किया पाप क्रिया में आकंढ डूबे हैं और अंनत कर्मों का बंध कर रहे हैं। जब किये

कर्मों का फल मिले तब कहते हैं भगवान ने बहुत बुरा किया। ज्ञान का ये दुरूपयोग है। जो सदा दूसरो को दोष देता है। ओर स्वयं की गल्ती नहीं देखता है।

कर्मों के दूर करने का उपाय करें। प्रतिदिन प्रतिक्रमण अवश्य करें। अपने अपराध अपनी गल्ती स्वीकार करने का प्रतिक्रमण एक सशक्त माध्यम है। गल्ती स्वीकार करने से गल्ती करने की भावनाओं में कमी आती है। जैसे एक बच्चा माता पिता के सामने या कोई अपराधी जज के सामने अपनी गल्ती स्वयं कह दे उसे सहजता से स्वीकार करले और अपनी गल्ती का पश्चाताप करें तो जज भी सजा को कम कर देता है। माता पिता भी बच्चे के प्रति सहानुभूति रखते हैं। वह यदि गल्ती पर गल्ती करें और गल्ती को स्वीकार ना करें अकड़ जाये तो जज भी कठोर से कठोर सजा देता है और बड़ा अपराधी घोषित करता है।

ठीक ऐसे ही भगवान के सामने बैठकर अथवा घर में बैठकर प्रतिदिन प्रतिक्रमण करें तो पाप कर्मों की निर्जरा होती है और आने वाले समय में उसका फल भी कम मिलता है। रत्नकरंड श्रावकाचार में आचार्य समंतभद्र स्वामी कहते हैं कि जैसे कपड़े पर लगे खून का धब्बा धोने पर वह साफ होता है पर पूरा नहीं होता। ठीक ऐसे प्रतिक्रमण करने पर हमारे बहुत सारे कर्म निकल जाते हैं। अर्थात किसी को 108 डिग्री बुखार आने वाला था वह 102 में ही निकल जायेगा। ऐसा हर चीज के साथ लगा लेना चाहिये।

इसीलिये प्रतिक्रमण की किताब इसी उद्देश्य को लेकर लिखी है कि भव्य जीव अपने पाप कर्मों को निर्जरा करके पुण्य प्रकाश करें और मोक्ष मार्ग को प्रशस्त करें जिनके शनिग्रह की बाधा है वे प्रतिक्रमण अवश्य करें।

बड़ा ही महत्व है

भोजन में खमण का,
आत्मा में रमण का,
करने में प्रतिक्रमण का,
बड़ा ही महत्व है

मनुष्यो की बुद्धि का,
होने में समृद्धि का,
प्रतिक्रमण से आत्म शुद्धि का,
बड़ा ही महत्व है।

पहाड़ो पर झरने का,
आत्मा में विचरने का,
प्रतिक्रमण रोज करने का,
बड़ा ही महत्व है।

6

दीवाली का दीप, देता है संदेश

आ. 105 स्वस्ति भूषण

दीप चाहे सोने का हो या रत्नो का, चाहे पीतल का हो या मिट्टी का उसमें से निकलने वाली रोशनी और उसकी लौ सबमें एकसी होती है। दीप चाहे शमशान में रखा हो या प्रभु के सामने अथवा घरों में रखा हो या द्वार पर, महलों में रखा हो या झोपड़ी में दीपक का काम हर जगह एक ही होता है प्रकाश देना और प्रकाशित होना।

दीपक किस वस्तु का बना है अथवा कहाँ पर रखा है महत्व इस बात का नहीं है, महत्व इस बात का है उसमें जो ज्योति है वह कितनी कम है या ज्यादा। ज्योति अधिक होगी तो उजाला अधिक होगा और ज्योति टिमटिमा रही होगी उजाला तब भी कम होगा। दीपक का महत्व उसकी ज्योति से है। इसी तरह इसी मिट्टी के शरीर रूपी दिये में आत्मा रूपी ज्योति प्रकाशित हो रही है शरीर गोरा हो या काला, शरीर सुदंर हो या असुंदर, शरीर लंबा हो या ठिगना शरीर मोटा हो या पतला फर्क इससे नहीं पड़ता, ज्योति तो सबके अंदर बराबर हैं शरीर पर कितने मंहगे कपड़े पहने हैं या सस्ते शरीर पर कितने रत्नो के या सोने के आभूषण पहने हैं फर्क इससे नहीं पड़ता। ये बाहर की सुन्दरता हैं आत्मा स्वयं के प्रति कितनी जागरूक है और उसे अंदर की ज्ञान ज्योति को वह कितना उठा पा रहा है अंतर यहां पैदा होता है।

दीपक कितनी डिजाइनो में सजा हो किन्तु उसमें ज्योति नहीं तो वह मात्र देखने का दिया है पर कार्य रूप दीपक नहीं है। ठीक ऐसे ही इस शरीर को

कितना सजा लो अपनी आत्मा की ज्ञान ज्योति जाग्रत नहीं करी केवल शरीर को ही सजाते रहे तो आपने पुदगल पर ही मेहनत की है अपनी आत्मा की ज्योति पर नहीं की है। समय रहते जाग्रत हो जाओ आत्मा के महत्व को पहचानो और उसी ज्योति की उपासना प्रारंभ कर दो।

हजारो बुझे सुंदर दीपक रात्रि के अंधकार को नहीं मिटा सकते वहीं एक नन्हा सा जला हुआ दीपक आ जाये तो वह दीपक अंधकार भी दूर करेगा और हजारों बुझे दीपको में रोशनी देने की ताकत भी रखता है। एक ज्ञानी व्यक्ति स्वयं भी सच्ची राह पर चल कर हजारों अज्ञानियों को सच्ची राह दिखाने में समर्थ हो सकता है। ज्ञानी स्वयं प्रकाशित है दूसरे में भी रोशनी भर सकता है।

ऊपर की ओर उड़ती हुई दीपक की लौ ये संदेश देती है कि सदा उच्च विचार रखो, सदा ऊपर की ओर का ही चिंतन करो। ऊँचे विचार ऊपर की ओर ले जायेंगे। निम्न विचार नीचे की ओर ले जायेंगे। दीपक की लौ हमें समझा रही है, कि हे आत्मन तुझे सबसे ऊँचा मोक्ष तक जाना है, इसीलिये अपनी ज्ञान ज्योति को जाग्रत करो। सम्मान दिये का नहीं ज्योति का करो। चिंतन शरीर का नहीं चेतन का करो। दिये को अनंत काल तक सजा लेना, कोई सफलता सुख शांति नहीं मिलेगी। एक बार, बस एक बार आत्मा को उसके ज्ञान दर्शन गुणो को संवार लो, दिये को सजाने का झंझट ही खत्म हो जायेगा।

जैसा कि भगवान महावीर ने अपनी आत्मा को सँवारा, शरीर ही छूट गया। दीपक की लौ सूरज के रूप में प्रगट हो गई। अर्थात आत्मा में सूरज जैसा प्रकाश है, दीपक तो समझाने का उदाहरण है। आत्मा की साधना दीपक की लौ से प्रारंभ होती है और केवल ज्ञान रूपी सूर्य में परिवर्तित हो जाती है। जिससे सारा लोक जगमगा जाता हैं सारा अज्ञान अंधकार नष्ट हो जाता है। दुख शोक संताप आधि, व्याधि, उपाधि, पीडा, दर्द सभी का नामों निशान खतम हो जाता है। आत्मा आनंद के सागर में डूब जाता हैं कषायों का अंधेरा और पापों के मगरमच्छ जाने कहाँ भाग जाते हैं। जीवन सुख की रोशनी से भर जाता है। आत्मा की उपासना करने वाला एक मंजिल पर पहुँच ही जाता है।

कार्तिक कृष्ण अमावस की घनी अंधेरी रात भी आत्मा में उजाला होने से नहीं रोक पाई। संसार के लिये अमावस थी और भगवान महावीर के लिये

पूरनमासी हो गई। कार्तिक कृष्ण अमावस को भगवान महावीर आठों कर्मों का नाश करके मोक्ष चले गये। हम भक्त इस निर्वाण महोत्सव को छोटे-छोटे दियों की रोशनी में, इस पर्व को मनाते हैं। जबसे भगवान महावीर मोक्ष गये तबसे ये दीप आज तक जल रहे हैं और जलते रहेंगे लेकिन इन छोटे दीपक से शिक्षा लेकर आगे बढ़े तो निर्वाण कल्याणक मनाना सार्थक हो जायेगा।

बड़ा ही महत्व है

तपस्या में बाहुबली का
बागों में कली का
त्योहारों में दीवाली का
बड़ा ही महत्व है।

मोती में सीप का
गाड़ियों में जीप का
दीवाली में दीप का
बड़ा ही महत्व है।

छोडने में इच्छा का
संतो की दीक्षा का
दीप से लेने में शिक्षा का
बड़ा ही महत्व है।

धनुष में बाण का
मंदिर के निर्माण का
प्रभु महावीर के निर्वाण का
बड़ा ही महत्व है।

रूठो को मनाने का
मेहमान को जिमाने का
प्रभु वीर के मोक्ष जाने का
बड़ा ही महत्व है।

भोजन में खीर का
धनुष में तीर का
तीर्थंकरों में महावीर का
बड़ा ही महत्व है।

7

टर्निंग प्वाइंट

तेजी से जाती हुई गाड़ी, सामने मोड़ के दिखते ही धीमी हो जाती हैं ड्राइवर सावधान हो जाता है। सड़क मोड़ ले रही है सावधान नहीं रहे तो एक्सीडेंट की संभावना है। अतः बेखबर होकर गाड़ी चलाने वाला भी मोड़ के आते ही सावधान हो जाता है। इसी तरह हमारे जीवन में भी बहुत सारे मोड़ आते हैं उन मोड़ों पर सावधान होना उतना ही आवश्यक है जितना सड़क के मोड़ पर होते हो।

बच्चा जब आठ वर्ष का होता है तब परिवार वाले कहने लगते हैं अब समझदार हो गया, दुनिया को थोड़ा-थोड़ा जानने लगा। दूसरा मोड़ चौदह से सोलह वर्ष के बीच आता है। इस समय यदि बच्चे को खराब संगति मिल जाये, तो बच्चा गलत रास्ते की तरफ चला जाता है। और यदि अच्छी संगति मिल जाये तो साधु संत भी बन सकता है। इस उम्र में संगति का ध्यान रखना आवश्यक होता है। तीसरा मोड़ आता है 21 से 24 के बीच जब शादी होती है अर्थात् एक से दो होने का कार्यक्रम प्रारंभ होता है। तब भी सावधान होना आवश्यक है। एक से दो होने पर प्रेम भी हो सकता है ओर लड़ाई भी हो सकती है। अर्थात यहाँ भी जीवन साथी रूपी ड्राइवर को सावधान होना आवश्यक है। सावधान रहा, तो गाड़ी आगे बढ़ जायेगी वरना एक्सीडेंट हो सकता है। कुछ भी हो सकता है। जीवन में फिर चौथा मोड़ आता है जब दो से तीन होते है। अर्थात एक नया मेहमान उस घर में प्रवेश करता है। मेहमान तो जीवन से अनभिज्ञ रहता है पर माता पिता सावधान रहते है। बच्चा प्रेम की निशानी है किन्तु इस मोड़ पर सावधान नहीं रहे तो वही लड़ाई का कारण बन जायेगा। अर्थात् इस मोड़ पर भी सावधान होना आवश्यक है।

जीवन में पांचवा मोड़ आता है जब बच्चे बड़े हो जाते हैं और माता पिता छोटे हो जाते हैं। बच्चा माता पिता को बोलना सिखाने लगता है। हर बात में समझाने लगता है। तब इस मोड़ पर गुस्सा तो बहुत आता है पर सावधानी से सहन करना पड़ता है। तभी गाड़ी आगे, रास्ते पर जायेगी वरना मोड़ पर ही रूक जायेगी। धीरे-धीरे बच्चा और बड़ा हुआ। शादी की व्यवस्था प्रारंभ की तब छटवाँ मोड़ आता है जीवन का, बहू घर में आने वाली है। परिवार में एक सदस्या और शमिल हो गई। अब वहाँ दो अलग-अलग उम्र वालो को अर्थात सास बहू को एक साथ रहना है। यहाँ भी गाड़ी के ड्राइवर को सावधान रहना होगा। खतरनाक मोड है जरा सी असावधानी से एक्सीडेंट होने की संभावना है। नया पुराने के साथ कैसे सेटिंग बैठा सकते हैं इस बात का ज्ञान दोनो को होना आवश्यक है। मोड पर जब दो गाड़िया निकालते हैं तब कितना ध्यान रखते हैं। ठीक ऐसे ही इस मोड़ पर सावधान होना आवश्यक है।

अंतिम मोड़ आया जीवन का जब शरीर में बुढ़ापा घंटी मारने लगता है, बुढ़ापे में कमजोरी और बीमारियां घेरने लगती हैं। पहले जितना काम नहीं कर पाते, पहले जितनी दौड़ भाग नहीं कर पाते। ना काम किया जाता है, ना भगवान का नाम लिया जाता है। भगवान से स्वस्थ होने के अलावा दूसरी प्रार्थना नहीं रह जाती है। इस मोड पर चिंताये घेर लेती हैं। क्योंकि जिन्दगी में चिंता करने के संस्कार बहुत पड़े हैं इसके अलावा कुछ आता नहीं। जिसने अपने जीवन में ज्ञान की ज्योति जलाई है और हर मोड पर सावधानी का जीवन जिया है, वह इस मोड़ पर भी सावधान रहेगा। और हर मोड़ पर जो सावधान है वह सबसे बड़ा पहलवान है।

दो अलग-अलग मिले हुये रास्ते को मोड़ कहते हैं। इसे संधि भी कहते हैं जहाँ पर जहाँ ना इस पार है ना उस पार है। जैसे नींद में जा रहे हैं ना पूरे जागे हैं, न पूरे सोये हैं। जैसे दिन जा रहा है, रात्रि आ रही है। दिन पूरा गया नहीं रात्रि पूरी आई नहीं इसे संधि काल कहते हैं। आपने बुजुर्गो से सुना होगा कि शाम के समय सोते नहीं हैं। इस समय सोओगे तो बीमार हो जाओगे शाम की बेला में झाडू भी नहीं लगाने देते। शाम होते ही कहते हैं लाइट जला दो शाम हो गई ऐसे समय अंधेरा नहीं होना चाहिये। भगवान् की आरती का सही समय भी यही माना जाता है। लोग कहते हैं, शाम हो गई दिया बत्ती कर दो। Turning Point है तो महत्वपूर्ण। भगवान की दिव्य ध्वनि तीनो संधि काल में ही खिरती

हैं संधिकाल में सामायिक का भी आदेश किया है।

बहुत सारी संधि देखी, एक और संधि पर ध्यान दें। भावों की संधि अर्थात भाव परिवर्तन। जैसे आप शांति से कोई काम कर रहे हैं और किसी ने आपसे कुछ ऐसी बात कही कि आपको गुस्सा आ गया। अब आप शांति की स्थिति से गुस्से की स्थिति में प्रवेश कर रहे हैं। ये भी संधि भाव हैं, यहाँ भी सावधान होना आवश्यक है। गुस्सा का मोड़ आने के पहले मन की गाड़ी को धीमी कर लो और सावधानी से चिंतन मनन करके गाड़ी को आगे निकाल लो। यदि इस मोड़ पर सावधान नहीं रहे तो जैसे दो गाड़ी तेजी से टकरायें तो चोट बहुत लगती है ठीक ऐसे ही सावधानी न होने पर वाणी के द्वारा दोनो की गाड़ी चोट अवश्य खायेंगी। अतः क्या बोलना कितना बोलना और पूर्व समय में उसके द्वारा किये उपकारो को ध्यान रखके आगे बोले तो गाड़ी का एक्सीडेंट होने से बच जायेगा। इसीलिये क्रोध भी करो तो सावधानी के साथ।

एक मोड़ आप तब लेते हो, जब संसार से निकल कर धर्म में प्रवेश किया, भावों से सावधान हो जाओ, अब धर्म के अलावा ना कुछ सोचना है ना कुछ करना है। दर्शन किये, माला फेरने के लिये, माला हाथ में उठा ली। हाथ की माला के साथ मन की माला भी प्रारंभ, बाहर के विचारों को छोड़ें अर्थात इस मोड़ पर सावधान रहना आवश्यक है।

और जिन्दगी में हर पल सावधान रहना आवश्यक है। जैसे हर जगह एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के संस्कार है वैसे ही भावों में अपनी आत्मा में आने के संस्कार होने चाहिये। जैसे सारी दुनियां घूमते हो पर कुछ समय बाद ही अपने घर की याद आने लगती है, वैसे ही संसार के कार्य करने के बाद आत्मा रूपी घर में मन को वापस आने की याद आनी चाहिए। इस बात के संस्कार भी होने चाहिये। तभी आपको शांति का अनुभव हो पायेगा। जब आत्मा रूपी घर में आओगे तब मोड़ पर मोड़ मिलेगे, क्रोध मान माया लोभ पाप मिलेगा, राग बुलायेगा, द्वेष आवाज देगा। पर टाइम होने पर आप किसी की मत सुनना आत्मा रूपी घर में आकर शांति से बैठ जाना।

मोड़ क्या है एक शक्ति है, एक ऊर्जा है। जैसे शाम है इसमें दिन के परमाणु है और रात के परमाणु भी हैं दो चीजे जब टकराती हैं तो शक्ति उत्पन्न होती है। उस केन्द्र को समझ कर उसका उपयोग करो। दो पत्थर

टकराते हैं तो अग्नि उत्पन्न होती है। आपके घर में लाइटर के अंदर तो पत्थर है, जब टकराते हैं तो घर की गैस चालू हो जाती है। ऐसे ही उस समय हम आत्मध्यान की ज्योति जलाना चाहें तो जला सकते हैं आपने देखा होगा कि जब दो मौसम मिलते हैं हवा में कितने जीवों की उत्पत्ति होती है। बरसात में जब पूरी बारिश हो तब जीव नहीं होंगे, जब धूप निकलेगी तब होंगे। दीवाली के समय जब बरसात जाती है और सर्दी आती है तब होते हैं। फरवरी-मार्च सर्दी जा रही है गर्मी आ रही है, तब भी जीव होते हैं। अर्थात् मोड़ जीवन का महत्पूर्ण समय है इसका उपयोग आपको अनंत सुखो से भर सकता है। केवल सावधान रहने की आवश्यकता है।

बड़ा ही महत्व है

अच्छे काम में होड़ का
केल्कुलेटर में जोड़ का
जीवन में मोड़ का
बड़ा ही महत्व है।

खेत में धान का
करने में विधान का
मोड पर सावधान का
बड़ा की महत्व है।

वकील में क्लाइंट का
कपड़ो में ज्वांइट का
जीवन में टर्निंग प्वाइंट का
बड़ा ही महत्व है।

8

मन की कीमत

षटखंडागम ग्रंथ की सातवी किताब में संज्ञी जीव का अंतरकाल बताया है। अर्थात जीव की मन सहित जन्म लेने के बाद यदि दुर्गति हुई, तो वह दोबारा उस मन को अनंत काल के बाद प्राप्त करेगा। यह उत्कृष्ट काल है। ऐसी संभावना है। अर्थात हमें जो मन मिला है सोचने विचारने के लिये यह बड़े पुण्य के उदय में मिला है। यदि इसे यूँ ही व्यर्थ कार्यों में लगाया तो फिर अनंत काल बाद मिलेगा। तब तक मक्खी मच्छर पेड, अग्नि, पृथ्वी कायिक आदि विपर्य गति में भटकते रहेगे। और हम वहां की वेदना को भोगते रहेंगे।

मन एक बहुत बड़ी शक्ति है। यदि इसका दुरूपयोग किया तो ये सातवें नरक भी ले जा सकती है। और सदुपयोग किया तो मोक्ष भी पहुंचा सकती है। मन आत्मा के भावों के साथ जुडा हुआ है। मन के साथ भाव परिवर्तन होता है उदाहरण के माध्यम से देखें कि मन नरक कैसे पहुंचाता है।

स्वयंभूरमण समुद्र में एक हजार योजन लंबा, 500 योजन चौडा, 250 योजन मोटा एक मगरमच्छ रहता है वह 6 महीने सोता है और 6 महीने जागता है। उसके कान में एक तंदुल मच्छ रहता है। जिसका आकार चांवल के बराबर होता है। जब बड़ा मच्छ मुंह खोलकर सोता है और उसमें मछलियां युं ही आती जाती रहती है, तो वह सोचता है। यह मच्छ कितना मूर्ख है, इसकी जगह मैं होता तो एक भी मछली नहीं छोड़ता। जब वे दोनों मरते है तो दोनों सातवे नरक जाते है। एक शरीर से खा कर जाता है और दूसरा मन से खाकर जाता है। ऐसे ये मन नरक भेज देता है। छोटा सा मगर मच्छ कितनी हिंसा कर सकता है, पर मन के द्वारा सोच सोच कर हजारो पाप इकट्ठे किये जा सकते हैं। मन के बिना अकेले शरीर से हिंसा होगी पाप कम लगेगा, मन के साथ सोचकर हिंसा करेंगे पाप दस गुना बढ़ जायेगा।

एक मंदिर में पुजारी पूजा करता था। मंदिर के पास वेश्या का मकान था। वेश्या अपने घर में बैठकर परमात्मा का ध्यान करती थी और अपने बुरे कार्य से घृणा करती थी। उधर पुजारी, मंदिर बैठकर वेश्या का ध्यान करता था कि मैं पुजारी हूँ, उसके पास जा नहीं सकता। और सभी लोग उसके पास जाते हैं। उन्हें कितना अच्छा लगता होगा।

इतफाक से दोनों की मृत्यु एक समय हुई, यमराज लेने आया। पेशे के हिसाब से वेश्या को नरक और पुजारी को स्वर्ग जाना चाहिये पर दोनो के भावों के कारण हुआ उल्टा यमराज भी चकरा गया, ऐसा क्यों हो रहा है। उनके कार्यों को देखकर उसे भी समझ में आ गया। हालाकि यमराज एक कल्पना है, अपने कर्मों के कारण जीव स्वयमेव उस गति में पहुंच जाता है। जब एक पुजारी मंदिर में बैठकर प्रभु का ध्यान न करे तो वह दुर्गति में जाता है। ठीक ऐसे ही कितने भक्त होगे जो मंदिर में बैठकर दुनिया भर कर ध्यान करते हैं। प्रभु! वे सब कहाँ जायेगे? हर व्यक्ति स्वयं के मन को पकड़ने का प्रयास करें कि वह कहाँ भाग रहा है, और कहाँ ध्यान लगाना है।

अब मन के दूसरे पक्ष को देखे कि मन स्वर्ग और मोक्ष कैसे पहुंचाता है। जब मन भावों की विशुद्धि के साथ धर्म में आगे बढ़ता है तो एक क्षण में 70 कोड़ा कोडी सागर का मिथ्यात्व का द्रव्य यानि बंधा हुआ कर्म मात्र अंतः कोडा कोडी सागर में परिवर्तित हो जाता है। मन की विशुद्धि से अनंत पाप घंटो में नहीं मिनटों में कट जाते हैं। कर्म बहुत इकट्ठे कर लिये कोई बात नहीं धर्म की तलवार है ना हमारे पास, काट देगे जैसे भगवान ने काटे हैं। यदि धर्म है तो डरने की जरूरत नहीं है। बात इतनी है कि धर्म को पूर्ण ईमानदारी के साथ किया जाये। धर्म करते हुये संसार आपके साथ ना हो, पूजा कर रहे हो तो मात्र पूजा के ही विचार हो दूसरे नहीं। माला फेर रहे हो तो मन में केवल परमात्मा ही हो, कोई दूसरा नहीं तभी कर्म कटेंगे।

मन वचन काय की एकाग्रता में ही शक्ति है। जैसे सूरज की धूप धरती पर बिखरी है पर कागज नहीं जलेगा। लेकिन लेंस द्वारा सूरज की किरणों को इकट्ठा किया जाये और उस कागज पर किरणों को इकट्ठा डाला जायें वह वस्तु तुरंत जलने लगेगी, ठीक ऐसे ही मन कहीं है, वचन कहीं है काया कहीं है कर्म नहीं भागेंगे। जब तीनो एक साथ हो जायेंगे तो कर्म जलाने में समय नहीं लगेगा।

ये है मन की शक्ति इसे पहचानने और इस मन के द्वारा आने वाले भवों को सुधारे वरना अनंत काल फिर भ्रमण करना होगा और दुखः सहना होगा।

बड़ा ही महत्व है

बागों में सुमन का
कर्मों के शमन का
मनुष्य के अच्छे मन का
बड़ा ही महत्व है।

अच्छे संकल्प को धारने का
धर्म के द्वारा जीवों को तारने का
बिगड़े मन को सुधारने का
बड़ा ही महत्व है।

चुनावों में मत का
मकान की छत का
पहचानने में मन की कीमत का
बड़ा ही महत्व है

महिलाओं के संवरने का
भव से तरने का
मन से भक्ति करने का
बड़ा ही महत्व है।

9

सांसारिक सुख में दुख साथ है

सुख और दुख में ज्यादा फर्क नहीं है वे ऐसे है जैसे पानी गर्म हो गया ठंडा हो गया। गर्मी में ठंडा पानी अच्छा लगता है और सर्दी में गरम पानी अच्छा लगता है पानी तो वही है। मात्र मौसम का अंतर हैं लेकिन पानी अधिक ठंडा हो तो भी कष्ट देगा और पानी अधिक गर्म हो तो जलायेगा, ठीक ऐसे ही सुख की अधिकता में भी मृत्यु हो जाती है और दुख की अधिकता में भी मृत्यु हो जाती है। सुख और दुख एक लकड़ी के दो छोर हैं। हम कभी ये छोर पकड़ते है कभी वो छोर।

सुख और दुख वस्तु में नहीं हमारी आदत में हैं अर्थात दुख की भी आदत पड़ जाती हैं उसी में जीना ठीक महसूस करता है। संतुष्ट हो सकता है। जैसे एक मेढक को उबलते पानी में डाला उसने तुरत छलांग लगाई और बाहर आ गया। दूसरा प्रेक्टीकल किया कि मेढ़क को ठंडे पानी में रखा, धीरे-धीरे अग्नि बढ़ाई मेढ़क मर गया, मगर निकला नहीं। ठीक ऐसे ही संसार के दुख है धीरे-धीरे दिये जाते हैं तो वह उसे आदत बना लेता है और उसी में रम जाता है।

कौन कहता है कि **डी. ओ.** और इत्र, सेन्ट, आदि से सुख मिलता है। ये भी आदत की चीजे हैं। एक मछुआरन शहर में मछली बेचने गई वहाँ की उसकी बचपन की सहेली मालन मिली। दौनों बहुत प्रसन्न हुई। मालन मछुआरन को अपने घर ले आई। और रुकने का आग्रह किया। मालन ने सहेली के सोने की फूलों की सेज सजाई। मछुआरन को नींद नहीं आ रही थी। तब मालन ने पूछा बहन नींद क्यों नहीं आ रही। तब मछुआरन बोली ये फूलों की सुगंध परेशान कर रही है। मालन को बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर उसने पूछा क्या करूँ, तब मछुआरन ने कहा कि मेरा मछली वाली खाली टोकरी में से थोड़े पानी की छींटे मार कर ला दों और मेरे सिरहाने रख दो, ऐसा करते ही

मछुआरन थोड़ी देर में सो गई। अर्थात आवश्यक नहीं कि फूलो की खुशबू सबको सुला सके। इसीलिये कहा है सुख और दुख में ज्यादा फर्क नहीं। ये आपकी मानसिकता पर आधारित है कि आप किसे सुख मानते हैं और दुख किसे मानते हैं।

सांसारिक सुख-दुख तो मानने की चीजे हैं जैसे गणित के सवाल करते हुये लिखते है, मान लो 100 रु. है। सौ रूपये हैं नहीं ठीक ऐसे ही संसार मोह के वशीभूत कहते हैं मान लो हम दुखी है, मान लो हम सुखी है। मानलो हमारे पास दस लाख रूपये हैं, हम उसका सुख महसूस कर रहे हैं फिर हमारे पास एक करोड़ रूपये हो गये हैं। फिर 90 लाख रूपये किसी कारण चले गये। बचे दस लाख रूपये अब हम दुखी है। 10 लाख पहले थे तब सुखी थे अब 10 लाख बचे हैं अब दुखी। सुख 10 लाख में है, या हमारे भावों में है। सुख दुख को समझे बिना सुखी नहीं हुआ जा सकता।

पुद्गल से संबंधित जितना सुख है, वह दुख का कारण है। चाहे वह खाने पीने की वस्तु हो या परिवार के मेम्बर, मकान दुकान हो या धन दौलत। सोना चांदी हो या गाय भैंस। पुद्गल के इन सुखों की एक सीमा है जैसे आपको रसगुल्ला अच्छा लगता है पर पहले रसगुल्ले में जो आनन्द आएगा वो दूसरे में नहीं आयेगा। जितने-जितने खाते जाओगे स्वाद घटता जायेगा और अधिक खा लिया तो उल्टी भी हो सकती है। ऐसा खाने की हर वस्तु के साथ घट जायेगा वस्त्र में जो कलर पसंद हैं एक वर्ष तक उसी को पहन लो वे भी अच्छा नहीं लगेगा। केवल दो रंगो को छोड़कर सफेद और पीला, सफेद रंग में शांति मिलती है और पीला रंग भक्ति बढ़ाता है।

आत्मिक सुख अनंत है, जितनी-जितनी गहराई में जाओ आनंद उतना ही बढ़ता चला जायेगा। पुदगल का ध्यान विभाव है और आत्मा का ध्यान स्वभाव है, स्वभाव में आते ही आनंद मिलता है शांति मिलती हैं और ऐसा लगता है कि भटका हुआ राही आज अपने घर वापस आ गया। अनंत सुख में गोते लगाने शुरू कर देता है। और सांसारिक सुख-दुख स्वरूप है।

छहढाला में लिखा है-

आतम को हित है सुख सो सुख, आकुलता बिन कहिये।
आकुलता शिव मांहि न ताते, शिव मग लाग्यो चहिये।।

जहां आकुलता नहीं है वहीं सच्चा सुख है। संसार के सुख वस्तु और व्यक्तियों से मिलते हैं और उन्हे पाने में कितनी आकुलता करनी पड़ती है। आकुलता से सहित सुख दुख के ही समान है। ये सांसारिक सुख पराधीन है। वस्तु है तो सुखी है, नहीं है तो दुखी। वस्तु है किन्तु शरीर भोग नहीं पा रहा तो भी दुखी है। शरीर अनेक बीमारियों का घर हैं खाने का सामान है पर खा नहीं पा रहे। इसीलिये इन्द्रिय सुख पराधीन है। इसीलिए दुख का कारण है।

भगवान महावीर ने बताया कि आत्मिक सुख स्वाधीन है। इसमें ना तो संसार की वस्तुओं की आवश्यकता है ना ही किसी व्यक्ति की। आत्मा से आत्मा का आत्मा में ध्यान आनंद मयी है। इसीलिए सच्चे सुख की प्राप्ति का उपाय करें।

बड़ा ही महत्व है

हवा के रूख का,
शरीर में मुख का,
धर्म से आत्मिक सुख का,
बड़ा ही महत्व है।

लिखने मे खत का
मनुष्यों के मत का,
छोड़ने में आदत का,
बड़ा ही महत्व है।

दरवाजा में ताला का,
सम्मान में माला का,
शास्त्रों में छहढ़ाला का,
बड़ा ही महत्व है।

बजाने में बीन का
रत्नत्रय में तीन का
आत्मिक सुख में स्वाधीन का
बड़ा ही महत्व है।

10

बचपन से अभी तक कितने बार कपड़े बदले?

शीर्षक पढ़कर आपको लग रहा होगा कि यह प्रश्न क्यों पूछा गया। बड़ी साधारण सी बात है, संसार की हर क्रिया और हर वस्तु हमें संदेश देती हैं। हम ना लें ये अलग बात है। प्रतिदिन जो हम वस्त्र बदलते हैं, कभी आपने सोचा कि, शरीर भी एक वस्त्र है, और जब यह पुराना हो जाये, फट जाये, कट जाये, खराब हो जाये तब आत्मा भी दूसरा वस्त्र बदल लेती हैं पुराना वस्त्र छोड़ कर नया वस्त्र धारण कर लेती हैं मृत्यु वस्त्र छोड़ने की प्रक्रिया है और जन्म नये वस्त्र धारण करने की प्रक्रिया है।

अनादि काल से इतने शरीर धारण कर लिये जितने आपने इस पूरे जीवन में वस्त्र नहीं बदले होंगे। बाहर के वस्त्र उतारने और पहनने के अलावा हमने किया ही क्या है? कुछ नहीं, अभी भी इन्ही वस्त्रों के मोह में फँसे हैं। वस्त्रों की डिजाइनों में दिमाग फँसा पड़ा है। सच्चाई को समझने का प्रयास ही नही कर रहे हैं। ये नई-नई डिजाइन के कपड़े देखकर मुझे तिर्यंच गति के शरीर की याद आती है। किसी कपड़े का कोना कही से ज्यादा कहीं से कम है। कहीं पंख जैसे निकाले हुये है। पशुओं में कुत्ते होते हैं किसी के बाल लंबे है, किसी के कान लंबे है। कोई ठिगना है, कोई ऊँचा है, झबरे वाला है, कोई बिना झबरे का है। बंदरो में किसी की पूँछ लंबी है, किसी की पूँछ छोटी है। आपको अपने वस्त्रों की डिजाइन दिखती है मुझे तिर्यंचगति के पशु पक्षी कीट पतंगे दिखते हैं। ये भी आत्मा है जिन्होने तरह-तरह के शरीर धारण किये।

अब धर्म की ओर आये और देखे कि वस्त्रों से मोह करते हैं। अब वस्त्रों के दो प्रकार हो गये एक शरीर रूपी वस्त्र दूसरे उसकी रक्षा के लिऐ पहनने वाले वस्त्र दोनो वस्त्रों से हम बहुत प्यार करते हैं। लेकिन जैसे कर्म होते हैं वैसा मिलता है, इसमें हमारी पंसद नही चलती, जैसा जनम के समय मिल

गया बस सारी जिन्दगी उसी के साथ रहना है। काला, गोरा, गेंहुआ आदि कोई भी रंग चितकबरा भी हो सकता है। शरीर पर तिल, भोरा, लहसुन का निशान कही भी हो सकता है। अच्छा लगे या ना लगे। जैसा कर्म किया था शरीर से नजर आ रहा है।

शरीर सुंदर मिल गया खुश हो गये, सुंदर नहीं मिला तो उसे सुंदर बनाने में क्रीम, पाउडर इकट्ठा करने लगे कि सुंदर कैसे दिखें, इसी चक्कर में ब्युटी पार्लर के चक्कर लगाने लगे। ये विचार नहीं किया कि शरीर तो कपड़े के समान है बदलना पड़ेगा। आत्मा को सुंदर बनाऐं तो शरीर अपने आप सुंदर हो जायेगा। सच्चे ज्ञान के बिना सुंदर वस्त्रों से शरीर को सुंदर बनाने लगे, सारी जिंदगी इसी काम में निकल गयी और शरीर परिवर्तन का समय आ गया। जिंदगी भर तन के कपड़े के चक्कर में मन पर भी कपड़ा छाया रहा और अंतिम वस्त्र कफन पहनने का समय आ गया।

वस्त्र पहनने का मतलब है वस्त्रो के द्वारा प्रकृति से तन की रक्षा, संस्कृति की सुरक्षा, मर्यादा पूर्वक जीवन निर्वाह। स्त्री और पुरूष दोनों में शरीर के हिसाब से वस्त्र पहनने का अलग-अलग स्वरूप था। स्त्री और पुरुष दौनो ढीले वस्त्र पहनते थे जिससे स्वास्थ्य ठीक रहता था शरीर में हवा का प्रवेश होता था। उठना बैठना सहजता से हो जाता था तथा वस्त्रों के प्रति अत्यधिक मोह भी नहीं था। किन्तु वर्तमान में वस्त्रों का पहनना मात्र शरीर की रक्षा नहीं बल्कि फैशन के लिये हो रहा है। बच्चे का जन्म होता है तब वह नहीं समझता कि फैशन क्या है? तब उसकी मां उसे फैशन में रखती है और जब वह जरा सा भी समझने लगता है तब वह स्वयं शुरू हो जाता है, मुझे ये नहीं पहनना, मुझे वो पहनना है।

महिलायें और लड़कियों पर इसका प्रभाव सबसे ज्यादा है। महिलायें हर परिस्थिति से जल्दी प्रभावित होती हैं व पसंद आने पर उस चीज के ग्रहण करने की कोशिश भी करती हैं और जहां फैशन का नाम आ जाये तो, लाइन में सबसे आगे खड़ी मिलती हैं। वस्त्रों की फैशन ने इंसान के अंदर तक प्रभाव डाला है। वर्तमान को देखते हुये फैशन का तूफान कहां जाकर रूकेगा पता नहीं और इस तूफान की चपेट में कितने घायल (मोहित) होंगे पता नहीं है। कितने इस फैशन से चोट खा कर सुधरेंगे या नही पता नहीं। हाथ कंगन को आरसी क्या

और पढ़े लिखे को फारसी क्या। अर्थात वस्त्रों के विषय में चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वो सबके जीवन के प्रेक्टीकल का विषय है।

वस्त्रों को समझने का प्रयास करे। शरीर रूपी वस्त्र और उस पर पहनने वाले वस्त्र और उसके अंदर रहने वाली आत्मा, तीनो को अलग-अलग समझने का प्रयास करे। **हंस दृष्टि** को प्राप्त करें दूध को दूध, पानी को पानी देखें तो ये मनुष्य भव मिलना सार्थक हो जायेगा वरना हम वस्त्रों के बदलने के अलावा संसार में कुछ नहीं कर पायेंगे। आत्मा का स्वभाव कर्म रहित होकर मोक्ष में जाना है। अतः स्वभाव को पहचान कर स्वभाव में आयें।

बड़ा ही महत्व है

युद्ध में शस्त्रों का,
बचने के लिये अस्त्रों का,
पहनने के लिये वस्त्रों का
बड़ा ही महत्व है।

समुद्र के मंथन का,
पढ़ने में ग्रंथन का,
वस्त्रों पर चिंतन का,
बड़ा ही महत्व है।

दाल के गलने का
मालिश में मलने को,
मृत्यु से तन बदलने का
बड़ा ही महत्व है।

कष्ट को सहने का,
नदी के बहने का,
डिजाइन वाले वस्त्र नहीं पहनने का,
बड़ा ही महत्व है।

रहने मे सृष्टि का,
जल की वृष्टि का,
मनुष्य की हंस दृष्टि का,
बड़ा ही महत्व है।

11

चाय कौन पीता है? क्यों पीता है?

चाय एक गरम पेय पदार्थ है। यह भारत का उत्पाद नहीं बल्कि अँग्रेजो के साथ विदेश से आई वस्तु है। भारत वासी तो गाय और भैंस का दूध पीने वाले थे। अँग्रेज चौराहे पर खड़े होकर चाय फ्री में बांटते थे। भारत में मुफ्त में कुछ भी बाँट दो कोई मना नही करेगा। जहर भी होगा तो कहेंगे ले लो, पता नहीं कब काम आ जाये। तो अँग्रेज चाय बांटते थे, लोगो ने पीना शुरू कर दिया। कुछ दिनों के बाद अँग्रेजो ने चाय बाँटनी बंद कर दी। लोगों ने चाय माँगी तो, वे चाय बेचने लगे और चाय शुरू हो गई लोगों के जीवन में जो पीढ़ी दर पीढ़ी आज तक चली आ रही है। बिना जाने बिना स्वास्थ्य पर ध्यान दिये पिये जा रहे हैं। दूध जैसे स्वास्थ्य वर्धक पदार्थ को छोड़ रखा है।

अँग्रेज चाय क्यों पीते हैं?

अँग्रेज जिस देश के निवासी हैं वह क्षेत्र अत्यधिक ठंडा है। वहाँ बारह महीने में आठ महीने बर्फ पड़ती है। जिससे वहाँ रक्त चाप (BP) नीचे हो जाता है, चाय पीने पर शरीर में गर्मी आती है और BP ठीक होता है, वे चाय इसीलिये पीते है। किन्तु भारतवासी नकलची हैं, वो चाय पीते हैं, इसीलिये हम भी चाय पीते हैं। थोड़ा चिंतन करो थोडा विचार करो कि हमारे भारत में 12 महीने में आठ महीने गर्मी रहती है, दो महीने कम ठंड रहती है और मात्र दो महीने थोडी ज्यादा ठंड रहती है। हमारे यहाँ के मौसम के हिसाब से हमारे शरीर को चाय की आवश्यकता नहीं है। और शरीर की आवश्यकता बिना चाय पियोगे तो धीरे-धीर फिर चाय भी पीना और BP कम करने की गोली भी खाना। चाय ना पिओ तो BP की दवाई भी नहीं खानी पड़ेगी। लोग जून के महीने में भी गरम-गरम चाय पीते हैं जिससे पेट में एसिड बनती है, गैस बनती हैं, फिर दवाईयां खाते हैं। स्वस्थ्य रहना है तो चाय छोड़ना चाहिये।

चाय में निकोटीन नामक एक पदार्थ होता है जो खून में मिल जाता है और चाय का समय होते ही उसमें परिवर्तन होता है। ना चाहते हुये भी कई बार चाय पीनी पड़ती है। वरना सिर दर्द प्रारंभ हो जाता है। जब कभी लोग तीर्थ यात्रा पर जाते हैं तब बहुत परेशानी होती है। समय पर चाय नहीं मिलने पर सिरदर्द होता है और तीर्थो के दर्शन करने में भी मन नहीं लगता है। आपने तीर्थ यात्रा के लिये कितनी मेहनत की, पैसा खर्च किया और एक चाय के कप ने आपकी तीर्थ यात्रा पर पानी फेर किया। चाय एक व्यसन बन गया। भगवान महावीर ने खोटी आदतों को व्यसन कहा है।

व्रत उपवास करना है तो चाय छोड़ो

पहाड़ पर भी झरने होते हैं, अर्थात कठोर से कठोर व्यक्ति भी धर्म की भावना रखता है। धर्म की शुरूआत त्याग और तपस्या से होती है। जैन धर्म का त्याग सारी दुनिया में प्रसिद्ध है। व्रत उपवास पूर्ण निवृत्ति के साथ किया जाता है। जैसे दूध को गरम करने के लिये भगोनी को गरम करना आवश्यक है वैसे ही आत्मा को तपाने के लिये शरीर को तपाना आवश्यक है। आत्मा की पवित्रता और मन की शांति के लिए त्याग आवश्यक है।

अक्सर महिलायें व्रत उपवास की भावना बहुत रखती हैं पर चाय के कारण पीछे हट जाती हैं। चाय नहीं पियेंगे तो सिर दुखेगा अतः चाय ने उन्हे व्रत उपवास नही करने दिया। कुछ महिलायें हिम्मत करके उपवास व्रत करना प्रारंभ कर देती हैं किन्तु दो दिन पहले से टेन्शन शुरू हो जाती कि कल व्रत करूँगी तो सिर दुखेगा जिस दिन व्रत उपवास होता है सुबह से ही दर्द होने लगता है। पूजा में भी अच्छी तरह से मन नहीं लगता। दिन भर दर्द को दिमाग में रखकर दिन काट लेती हैं, और रात को सोकर काट लेती हैं। इंतजार है सुबह का कि सुबह हो और चाय पियें। चाय पीकर बड़ा आनंद सा आता है। जो चाय की आदत वाले हैं उनका उपवास चिडचिड़े स्वभाव के साथ होता है।

जबकि उपवास का अर्थ है परिणामों में शांति, आत्मा को उस दिन कषाय, पाप और टेंशन से दूर रखना। इस चाय ने धर्म ध्यान पूर्वक व्रत उपवास भी ना करने दिया। अब आप चिन्तन करो कि चाय ना पीते होते तो व्रत उपवास वाले दिन कैसा लगता। बड़ा आनंद मिलता। मैंने कई महिलाओं को इस विषय में समझाया तो उन्होंने चाय का त्याग किया, और आज वे एक ही बात कहती हैं कि माताजी यदि आपने चाय का त्याग न कराया होता तो हमें उपवास व्रत में इतना आनंद ना आता। अतः यदि धर्म मार्ग में आगे बढ़ना है तो चाय का व्यसन सबसे पहले त्याग करना होगा।

चाय कैसे छोड़े?

बहुत आसान है। चाय छोड़ना कोई बड़ी बात नहीं, बस मन को संकल्पित करना होगा। ऐसा कौन सा काम है जो इंसान नहीं कर सकता। इंसान के अंदर तो भगवान बनने की शक्ति है, चाय छोडना कौन सी बड़ी बात है। चाय छोड़ने के लिये मन पक्का कर लें और सिर दर्द से बिल्कुल ना डरें। पहले दिन दर्द होगा दूसरे दिन, थोड़ा और दर्द होगा। आप दूध की ओकाली बनाकर पी ले अर्थात् दूध में सोंठ काली मिर्च डालकर उबाले और पीले। तीसरे दिन दर्द उससे कम होगा चौथे दिन उससे कम और एक सप्ताह में आपको ये भी नहीं लगेगा कि चाय कभी पी भी थी। इस तरह आपकी चाय छूट जायेगी ओर आप आनंदमयी व्रत उपवास करना प्रारंभ कर देंगे। दुनियां के किसी कोने में जाओ। चाय के कारण परेशान नहीं होना पड़ेगा।

बड़ा ही महत्व है

मनुष्यों की राय का
किताब में अध्याय का
छोडने में चाय का
बड़ा ही महत्व है।

त्यागने में असन का
कंट्रोल में राशन का
छोडने में व्यसन का
बड़ा ही महत्व है।

बहु में सास का
पहनने में लिबास का
करने में उपवास का
बड़ा ही महत्व है।

लिखने में खत का
चलने में पथ का
करने में व्रत का
बड़ा ही महत्व है।

स्वभाव में नर्म का
भोजन में गर्म का
जीवन में धर्म का
बड़ा ही महत्व है।

12

संसार के रास्ते मंजिल पर नहीं पहुँचाते, मंजिल गाड़ी की नहीं सवार की होती है।

एक लड़की सपने में स्वर्ग गई। वहाँ सामने एक रास्ता दिखा, चलने लगी, सामने सुंदर मंच सजा है, वहाँ उनकी महादेवी खड़ी थी। उसने आवाज दी आओ बेटी आओ, लड़की ने भागना शुरू किया, पर मंच पर नहीं पहुँच पाई फिर देवी ने कहा आओ बेटी आओ, लड़की ने फिर भागना शुरू किया, दौड़ते-दौड़ते थक गई पर मंच पर नहीं पहुँच पाई। देवी ने फिर बुलाया तो लड़की ने ऊँची आवाज में कहा कि क्या तुम्हारे स्वर्ग के रास्ते मंजिल पर नहीं पहुँचाते? उत्तर में देवी ने कहा-हाँ। नहीं पहुँचाते, पर तुम्हारी धरती के रास्ते भी मंजिल पर नहीं पहुँचाते। लड़की उत्तर सुनकर हैरान हुई और सोच में पड़ गई।

वास्तव में देखा जाये तो, संसार में हम जिन रास्तों पर चल रहे हैं वे रास्ते हमें मंजिल पर नहीं पहुँचाते, या उसकी कोई मंजिल है ही नहीं। क्यों कि मंजिल उसे कहते है जहाँ पहुँचने के बाद हमें लौटना ना पड़े। जिस कार्य को करने के बाद हमें वह कार्य करना ना पड़े। हम सुबह से शाम तक जिन रास्तों पर चले हैं। सारी जिन्दगी उसी में घूमते हुये निकल जाती है। वे रास्ते आगे-आगे नहीं ले जाते।

एक कोल्हू में तेल पेलने के लिये दो बैलो को लगा दिया और उनकी आँखों पर पट्टी बांध दी। बैल पूरे दिन चलते रहे। शाम को जब पट्टी खोली तो बैल, वही खड़े थे, जहाँ सुबह चले थे। ठीक ऐसे ही इंसान उन्ही गलियों में उन्ही मोहल्ले में उसी गांव में घर से दुकान और दुकान से मकान में, मोह की पट्टी बांधे घूमते रहते हैं। अंत समय जब जाने का नंबर आता है तब मोह की पट्टी खुलती है तो पता चलता है कि कोल्हू के बैल की तरह जहाँ से चले थे वही खड़े हैं। उन्ही गलियों में घूमते हुये ना जाने कितनी चप्पल घिस दी कितने

जूते घिस दिये। घुटनो में दर्द हो गया, घुटने बदलवा लिये फिर चलना शुरू किया पर मंजिल पर कदम आज भी वहीं है। चलना नहीं चलना बराबर है। पशु भी चलते हैं, देव भी चलते हैं नारकी और मनुष्य भी चलते हैं पर कदम मंजिल की तरफ नहीं तो चलना व्यर्थ है।

विषय भोगों के लिये भी रात दिन मेहनत करते हैं पर उसमें संतुष्टि की मंजिल नहीं मिलती है। तरह-तरह के स्वाद वाले व्यंजन खाये, पर जितने खाये उतनी तृष्णा बढ़ती गई।

जहाँ नजर डालो चारों तरफ सब जीव जंतु चल ही रहे हैं। दीवाल पर छिपकली चल रही है। आकाश में मक्खी मच्छर चिडिया उड़ रही है। पेड़ पर बंदर इस डाल से उस डाल पर कूद रहा है। कौन बैठा हुआ है? कोई नहीं। चींटी भी लाइन बनाकर चल रही है। नरक के नारकी भी एक जगह शांति से बैठना नहीं जानते एक दूसरे के पीछे भागते हैं और मार काट मचाते रहते हैं। स्वर्ग के देव भी बाग बगीचे, वनो, भवनों में घूम-घूम कर भोग भोगते रहते हैं और आयुकर्म पूरा कर देते हैं। व्यंतरो का काम तो भटकने का ही है। कौन बैठा हुआ नजर आता है? कोई भी नहीं।

मनुष्यों को देखो वह भी यहां से वहां घूमता रहता है। कोई काम ना हो तो मोटर साइकिल या गाड़ी लेकर होटल चला जायेगा। बाजार के चक्कर लगा आयेगा। बच्चे को देखो बिना काम के वो भी दौड़ता रहता है। सब चल रहे हैं। पांव तो चल ही रहे हैं साथ ही सांसें चल रही हैं, हाथ भी चल रहा है। और इन सबका राजा मन भी चल रहा है। शरीर में खून भी चल रहा है। समय काल हर पल चल रहा है जिससे घड़ी के भी तीनो सुईयां घंटा मिनिट सेकेंड की घूम रही हैं। सारी दुनिया चल रही है। पर ऐसा कौन है जो मंजिल की तरफ चल रहा है।

आपने पढ़ाई को मंजिल बनाया, कुछ वर्षो में पूरी हो जायेगी। उसके आगे फिर कुछ और करना पड़ेगा। नौकरी को मंजिल बनाया वो छूट सकती है। व्यापार को मंजिल बनाया हानि वृद्धि कुछ भी हो सकती है। शादी को मंजिल बनाया, वह केवल शरीर रहने तक साथ निभायेगी। ये सारी मंजिल-मंजिल नहीं हैं ये जीवन जीने के लिये सहायक कार्य हैं जिसे घर में रहने वाले को पूरा करना पड़ता है। ये सारी मंजिल शरीर के स्तर की हैं। जब तक शरीर है। तब तक हैं। इसके आगे हमारी आत्मा की यात्रा बहुत लंबी है। अनेक शरीर मिलेंगे

आगे इसीलिये मंजिल शरीर के हिसाब से नहीं आत्मा के हिसाब से बनानी है, और उस हिसाब से शरीर को गाड़ी बना कर उस पर सवार होकर आगे की यात्रा तय करनी है। मंजिल तक पहुँचने के लिये शरीर रूपी कई गाड़ियां बदलनी पड़ेंगी, गाड़ियों से मोह मत करना। मंजिल की तरफ नजर रखना। गाड़ी की मंजिल को मंजिल ना समझे गाड़ी की कोई मंजिल नहीं है। जैसे आपके घर की गाड़ी को पैट्रोल चाहिये, खड़े रहने को गैरिज चाहिये, साफ सफाई चाहिये, खराब हो जाये तो कारखाना चाहिये। ये सब चीजे गाड़ी को चलने में सहायक हैं पर मंजिल नहीं। ठीक ऐसे ही स्कूल की पढ़ाई व्यापार मकान, शादी ये शरीर रूपी गाड़ी के साधन हैं साध्य नहीं हैं आजकल के लोगों ने इसे मंजिल मानली है। अच्छी नौकरी अच्छा पैसा अच्छा मकान आदि इसीलिये संसार में दुख बढ़ रहे हैं। मंजिल की तरफ ध्यान लगाते ही गाड़ी से संबंधित दुख भाग जायेंगे। सुखी गाड़ी को नहीं आत्मा को करना है। गाड़ी की व्यवस्था से आत्मा सुखी मान कर रहा है। यही भूल उसके दुख का कारण है।

गाड़ी की व्याख्या अलग है और उसमें सवार की व्याख्या अलग होगी। दोनों के गुण धर्म अलग-अलग हैं। दोनों का स्वभाव अलग है। दोनो के कार्य अलग है, गाड़ी का काम ले जाने का है और सवार का काम जाने का है। दोनों को एक कैसे मान सकते हैं? यही गल्तियां दोनो को परेशान कर रही हैं। गाड़ी को गाड़ी समझ लें और सवार को सवार तो सम्यदर्शन आवश्यक हो जायेगा।

जब तक संसार में है गाड़ी तो मिलेगी और गाड़ी का काम है चलने का तो यह चलती भी रहेगी। बस गाड़ी जा कहाँ रही है ये देखना है। गाड़ी का मुख यदि संसार की तरफ है अर्थात् भोगों में, कषाय में, पाप में राग द्वेष में लिप्त है तो गाड़ी संसार के तिर्यच और नरक गति के गड़ढे में गिरेगी। क्योंकि गाड़ी को आत्मा के हिसाब से नहीं शरीर का लक्ष्य बनाकर चलाया जा रहा है। गाड़ी और आत्मा के परमाणु इतने पास रह रहे हैं जैसे तिल में तेल, लकड़ी में अग्नि, पत्थर में सोना अलग देखना मुश्किल हो रहा है। आत्मा को अलग देखने के लिये यंत्र की आवश्यकता है। उस यंत्र का नाम है धर्म, भेद विज्ञान रत्नत्रय। वाहर की आँखे तो स्थूल वस्तु को देखती है पर ज्ञान की आँखे ही आत्मा को देख सकती है।

आत्मा की मंजिल पर चलने के लिये आवश्यक नहीं शरीर चले पांव चले।

आत्मा की मंजिल पाने के लिए बैठे-बैठे भी चल सकते हैं। अर्थात भावों के माध्यम से। जिसमें बोलते हुये मौन होगा, देखते हुये भी नहीं देखेगा यदि वह अपनी आत्मा में स्थिर है। पांव चलना विशेष नहीं है, विशेष भावों का चलना है। कि वे किधर जा रहे हैं, शुभ में या अशुभ में। अशुभ स्थान भी तुम्हे मंजिल पर चलने से नहीं रोक सकता। जेल, घर, दुकान कही भी बैठकर मुक्ति के मार्ग पर चला जा सकता है। क्योंकि जेल शरीर को हो सकती है भावों को नहीं। ऐसी जंजीर नहीं है जिससे मन को बांधा जा सके। मन से आप कितना आत्मा परमात्मा को याद करें यह हमारी अंतरंग परिणति है; इसे ही सुधारना है।

बड़ा ही महत्व है

शरीर में दिल का
चूहे के बिल का
आत्मा की मंजिल का
बड़ा ही महत्व है।

पूडी के तलने का
मित्रो से मिलने का
मंजिल पर चलने का
बड़ा ही महत्व है।

बाग में बाडी का
राज स्थान में लाडी का
शरीर रूपी गाड़ी का
बड़ा ही महत्व है।

13

उतना ही लो थाली में, व्यर्थ ना जाये नाली में

देह चन्नादि कीट्कम, यह शरीर अन्न का कीड़ा है, पंडित आशाधर जी ने सागार धर्ममृत नामक ग्रंथ में लिखा है। कि मध्यलोक के मनुष्य बिना भोजन के जिन्दा नहीं रह सकते। यह बात सबके जीवन में प्रक्टीकल में आ रही है। उपवास व्रत भी नहीं करते कुछ लोग। जन्म लेते ही खाना पीना शुरू करते हैं तो मरते दम तक भी नहीं छोड़ पाते। साधना और संयम ना होने से जीवन अन्न का कीड़ा ही कहलायेगा। आहार संज्ञा का विचार, चर्चा, तैयारी बनाना और खाना। बस दिनभर इसी में निकल जाता है।

अतीत समय में तो भोजन के आइटम कम थे। मोबाइल टी. वी. ना होने के कारण चर्चा केवल आस पड़ोस तक ही सीमित थी। अब इसका विषय विस्तार होता जा रहा है। सामाजिक पत्र पत्रिकाओं में खाने की चर्चा, टी. वी. में खाने की चर्चा, मोबाइल में खाने की चर्चा आपस की चर्चाओं में खाने की चर्चा किसी शहर में जाओ तो यहां क्या बढिया बनता है, दुकान ढूँढो। इसकी चर्चा। खाने के पहले चर्चा कि क्या खाना है, खाने के बाद चर्चा की क्या खाया, क्या अच्छा लगा, क्या नहीं लगा, उसकी कमी की चर्चा। किसमें नमक ज्यादा या कम था। क्या बढ़िया था या नहीं। शादी में जाओ तो खाने की चर्चा, जन्मदिन में भी खाना मुख्य है। इंसान की जिव्हा लोलुपता उसे भोजन से ऊपर का विचार ही नहीं करने दे रही है।

भगवान महावीर ने चार विकथा (जिन्हे नहीं करना चाहिये) को पाप बंध का कारण बताया है। राज्य कथा, स्त्री कथा, चोर कथा और भोजन कथा। इन चर्चाओं से अशुभ कर्म (पाप) का आस्त्रव होता है। जितना दिन भर में भोजन को करते है, उतनी चर्चा यदि आत्मा और परमात्मा की करी जाये तो मोक्ष मंजिल दूर नहीं है। घर की शांति दूर नहीं है। भोजन करना आवश्यक है भोजन के बिना जीवन नहीं चल सकता पर भोजन की चर्चा ना करें तो जीवन चल सकता है। अतः मैं भोजन चर्चा का त्याग करवा रही हूँ भोजन का नहीं।

वर्तमान की समस्या

वर्तमान में एक बहुत बड़ी समस्या बन गई झूठा छोड़ने की। शादियों में पार्टियों में सामाजिक कार्य क्रमों में। बहुत अधिक अन्न थाली में छोड देते हैं। और वह अन्न नाली में जाकर सड़ता है। बदबू फैलती है। क्योंकि उसमें अनंत जीवों की उत्पत्ति हो जाती है। इसका पाप उसे लग रहा है जिसने थाली में अन्न छोड़ा है। वह बच्चा हो या बड़ा अनंत पाप का भागी है। आने वाले समय में निश्चित ही उसे दाने-दाने को मेहनत करनी पड़ेगी, फिर भी मिल जाये ये कोई जरूरी नहीं है। आज पुण्य का अपमान किया है कल पुण्य को बुलाना पड़ेगा।

सोचो अन्न इस धरती से कैसे निकलता है, कितनी मेहनत लगती है। दिसंबर और जनवरी में लोग रजाई ओढ़ कर खिड़की दरवाजे बंद करके, हीटर चालू करके घर में आराम से सोते हैं, तब किसान खेतों के बीच में मचान बनाकर खुले आसमान के नीचे उस फसल की रक्षा करता है। रात भर सोता भी नहीं हैं। झूठा छोड़ कर तुमने उस किसान की मेहनत का अपमान किया है। गर्मी में जब ए. सी. और कूलर में दिन निकालते हो तब किसान तपती धूप में तवे समान गरम मिट्टी में खेत में हल चलाता है। इतनी मेहनत से निकले अन्न को आपने यूँ ही छोड़ दिया। यदि छोड़ना ही था तो थाली में ना लेते।

उतना ही लो थाली में व्यर्थ न जाये नाली में।

किसान खेत में बीज डाल कर उसकी रक्षा करता है। आप जिसे धरती मां कहते है वह मां बीज मिलते ही तुम्हें लौटाने के लिये बीस गुने बीज पैदा करती है। हवा अपना काम करती है, बारिश अपना काम करती है और सूरज अपनी किरणों से उसमें प्राण फूंक देता है। धीरे-धीरे अंकुरण होता है, फिर वृक्ष बाहर आता है फिर उसमे फूल फल अनाज आता है। चार महीने तक सारी प्रकृति ने धरती मां ने मेहनत की आपने उस मां का भी अपमान किया है, छोड़कर। घर में अपनी मां अपमान करते हो तो डाट पडती है। झूठा अन्न छोडकर धरती मां का का अपमान किया इसका फल भी मिलेगा। बोलकर नहीं बिना बोले मिलेगा। अतः झूठन कभी नहीं छोड़ना चाहिये।

पहले के समय में पशु हर घर में होते थे। तो झूठे बर्तन का पानी पशु को पिला देते थे तो वह सार्थक हो जाता था। किन्तु आज सारा झूठन नाली

और गटर में जाता है। आप में यदि जरा भी भावनायें होगी तो आप इस लेख को पढकर झूठा छोड़ने का त्याग कर देंगे। और यदि नहीं किया है तो आप जाने और आपका भविष्य जाने।

मंगल आशीर्वाद

बड़ा ही महत्व है

मन को मोड़ने का
कर्मों के पर्वत तोड़ने का
और झूठा नहीं छोडने का
बड़ा ही महत्व है।

भव्यो में आसन्न का
होने में प्रसन्न का
मनुष्यों के लिये अन्न का
बड़ा ही महत्व है।

शरीर में दम का
होने में नम का
पालन करने में संयम का
बड़ा ही महत्व है।

अनाज में चने का
नाव के खेने का
झूठा नहीं छोडेगे यह नियम लेने का
बड़ा ही महत्व है।

सेना में जवान का
देवो के विमान का
अन्न उगाने में किसान का
बड़ा ही महत्व है।

स्कूल में भर्ती का
स्वर्ण से निखरती का
अन्न उगाने में धरती का
बड़ा ही महत्व है।

14

आत्मा पावर हाउस है

बिजली सही जगह खर्च करें।

सभी गांव शहरों में बिजली बांटने के लिये पावर हाउस बनाये जाते हैं। जहां से बिजली घर, दुकान, फैक्ट्री, मंदिर आदि में जाकर उजाला करती है। जिसको जितनी बिजली चाहिये उस हिसाब से मीटर लगाये जाते हैं। बदले में बिल मिलता है। जिसका भुगतान करना पड़ता है। आवश्यकतानुसार सबकी पूर्ति की जाती है, पर भुगतान के आधार पर।

ठीक ऐसे ही हमारी आत्मा एक पावर हाउस है, और मन बिजली बाँटने का काम करता है। बिजली पांच इंद्रियों के माध्यम से खर्च की जाती है। मन के साथ मिलकर पांचों इंद्रिया आत्मा की अमूल्य शक्ति ज्ञान और समय को खर्च करती है। बिजली को व्यर्थ जलाने पर तो डाँट पड़ती है किन्तु आत्मा की शक्ति को व्यर्थ करते समय विवेक भाग जाता है। विवेक को साथ रखना आवश्यक है। विवेक ऑफीसर है, जो बिजली को व्यर्थ जाने से रोकता है। और कर्म हमारे फल के रूप में भुगतान लेता है। आत्मा की जितनी बिजली खर्च करोगे कर्म का बिल जरूर मिलेगा।

जैसे फैक्ट्री में बिजली खर्च होती है तो वहाँ उससे अधिक उत्पादन होता है और व्यक्ति उससे लाभ प्राप्त करता है। ठीक ऐसे ही व्यक्ति घर के कार्य करते हुये यदि परमात्मा को याद करे तो फैक्ट्री संसार की चल रही है और माल पुण्य का तैयार हो रहा है। क्रोध के समय में हमारी शक्ति खर्च अधिक होती है और माल माइनस में चला जाता है। घाटे का सौदा होता है बिजली भी खर्च की और घर का माल भी चला गया यानि पुण्य का क्षय हो गया। शत्रुओं की खेती हो जाती है। निंदा आदि करते समय भी शक्ति व्यर्थ जा रही है। पाँचो पाप और चार कषाय करते समय बिजली अधिक मात्रा में खर्च हो रही है और शुभ भावनायें नष्ट हो रही हैं। सुख भी दुख के रूप में

आकर फल दे रहा है। और जो वर्तमान में बंध हो रहा है वह भी कर्म के कांटे हैं। जब चुभेंगे तो कष्ट और पीड़ा ही होगी।

बेटा यदि व्यर्थ में गाड़ी घुमाये तो डाँटते हो कि व्यर्थ में पैट्रोल जलाये जा रहा है। लेकिन आत्मा की शक्ति को व्यर्थ खर्च करते हुये कभी विचार नहीं आता। व्यर्थ में पंखा नहीं चलाना, व्यर्थ में अग्नि नहीं जलाना, तो व्यर्थ में आत्मा की शक्ति भी नहीं खर्च करना। अब मुझे यह बताने कि आवश्यकता नहीं है कि व्यर्थ के कार्य कौन से होते हैं। संसार में समझदारों की कमी भी नहीं है। कोई दूसरा समझाये तो बुरा लगता है, इसी लिये हम हर बात स्वयं समझ लें तो अच्छा होगा। पढ़ के समझे, सुन के समझे, सामने वाले को ठोकर खाते हुये देख के समझे, टी. वी. सीरियल से समझे, पिक्चर देख के समझे, कि किस काम के कारण उन्हें कष्ट हुआ है, वे काम ना करें। तो ही हमारी समझदारी है। सिखाने को तो सारा संसार सिखा रहा है। सीखने वाला चाहिये। सीखने वाला होगा तो राग में भी वैराग्य नजर आ जायेगा और नहीं समझने वाला हो तो साक्षात तीर्थंकर महावीर भी आ जायें तो नहीं समझेगा।

इन सब बातों को पढ़ते हुए आपको बहुत अच्छा लग रहा है। किन्तु चिन्तन करो ये बातें आप तक कैसे पहुंची। बस जो बात लिखी है कि अपनी शक्ति सही जगह लगाये व्यर्थ खर्च ना करे ऊर्जा से ऊर्जा पैदा करें। वही से ये सारी बात आपसे कह पाई हूँ। अमूल्य जीवन, अमूल्य शक्ति, अमूल्य भव, अमूल्य धर्म, अमूल्य नरतन पाकर भी यदि अमूल्य कार्य ना कर पायें तो समझना धन मिला मगर सदुपयोग नहीं हो पाया।

बड़ा ही महत्व है

तपस्या में बाहुबली का
फूल में कली का
आत्मा की बिजली का
बड़ा ही महत्व है।

पेड़ में तने का
गर्मी में पने का
संसार से अच्छाई सीखने का
बड़ा ही महत्व है।

पर्वत पर झरने का
भव से तिरने का
बिजली समझदारी से खर्च करने का
बड़ा ही महत्व है।

माला को फिराने का
दुकान में किराने का
आत्मा की शक्ति सही जगह लगाने का
बड़ा ही महत्व है।

15

द्रव्य णमोकार और भाव णमोकार

जैसे आपने सर्दियों में जब आपको ठंड लग रही थी आपने फटाफट चाय बनाई और पी ली। जैसे ही चाय पेट में गई, वहाँ से आपके शरीर के हर अंग और हर हिस्से में गरमाहट महसूस होने लगी। शरीर का अंग-अंग, शरीर का रोम-रोम चाय की अनुभूति कर रहा है। चाय को जानना और समझना द्रव्य चाय है और पीकर उसकी अनुभूति लेना भाव अनुभूति है। चाय में दूध, चीनी, पानी, चाय पत्ती है। पीकर थोड़ी देर अच्छा लगा।

ठीक ऐसे ही णमोकार मंत्र को जानना, णमोकार मंत्र पढ़ना उच्चारण करना यह द्रव्य णमोकार है किन्तु जब णमोकार को मन से भावों के अंदर प्रवेश कराया जाये और हर पद में अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु का स्मरण किया जाये तथा साथ ही साथ बहुमान पूर्वक नमस्कार किया जाये, तो सिर अपने आप झुक जाता है, हाथ अपने आप जुड़ जाते हैं। मन में पंचपरमेष्ठी की तस्वीर अपने आप घूमने लगती है। शरीर का रोम-रोम णमोकार मंत्र की अनुभूति करने लगता है। दुख की ठंड भाग जाती है और सुख की अनुभूति होने लगती है। पलके आँखे सब झुकने लगते हैं।

जिस समय भाव पूर्वक पंच परमेष्ठी को नमस्कार करते हैं, अनंत पापों का नाश होता है। भाव नमस्कार में इतनी ताकत है कि सम्यम्दर्शन की प्राप्ति हो सकती है। इसे 84 लाख मंत्रो का राजा कहा है, तो क्यों कहा है, भगवान महावीर ने कहा इसी लिये कहा। विधि पूर्वक पढ़कर देखिये णमोकार निश्चित है करोड़ो पापो को नाश करने की ताकत रखता है।

जब बददुआ लग सकती है तो दुआ क्यों नहीं?

एक महिला ने आकर प्रश्न किया कि माताजी क्या मैं अपने बेटे के नाम से विधान जाप आदि कर सकती हूँ। उसको कुछ मिलेगा कि नहीं। मैंने यही

उत्तर दिया कि जब किसी की बददुआ लग सकती है तो दुआ क्यों नहीं लग सकती। अर्थात आपने बेटे के नाम से विधान किया उसकी बहुत सारी ऊर्जा उसके पास अवश्य पहुँचेगी। कैसे नहीं पहुँचेगी?

समुद्घात

मूल शरीर को ना छोड़ कर आत्मा के प्रदेशों का बाहर निकलना समुद्धात कहलाता है। यह सात प्रकार का होता है-

1. **कषाय समुद्घात** - क्रोध, मान, माया, लोभ को करते समय जिन पर किया जा रहा है आत्मा के परमाणु उस समय या उस वस्तु पर अटैक करते हैं।

2. **विक्रिया समुद्धात** - मूल शरीर से अलग इसरा शरीर बनाया जाता है। या उसी शरीर में रूप परिवर्तन किया जाता है।

3. **वेदना समुद्धात** - पीड़ा और और कषाय के समय भी आत्मा के प्रदेश बाहर निकलते हैं।

4. **तैजस समुद्घात** - ऋद्धि धारी मुनिराज को जिस पर करूणा आती है तो वह उसे ठीक करते हैं और क्रोध आने पर नष्ट करते हैं। उनके दाये बांये कंधे से शुभ अशुभ तैजस पुतला निकलता है। यह तैजस समुद्रघात है।

5. **आहारक समुद्घात** - ऋद्धि धारी मुनिराज को धर्म से सम्बन्धित कोई प्रश्न आदि होने पर उस शंका के समाधान के लिये सिर से सफेद रंग का आहार पुतला निकलता है और समवशरण में जाकर शंका का समाधान करके आता है और वापस सिर में प्रवेश कर जाता है। जिससे शंका समाधान हो जाता है।

6. **केवली समुद्घात** - आयु कर्म के बराबर अन्य कर्मों की स्थिति को करने के लिये केवली भगवान के आत्मा के प्रदेश बाहर निकल कर कर्मों को झड़ा देते है।

7. **मारणांतिक समुद्घात** - मरण के समय आत्मा अगला जन्म देखने के लिये जाता है और वापस आके फिर बाद में मृत्यु होनी है।

इन सब में आत्मा शरीर को ना छोड़कर बाहर जाती है और सारे कार्य भी करती है। ये बात तो सिद्ध है। कि जैसे ही हमारा मन बाहर जाता है, वे हमारी

आत्मा के ही प्रदेश हैं। आत्मा के प्रदेश जहाँ जाकर स्पर्श करते हैं उसकी अनुभूति आत्मा को होती है। लोग कहते हैं कि उसे नजर लग गई। नजर उतार दें तो वह ठीक भी हो जाता है। यह क्या है सामने वाले के विचार और मन उस बच्चे या व्यक्ति के लिये इतने शक्तिशाली थे कि अटैक कर गये। वे आत्मा के प्रदेश ही थे जो आँखो के माध्यम से बाहर आये और उसे लग गये। लोग कहते हैं, अरे हिचकी आ रही है, पता नहीं कौन याद कर रहा है। उनका नाम लेते हैं जो आपको याद कर सकता है। जिसके नाम पर हिचकी बंद हो जाये समझना वो याद कर रहा है। ये हिचकी क्या है? ये आत्मा के प्रदेश ही थे। लोग कहते हैं हमारे हाथ में खुजली हो रही है, पैसा आयेगा, ज्यादातर ऐसा हो भी जाता है। क्योंकि दुनिया में हर कोई किरणें फेंक रहा है, चाहे जीव हो या पुदगल।

पहले के लोग जब किसी से ज्यादा नाराज होते थे तो ऊँगली चटकाते हुये बद्दुआ देते थे। हॉलाकि ऐसा करना नहीं चाहिये ये भी कषाय समुद्घात है। जब आपकी आत्मा के प्रदेशो में इतनी ताकत है और जिसे बददुआ दी जा रही है वह कितना ताकतवर है यह बात उन पर निर्भर होती है। असर हो या ना हो जरूरी नहीं पर परमाणु जाते अवश्य हैं।

जब बददुआ शरीर से निकलती है तो दुआ क्यों नहीं निकल सकती महिलायें परेशान होकर कहती हैं कि हमारे पति मंदिर नहीं आते तो मैं उन्हे कहती हूँ आप उनके नाम की पूजा माला विधान कर लिया करो। बेटा पढ़ाई करता है तो आप उसके नाम से भगवान की माला फेर लिया करो। पूरा नहीं मिलेगा किन्तु कुछ अंश तो अवश्य ही पहुँचेगा।

रैकी क्या है?

सकारात्मक ऊर्जा को प्रभु के नाम की शक्ति मिलाकर उस व्यक्ति को ऊर्जा देना जिसे आवश्यकता है। रैकी में एक शर्त पहले लगाई जाती है कि जिस समय हम रैकी देगे उस समय आपके भाव भी लेने के होने चाहिये। इससे बड़े-बड़े रोग ठीक हो जाते हैं।

नजर उतारना भी रैकी का एक तरीका है। मेरा स्वयं प्रेक्टीकल है कि एक बार बुखार जैसा लग रहा था आँखे चढ़ी-चढ़ी लग रही थी शरीर में वेदना हो रही थी। एक महापुरूष आए उन्होने चेहरा देखा तो कुछ पत्थर के टुकड़े मंगवाये। मंत्र पढ कर दूर से ही शरीर के चारों तरफ घुमाया। पाँच मिनिट में मैने महसूस किया कि तबियत बिल्कुल ठीक हो गई। ऐसा भी कभी-कभी होता है। ये किरणों का ही खेल है।

अब मैं सारी चर्चा का सार निकालना चाहती हूँ कि आत्मा किसी को याद करे तो आत्मा के प्रदेश उस व्यक्ति को स्पर्श करते हैं, आप कही और व्यस्त हो, पता ना चल पाये बात अलग है। मिस कॉल तो आ ही जायेगी। मगर देखेंगे कहाँ। ठीक ऐसे ही जब हम परमात्मा को याद करते हैं तो हमारी आत्मा के प्रदेश उन्हे जाकर स्पर्श करते हैं। और लगातार याद करें तो एक ध्यान की स्थिरता बनती है और परमात्मा को स्पर्श करके उनकी शक्ति उनकी ऊर्जा हमारे तरफ बहने लगती है।

णमोकार मंत्र को शक्तिशाली बनाना है तो णमोकार मंत्र भाव पूर्वक पढ़ो णमो अरिहंताण में अरिहंत भगवान का ध्यान करो मंदिर में विराजमान प्रतिमा को ही लक्ष्य बनालें और उन्हे अरिहंत प्रभु मानकर णमो अरिहंताण बोलते हुये नमस्कार करे, णमो सिद्धाणं में उन्ही को सिद्ध मान कर नमस्कार करें, णमो आइरियाणं में आचार्य का ध्यान करें, णमो उवज्झायाणं में उपाध्यायों का और णमो लोए सव्व साहूणं में साधु परमेष्ठी का ध्यान करते हुये णमोकर मंत्र 9, 27 या 108 बार पढ़े, और फिर पंचपरमेष्ठी की ऊर्जा को महसूस करें। ऐसा करने से अनंत पापो का नाश होगा। और होगा भी क्यों नहीं अरिहंत भगवान को आपकी आत्मा ने स्पर्श किया है बीमारियां ठीक होने लगेंगी सिद्ध भगवान को स्पर्श किया। आपने उनकी ऊर्जा ग्रहण की है।

इसी विधि के माध्यम से हम भगवान की, परमात्मा की, ईश्वर की, तीनों लोको के नाथ की और गुरुओं की शक्ति को प्राप्त कर सकते हैं। इस विधि से णमोकार मंत्र अवश्य पढ़े।

बड़ा ही महत्व है

रिश्तो में बुआ का
पक्षियां में सुआ का
देने में दुआ का
बड़ा ही महत्व है।

मुख में दाँत का
पेट में आंत का,
आत्मा के समुद्घात का,
बड़ा ही महत्व है।

नदी के बहाव का
मनुष्य के प्रभाव का
करने में अच्छे भाव का
बड़ा ही महत्व है।

बजाने में सितार का
पानी की धार का
मंत्रों में णमोकार का
बड़ा ही महत्व है।

जल की वृष्टि का
रहने के लिये सृष्टि का
ध्यान में पंच परमेष्ठी का
बड़ा ही महतव है।

भोजन में भात का
झुकाने में माथ का
केवली के समुद्घात का
बड़ा ही महत्व है।

करने में नेकी का,
सब्जियों में मैथी का,
करने में रैकी का
बड़ा ही महत्व है।

नदी में नाव का,
मनुष्य के स्वभाव का,
आत्मा के भाव का,
बड़ा ही महत्व है।

16

लिपिस्टिक न छूट जाये

वरदानो के भंडार का पिटारा लिये मनुष्य इस धरती पर जन्म लेता है। अनंत शक्ति और अनंत ज्ञान का भंडार, मनुष्य और भी अनेक गुणों से परिपूरित है। अनंत संभावनायें इस मनुष्य के अंदर में हैं। दुखों को नष्ट करने की अद्भुत ताकत भी मनुष्य के पास है, तथा सुख पूर्वक जीने का रास्ता भी मनुष्य जानता है। मनुष्य पर्याय को भगवान महावीर ने भी श्रेष्ठ बताया है। **श्रेष्ठता** को प्रगट करना धर्म पुरूषार्थ से संभव है।

जैसे वायु से जीवन चलता है एवं अनेक और भी कार्य होते हैं। जैसे संसार में जितनी गाड़िया दौड रही हैं सब हवा के ही कारण, अर्थात् उनके टायर में हवा भरी है। अब आप इस हवा का और उपयोग कहां कब कैसे कर सकते हो यह आपके पुरूषार्थ पर निर्भर है ठीक ऐसे ही आत्मा की शक्ति का उपयोग हम कहाँ कब और कैसे कर सकते हैं इस बात का ज्ञान होना आवश्यक है। अज्ञानता में हम उस शक्ति का दुरूपयोग कर रहे हैं। ज्ञान होने पर तो डाकू भी साधु बन जाता है। ज्ञान होने पर जीवन में परिवर्तन आना प्रारंभ हो जाता है।

गाड़ी को बैक (पीछे) ले जाओ या आगे पेट्रोल तो जलता है। ठीक ऐसे ही जीवन में अच्छा करो या बुरा आत्मा की शक्ति तो खर्च होती है। जैसे पैसा खर्च करने में चार बार सोचते हैं, वैसे ही हर क्रिया में भी हिसाब लगाना चाहिये। छहढाला में भी बहुत अच्छी लाइन लिखी है।

गुण जाने ते दोष गुनन को,
कैसे तजिये गहिये।

अर्थात गुण और दोषों को पहचान नहीं जायेंगे तो उन्हे तजेंगें कैसे, इसीलिए प्रथमानुयोग के ग्रंथों में पाप और पाप का फल, पुण्य और पुण्य का फल दोनो

का वर्णन किया जाता है। क्षमा धर्म के फायदे के साथ क्रोध के दोषों को भी बताया जाता है। पर दोषों को पहचानना आवश्यक है। अज्ञानता होगी तो हम अपनी शक्ति व्यर्थ खर्च करके अपने मार्ग में कांटे बो लेंगे।

अब मैं आपको आपकी उस शक्ति के विषय में बताऊँगी, जिसे पहचान कर आप अपने संपूर्ण जीवन का सुदुपयोग कर सकते हैं। आपने अपनी क्रियाओं को कभी ध्यान से नहीं देखा बस उसी को ही दिखाऊँगी।

1. जब महिलायें नई साड़ी पहनकर भोजन बनाती हैं तो सारा काम करते हुये उन्हें साड़ी का ध्यान रहता है।

2. लड़की की जब सगाई हो जाती है, लड़की रहती पीहर में है पर मन सुसराल में रहता है। माता-पिता, भाई-बहन के साथ रहते हुये सास ससुर, पति, नंद, देवर को याद करती हैं।

3. जैसे-लोग नोट गिनते समय, यहां वहां देखते भी रहें, तो भी ध्यान नोटो में ही रहता है।

4. महिलायें जब पार्टी में या शादी में श्रृंगार करके लिपिस्टिक लगाकर जाती हैं। वहाँ पानी भी पीती हैं, भोजन भी करती हैं, मगर इतनी सावधानी होती है कि लिपिस्टिक ना हट जाये। चार पांच घंटे जीभ पर इतना संयम होता है कि जीभ होठों का स्पर्श नहीं करती।

जब काम करते हुये साड़ी याद रहती है, ससुराल याद रह सकती है, नोट और होंठ याद रह सकते हैं, तो संसार के कार्य करते हुये आत्मा और परमात्मा क्यों नहीं याद रह सकता। आत्मा की जिस शक्ति को आपने संसार में प्रयोग किया उसी शक्ति को यदि स्वयं के कल्याण के लिये प्रयोग करें, तो हमारे उद्धार का मार्ग खुलने में देर नहीं लगेगी। भगवान महावीर ने इस जीवन को कीचड़ में कमल की तरह रहने की उपमा दी है।

किसी ने कमल से पूछा कि तू इतना सुंदर है और कीचड़ में क्यों रहता है। तो कमल ने उत्तर दिया, जन्म मेरे हाथ में नहीं इसीलिये मैंने कीचड़ में जन्म लिया किन्तु पुरुषार्थ मेरे हाथ में है, इसीलिये कीचड़ से ऊपर उठ गया। ठीक इसी तरह मनुष्य का जीवन है।

भरत चक्रवर्ती, छः खंड का राज्य संभालते थे, 96 हजार रानियों के बीच रहते थे, पुत्र और पौत्रो को भी देखते थे इसके बाद भी कीचड़ में कमल की भांति निर्लिप्त रहते थे। इसीलिये उनके बंध इतना कम हुआ, कि दीक्षा लेने के अंतमुर्हर्त बाद ही केवल ज्ञान हो गया। इस भावना से रहने वाला प्राणी, कर्म बंध बहुत सूक्ष्म करता है। लिप्त रहने वाला अधिक आस्त्रव बंध करता है। और संसार भ्रमण करता है।

बड़ा ही महत्व है

रत्नों में स्फटिक का
बूढ़ो में स्टिक का
छोड़ने में लिपिस्टिक का
बड़ा ही महत्व है।

लिखने में तख्ती का,
अनुशासन में सख्ती का,
मनुष्य की भाव शक्ति का,
बड़ा ही महत्व है।

वस्तुओं के भाव का
अशुद्धि के अभाव का
श्रृंगार करने में महिलाओं का
बड़ा ही महत्व है।

चीते में फुर्ती का
सलवार की कुर्तीका
मनुष्यों में चक्रवर्ती का
बड़ा ही महत्व है।

17

ना अच्छा कहो, ना बुरा कहो

अक्सर किसी भी वस्तु पर नजर पड़ते ही हम उसे या तो अच्छा सिद्ध करते हैं या बुरा कहते हैं। उस वस्तु के प्रति हम अनजान हैं, उसकी क्वालिटी अच्छी है या नहीं। कैसे बनती है किसने बनाई है, हमारे काम की वस्तु है या नहीं। इन सब बातों की जानकारी किये बिना हम तुरंत निर्णय लेते हैं और उसे अच्छा बुरा कहने में पीछे नहीं रहते। जबकि भगवान महावीर कहते हैं कि जैसे ही हमने राग में अच्छा कहा, या द्वेष में बुरा कहा, वैसे ही कर्म हमारी आत्मा को बांध लेते हैं। राग द्वेष के जाल में फंसे हुये प्राणी वीतरागता को नहीं पहचान पाते। वीतरागता में आने वाला आंनद का अनुभव उन्हे नहीं होता।

भगवान के दर्शन प्रतिदिन करने का उद्देश्य यही है कि प्रभु राग द्वेष के जाल से निकली (मुक्त) आत्मा हैं और हम राग द्वेष के जाल में फंसी आत्मा है। इस बात का ज्ञान होते ही, दर्शन का फल प्राप्त होना प्रारंभ हो जाता है कि जैसे प्रभु जाल से निकले हैं वैसे ही हमें निकलना है।

मैंने प्रत्यक्ष आंखो से देखा था, कि सोनागिर में एक घर के आंगन में पिंजरे में एक तोता बंद था। पेड़ पर बैठे सारे तोते पिंजरे के आस पास बैठकर आवाज लगा रहे थे। तो पिंजरे के अंदर वाला तोता, छटपटा रहा था, जोर-जोर से चिल्ला रहा था। बाहर वाले तोते जब नहीं थे तब पिंजरे वाला तोता शांति से बैठा था, पर साथियों को देख कर उसे भी मुक्त होने की भावना हुई। ऐसे ही मंदिर में भगवान के दर्शन से वहीं छटपटाहट हमारे अंदर भी होनी चाहिये। यही प्रभु के दर्शन का प्रभाव है। ऐसी भावना ही सम्यग्दर्शन पैदा करती है।

राग और द्वेष दोनो साथ-साथ चलते हैं। एक होगा तो दूसरा अवश्य होगा। यदि एक रंग अच्छा लगता है तो दूसरा खराब लगेगा। भोजन में राग द्वेष के अत्यधिक परिणाम होते हैं। भोजन का राग द्वेष कभी-कभी झगड़ा भी

करवा देता है। वर्तमान में बच्चों के भोजन को लेकर मातायें बहुत परेशान रहती हैं। बच्चे जिद करते ये अच्छा नहीं है, वो खराब है, मेरे लिये ये बनाओ, वो बनाओ। आगे जाकर भविष्य में इसके परिणाम गलत ही जायेंगे। वस्त्रों को लेकर भी वर्तमान में लोग अत्यधिक राग द्वेष के घेरे में आ गये हैं। फैशन सब लोग कर तो लेते हैं पर इन सब कार्यों से मन की अस्थिरता बढ़ जाती है। अधिक इच्छा पूर्ति में क्लेश शुरू हो जाता है जो चिंता का कारण बन जाता है। अधिक चिंता से डिप्रेशन और अनेक बीमारियाँ हो जाती है। तब जीवन बेकार लगने लगता है।

इसीलिये संसार में दिन भर अच्छा बुरा करने की प्रवृत्ति ही हमारे कष्ट, दुख, संकट बीमारी बढ़ाने का कारण है। भगवान के सामने कोई चांदी का नारियल चढ़ाये तो वे खुश नहीं होते और कंट्रोल के चावल चढ़ाये तो नाराज नहीं होते हैं। इसी प्रवृत्ति को सप्ताह में एक दिन अपने ऊपर भी लागू करके देखें। अथवा दिन में एक घंटा नियम लेलें कि हम ना किसी को अच्छा कहेगें, ना बुरा कहेगें जीवन में परिवर्तन की संभावनायें प्रारंभ हो जायेगी, सुख शांति आपके सामने हाथ जोड़कर खड़ी हो जायेंगी। स्वयं को भगवान बनने के रास्ते खुल जायेंगे। परिवार वाले मोहल्ले वाले सब खुश हो जायेंगे।

एक गांव में एक विद्वान रहता था। उस व्यक्ति के पास एक घोड़ा था। एक दिन वह घोड़ा कही चला गया। गांव के लोग इकट्ठे हुये और विद्वान के आगे शोक प्रगट किया कि आपका घोड़ा भाग गया, बहुत बुरा हुआ। विद्वान ने कहा कि ये कहो कि घोड़ा भाग गया, ये मत कहो कि बुरा हुआ। कुछ दिनों के बाद वो घोड़ा जंगल से दस और घोड़ो को साथ वापस ले आया। गांव वाले खुश हो गये और विद्वान से जाकर बोले। आपका घोड़ा दस घोड़ो को और ले आया बहुत अच्छा हुआ। विद्वान फिर बोले, ये कहो कि घोड़ा दस घोड़े ले आया, ये मत कहो कि अच्छा हुआ।

कुछ दिनो के बाद विद्वान का लड़का घोड़े पर जा रहा था। घोड़ा चंचल था उसने लड़के को गिरा दिया। फिर लोगो ने कहा, कि घोड़ा अच्छा नहीं है। लड़के को गिरा दिया, उसकी टाँग टूट गई। बहुत बुरा हुआ। विद्वान फिर बोला ये कहो टाँग टूट गई। ये मत बोलो बुरा हुआ। कुछ दिनो के बाद, पड़ोसी राज्य ने राज्य पर चढ़ाई कर दी। गाँव के सारे लड़के युद्ध में गये पर

विद्वान का लड़का नहीं गया क्योंकि उसकी टाँग टूट गयी थी। फिर लोगों ने कहा ये तो अच्छा हुआ कि टाँग टूट गई, वरना युद्ध में जाना पड़ता विद्वान ने फिर कहा कि आपसे मै बार-बार कह रहा हूँ कि आप ये ना कहे कि अच्छा हुआ या बुरा, जो स्थिति है बस वही कहें इससे अधिक वोलने की आवश्यकता नहीं है। लड़का युद्ध में नहीं गया ये कहे, ये ना कहे कि अच्छा हुआ।

कहानी शिक्षा दे रही है कि अच्छा होना और बुरा होना हमारे हाथ में नहीं है। हम केवल पुरुषार्थ करे, कार्य करें, अपनी मेहनत में कमी ना करें, बाकी अच्छा बुरा भाव मन से निकाले, तो हम अनंत कर्मों के बंध से बच जायेंगे। अनादि काल से इसी राग द्वेष के कारण हम संसार में भ्रमण कर रहे हैं। हमारे बाल कब सफेद होंगे, हमारे हाथ में नहीं है, हम कब बीमार होंगे और कब स्वस्थ होंगे हमारे हाथ में नहीं है। हम कुछ सोचते हैं और कुछ बोलते हैं अर्थात ये भी हमारे हाथ में नहीं है। जन्म मृत्यु जय पराजय कुछ भी हमारे हाथ में नहीं हैं फिर इसी टेन्शन में सारा संसार दुख के भार को बढ़ाता चला जा रहा है। अच्छा बुरा संसार में नहीं हमारी उपयोगिता पर निर्भर करता है। गर्मी में स्वेटर खराब लगती है, सर्दी में वही स्वेटर अच्छी लगती है। स्वेटर ना खराब है ना अच्छी है हमारी उपयोगिता और हमारी दृष्टि से हम वस्तु या व्यक्ति का मूल्यांकन करते हैं। अतः थोडा सा इससे हटकर जिये तो आनंद आयेगा।

बड़ा ही महत्व है

संसार में जोड़े का,
गहनो में तोडे का,
कहानी में घोड़े का,
बड़ा ही महत्व है।

पत्तल में दोने का
मुक्ति के होने का
अच्छा बुरा सोचकर बोलने का
बड़ा ही महत्व है।

गांवों में अंता का,
चुटकुलों में संता का,
छोड़ने में चिंता का,
बड़ा ही महत्व है।

तिलक की निशानी का
गर्मी में पानी का
समझने में कहानी का
बड़ा ही महत्व है।

18

परिवार ने क्या नहीं दिया आपको?

परिवार में इंसान का जन्म होता है, परिवार वालों की सेवा, लाड़-प्यार, देखरेख माता की छांव में इंसान का बचपन बीतता है। इंसान की शिक्षा भी परिवार की देन है, जो हमारे भविष्य की चिंता करते हुये हमें स्कूल भेजते हैं। हमारे लिये स्कूल का चयन करते हैं, स्कूल के बैग किताबें तैयार करते हैं स्कूल छोड़ने जाते हैं, लेने जाते हैं या फिर बस की व्यवस्था करते हैं। पसंद का भोजन भी टिफिन में बना-बना कर रखते हैं। स्कूल में भेजने के बाद लौटने का इंतजार करते हैं। सुबह से शाम तक भोजन की व्यवस्था समय-समय पर करते हैं, खेलने के लिये खिलौने लाकर देते हैं।

हाथों का झूला झुलाते हैं, तुम्हे मुस्कुराना भी उन्होंने सिखाया, तुम्हे बोलना उन्होने सिखाया, ढंग से खाना उन्होने सिखाया, कपड़े पहनना उन्होनें सिखाया, चलना उन्होने सिखाया, हमारे नखरे उन्होने सहन किये, हमारी जिद को उन्होने पूरा किया। बचपन में हमने गुस्से में उन्हें नोंचा बाल खीचे गाल खींचे, उन्हे कष्ट हुआ किन्तु उन्होने यह भी सहन किया। बचपन में लाते मारी, परिवार ने वह भी प्यार समझा। जब बीमार हो जाते थे तब भी चिंता करके डाक्टर के यहां ले जाते थे, तब दवाई भी समय-समय पर ध्यान से देते हैं। हमारे रोने पर रात-रात भर जागते रहे। हमें गोदी मे लेकर बाहर घुमाते थे। अपनी रातो की नींद खराब होने के बाद भी कभी गुस्सा नहीं करते थे।

जब बच्चों के साथ कभी खेलने जाते थे बच्चों के साथ झगड़ा हो जाता, कभी पिट जाते कभी पीट आते। शिकायते घर पर आती तब सबकी शिकायत सुनकर भी हमें वे प्यार से ही डाँटते थे। ना जाने कितनो से झगड़ा लड़ाई की किन्तु मुझे सदा दुलारा। घर में अच्छी वस्तु बनने पर स्वयं ना खाती किन्तु अपने बच्चों के लिये मां छिपाकर रख लेती थी। कितना प्यार दिया परिवार ने। इतना प्यार नहीं मिलता तो ये जिन्दगी कितनी अधूरी रह जाती। कितनी

सूनी रह जाती। परिवार का कोई सदस्य बाहर जाता तो हमारे लिये कुछ ना कुछ खरीद कर जरूर लाते। कभी-कभी हमें भी घुमाने के लिये ले जाते। घूमते समय वे और जगह से ज्यादा हमारा ध्यान रखते। कितना प्यार दिया परिवार ने। हमारे जीवन रूपी मकान की हर ईट पर परिवार वालो का सहयोग लिखा हुआ है। उनके सहयोग के बिना हमारा जीवन तैयार हो ही नहीं सकता था। परिवार के सहयोग के बिना अच्छा जीवन असंभव है। बच्चा यदि स्कूल में निश्चिंत बैठा है तो परिवार के कारण आराम से नीद भी परिवार के कारण आती है। वरना नींद भी न आये।

परिवार इंसान के जीवन का एक सुरक्षा कवच है। परिवार का कवच मजबूत और वज्र का है जिसे कोई दुनिया की शक्ति तोड़ नहीं पाती है। इसी कवच के सहारे आज इतने लोग अपना जीवन अच्छी तरह से व्यतीत कर रहे हैं। भारत के लोग रहते अमेरिका या विदेश में हैं पर मानसिक रूप से सब इसी कवच के अंदर हैं।

जब-जब इंसान खुश होता है तो अपनी खुशियाँ परिवार के साथ बांटता है, और जब हताश होता है, निराश होता है, दुखी होता है तो तब भी परिवार ही हमारा सहारा बनता है। हमें समझाता है, पुनः आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है, साहस और शक्ति देता है। जब बच्चा स्कूल अच्छे नंबर से पास होता है, तो परिवार मिठाइयां बांटता है, और किसी वजह से असफल हो जाये तो प्रेरणा करता है। हम अकेले न खुशी सहन कर सकते हैं न गम। दीवाली हो या होली, शादी हो या जन्म मरण, सभी कार्यों में परिवार की प्रमुखता आवश्यक है। शादी में लड़का लड़की के साथ उनका परिवार भी देखा जाता है। कई बार तो शादी परिवार को देखकर ही हो जाती है। गुण कम होने पर परिवार के गुण सहयोग कर देते हैं। किसी से झगड़ा होने पर कई बार व्यक्ति चुप हो जाता है कि यह व्यक्ति उस परिवार का है, कुछ मत बोलो।

परिवार के बीच रहकर ही मानव का जीवन आगे बढ़ता है, चाहे वह राजा-महाराजा हो या साधु संत, तीर्थंकर हो या भगवान सभी पहले परिवार में ही जन्म लेते हैं। परिवार ही पालन पोषण करता है। पश्चात धर्म पुरूषार्थ से मोक्ष की सिद्धि करते हैं। पुण्य अपना अपना है कि तीर्थंकर की सेवा करने स्वर्ग के देवता आते हैं। सामान्य हो या विशेष आत्मा उन सभी का रास्ता परिवार से हो कर ही गुजरता है। परिवार ने सभी को बहुत कुछ दिया, पर

परिवार को उसने क्या दिया पता नहीं। या आप स्वयं सोचे कि परिवार को हमने दुख ज्यादा दिया या सुख। धन्यवाद ज्यादा दिया या शिकायत ज्यादा की। परिवार के लिये थोड़ा चिन्तन आवश्यक है, वरना हम परिवार के लिये शिकायत ही करते रहेगें। यदि चिन्तन सकारात्मक रहा तो उत्तर यही आयेगा कि देना चाहिये था धन्यवाद और करते रहे शिकायत। थोड़े सुधार की आवश्यकता है।

आपके मन में आ रहा होगा कि परिवार का नाम ले रहे हैं माता पिता का नाम नहीं लिया। मां पिता के विषय में दुनियाँ पहचान करा चुकी। अब परिवार के विषय में बताना आवश्यक है। परिवार का मतलव माता-पिता, भाई-बहन, चाचा-चाची, ताई-ताऊ, बुआ-फूफा और दादा-दादी, नाना-नानी, मामा-मामी, मौसा-मौसी है। माता पिता तो अपने बच्चों की चिन्ता करते ही हैं लेकिन परिवार के अन्य सदस्यों की भूमिका भी कम नहीं है। हमें हर पग-पग पर सबका सहयोग ही मजबूत बनाता है। बच्चो की जब छुट्टियां होती है तो बच्चो को नाना-नानी, मामा-मामी, की याद आती है। बड़ा इंतजार रहता है बच्चो को मामा-मामी, बुआ, मौसी के यहां जाने का। संपूर्ण जीवन का विकास सबके बीच होता है। माता पिता का हाथ तो सिर पर होता ही है किन्तु रिश्तेदार, पड़ौसी, मित्रगण मोहल्ला वालो का सहयोग पूरा रहता है। बाहर वालों से भी हम बुहत कुछ सीखते हैं।

इतना सारा वर्णन करने का अभिप्राय केवल इतना है हम सब की चिन्तन धारा इस तरफ भी बहे कि परिवार का हमारे ऊपर बहुत उपकार है। जरा सी बात यदि कह दें तो हम तुरन्त क्रोधित हो जाते हैं। पलट कर कड़वे शब्दों की बौछार कर देते हैं। कितना प्यार दिया उन्होने हमें, भूल जाते हैं, हम सारी बातों को। प्यार उड़ेलने वालो के गुस्से में भी प्यार होता है, उस क्षण इस बात को भूल जाते हैं। हमारे लिये उन्होने कितना समय दिया, रोम-रोम से प्यार किया। हर सुख दुख में उन्होने आपके लिये दुआ मांगी। आपके टिफिन नही ले जाने पर, उनसे भी भोजन ना किया गया। इतना प्यार करने वालो का दिल कैसे तोड़ देते हैं। तुम जिसे चाहते हो उससे अपेक्षा रखते हो वो तुम्हे समझे। किन्तु तुम्हे जिसने चाहा, क्या? तुमने कभी उसे समझने की कोशिश की? चाहे माता पिता हो या भाई बहन दादा-दादी कोई भी हो। कुछ लोग तो अपने भाई बहन का दिल तोड़ कर ऐसा कह देते हैं कि तुम्हारा मेरा अब प्यार का नहीं नफरत का रिश्ता है।

इतनी कठोरता कैसे आती है, अपनों के प्रति अपनो से ईर्ष्या कैसे हो सकती है। थोड़ा इन सब बातो पर विचार करें, तो अवश्य ही हमें अपनी गलती का अहसास होगा। बच्चों के बात ना मानने पर माता पिता को जितना कष्ट होता है उन्हे पता तब चलेगा, जब स्वयं माता पिता बनते हैं। यदि उससे पहले समझ में आ जाये तो यह धरती स्वर्ग बन जाये। घर के सदस्यो में देवी देवताओं के दर्शन होने लगें। और परमात्मा की भक्ति के गीत घर-घर में गूंजने लगेंगे। अतः परिवार से अलग जीवन की संभावना ठीक नहीं है, सबके बीच में रह कर एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना से जीवन जिये।

बड़ा ही महत्व है

सप्ताह में वार का
रिश्तों में व्यवहार का
जीवन में परिवार का
बड़ा ही महत्व है।

बरसात में छाता का
बैंक में खाता का
बच्चों की माता का
बड़ा ही महत्व है।

प्रेम में वादा का
कपड़ों में सादा का
घर में दादा का
बड़ा ही महत्व है।

पहाड़ों पर वादी का
कपड़ों में खादी का
घर में दादी का
बड़ा ही महत्व है।

भारत के रहन सहन का
कर्मों के हनन का
भाई के लिये बहन का
बड़ा ही महत्व है।

नाश्ते में लाई का
मसालों में राई का
बहन के लिये भाई का
बड़ा ही महत्व है।

मकान के पता का
वृक्षों में लता का
बच्चो के पिता का
बड़ा ही महत्व है।

शहरो में काशी का
रत्नो की राशि का
रिश्तो में मौसी का
बड़ा ही महत्व है।

करने में आशा का
मंदिर के दासा का
रिश्तो में मौसा का
बड़ा ही महत्व है।

अनाज में दाना का
दुकानों में किराना का
रिश्तो में नाना का
बड़ा ही महत्व है।

सुनने में कहानी का
मेंहनत करने में जवानी का
रिश्तो में नानी का
बड़ा ही महत्व है।

पहनने में पजामा का
दान करने में मामा का
रिश्तों में माता का
बड़ा ही महत्व है।

बरसात में नमी का
रहने के लिये जमीं का
रिश्तों में मामी का
बड़ा ही महत्व है।

पक्षियों में सुआ का
पानी में कुआं का
रिश्तों में बुआ का
बड़ा ही महत्व है।

व्यापार में नफा का
राजस्थान में साफा का
रिश्तो में फूफा का
बड़ा ही महत्व है।

घर में बच्चा का
आम में कच्चा का
रिश्तों में चाचा का
बड़ा ही महत्व है।

फलो में लीची का
चिड़िया में चीची का
रिश्तों में चाची का
बड़ा ही महत्व है।

सुख में चरम का,
कर्म भूमि में करम का,
परिवार के साथ करने में धर्म का
बड़ा ही महत्व है।

19

ऐसे थे हमारे गुरुदेव... गुरुवर सन्मति सागर

वे ऐसे बैठे कि जहान बन गये।
वे ऐसे उठे कि आसमान बन गये।।
हम उनके बीच रहकर इंसान न बन पाये,
वे हमारे बीच रहकर भगवान बन गये।।

परम श्रद्धेय, प्रातः स्मरणीय, सामाजिक चेतना के संवाहक, रचनात्मक कार्य के स्तंभ, सरस्वती के पुत्र, जिनवाणी के उपासक, अध्यात्म की गहराई से आनंद के मोती लाने वाले, प्रवचन सम्राट, ओजस्वी वक्ता, भक्तों के कर्णधार, वातसल्य के सागर, ज्ञान के हिमालय, सरल हृदयी, सिद्धि धारी, अतिशय ज्ञानी, प्रभावना मर्मज्ञ, चिन्ता निवारक, निमित्ति ज्ञानी, आत्म ध्यानी, शांति प्रदाता, मोहनी मूरत, करुणा के सागर, दया निधान, काव्य रत्नाकर, साहित्य सृजेता, अर्हत भक्त, त्रिलोकतीर्थ प्रेणेता, कवि सृजन कर्त्ता, निश्छल योगी, शिष्यों के गुरु, सिंहरथ प्रवर्तक पंचम पट्टाचार्य परम पूज्य 108 आचार्य विद्याभूषण सन्मतिसागर जी महाराज के बारे में करोड़ो पन्ने और हजारो डायरी लिखी जाये तो गुरुवर के गुणगान करने में कम पड़ जायेगी। ऐसे थे हमारे गुरुवरं जिनका नाम लेते ही मन श्रद्धा से भर जाता है। तन का रोम-रोम जिन्हे याद करता है। जिनका स्मरण आते ही आँखों में भक्ति का जल छलक आता है ऐसे थे हमारे गुरुवर। जिनके द्वारा लिखित विधान को करने से भक्ति करने में मन एकाग्र हो जाता है, ऐसी थी गुरुदेव की लेखनी। गुरुदेव जब सहज सरल और लालित्य पूर्ण शैली में जब धर्म के गूढ़ से गूढ रहस्य को समझाते थे तो श्रोता गण झूम उठते थे आनंद से उनके नेत्र अश्रु पूरित हो जाते थे, ऐसी थी गुरुदेव की अमृत वाणी।

जब कोई दुख से पीड़ित, उदास, निराश, भक्त गुरुदेव के चरणों में आता था तो उनकी मुस्कुराहट देख कर संसार के सारे दुख भूल कर मुस्कुराने लगता था उसे ऐसा लगता जैसे गुरुदेव की मुस्कुराहट में सारे संसार की खुशियां

मिल गई हों, ऐसी थी गुरुदेव की मुस्कुराहट। जब कोई पति-पत्नि आपस में तनातनी करके गुरुदेव के चरणों में आते थे तो वे गुरुदेव के वचनों को सुनकर, एक दूसरे को देखकर मुस्कुराने लगते थे, और प्रसन्न होकर जाते। ऐसी सुन्दर सलाह थी गुरुदेव की कि सास बहू भी आपस में अच्छे से रहना प्रारंभ कर देती थी। परिवार के लिये ऐसा था गुरु का आशीर्वाद पंजाबी, सरदार कोई भी आये गुरुदेव की तपस्या और वाणी से प्रभावित होकर वह भी गुरु भक्त बन जाता था और वह बारम्बार गुरुदेव के चरणों में आता था। ऐसा आकर्षण था हमारे गुरुदेव में।

छोटा सा भक्त भी जरा सा अच्छा कार्य करे तो गुरुदेव इतनी प्रशंसा करते थे कि शायद किसी ने ना की होगी और वह अच्छे मार्ग पर चल पड़ता था, अच्छे मार्ग में लगाने की ये सुन्दर कला मैंने गुरुदेव में ही देखी थी, ऐसे गुणग्राही दृष्टि वाले थे हमारे गुरुदेव। एक समय भी जो व्यर्थ नहीं गँवाते थे और हर पल का सदुपयोग स्वपर कल्याण में करते थे, ऐसे समय की कीमत जानने वाले थे, हमारे गुरुदेव।

और सबसे अच्छी बात तो यह है कि कोई कितनी भी गल्ती करे मगर वे गुस्सा करके नहीं बल्कि प्यार से समझाते थे इतने हृदय के कोमल थे हमारे गुरुदेव इतने बड़े-बड़े कार्य किये हैं कि आज तक ना किसी ने किया था और ना ही कोई कर पायेगा। ऐसा सिंह रथ चलवाया था गुरु देव ने एवं अनेको ऐसे कार्य गुरुदेव ने किये फिर भी उनके चेहरे पर कभी अभिमान की लकीर नहीं देखी और वाणी से कभी ऐसी बात नहीं कही कि जिससे अभिमान झलकता हो ऐसे मार्दव धर्म स्वभावी थे हमारे गुरु देव।

संस्मरण

सिवनी चातुर्मास में एक दिन मैं जब घर में थी, गुरुदेव के चरणों में बैठी थी। गुरुदेव ने मुझसे प्रश्न पूछा, संगीता बताओ दस दिन बाद जो जुलूस निकलेगा उस समय मौसम कैसा होगा। मैं ज्ञान विज्ञान दोनों से अंजान थी, मैंने उत्तर दिया गुरुदेव मैं तो कुछ भी नहीं जानती, कृपया आप ही समाधान दें तब उन्होने बताया कि, जब यहाँ से चलेंगे तो एक कि. मी. धूप रहेगी, फिर थोड़ि हवा चलेगी और घटा छा जायेगी, और तीसरे कि. मी. पर हल्की सी बूँदा बांदी होगी और जुलूस गन्तव्य स्थान पर पहुँच जायेगा और सानंद होगा।

वो दिन वो घड़ी आई मैं भी इंतजार में थी कि गुरुदेव ने कहा है कैसा होगा, क्योंकि जीवन का पहला अवसर था जो ऐसी भविष्य वाणी सुनी थी। मौसम विभाग की भी सूचनाये गलत हो जाती हैं। अतः जूलूस प्रारंभ हुआ और जैसा-जैसा गुरुदेव ने कहा ठीक वही धूप बादल, हल्की फुहार और कार्यक्रमं यह बात 1992 की है मैं आज तक गुरुदेव की बात भूली नहीं हूँ। और उनकी तपस्या से प्राप्त शक्ति को देख आज भी आश्चर्य चकित हूँ।

गुरु जी ने ही सिखाया कि समता भाव में रहना सामायिक है। उस समय ना राग होता है ना द्वेष। आत्मचिंतन मनन के साथ अंतर्मुखी दृष्टि होती है। एक दिन गुरुदेव के चरणों में बैठे थे तब उन्होने सामायिक कैसे करना और सामायिक में क्या करना ये भी सिखाया। सामायिक के समय अक्सर गुरुदेव के वे वचन याद आ जाते हैं, उस सामायिक में चिंतन मनन की गहराई में डूबने का और अधिक प्रयास करते हैं।

गुरुदेव ने जाप करने की भी प्रेरणा दी अधिक से अधिक जाप ध्यान पूर्वक करनी चाहिये।

हाथ मेरे पास थे, गुरु ने लिखना सिखाया,
पैर मेरे पास थे, गुरु ने चलना सिखाया।
आंखे मेरे पास थी, गुरु ने देखना सिखाया,
मुख मेरे पास था, गुरु ने बोलना सिखाया।।

और

जीवन मेरे पास था, गुरु ने जीना सिखाया

आ. 105 स्वस्ति भूषण

बड़ा ही महत्व है

पानी में गागर का
जल में आकार का
आचार्यों में सन्मति सागर का
बड़ा ही महत्व है।

फलो में सेव का
स्वर्ग में देव का
हम सबके गुरु देव का
बड़ा ही महत्व है।

कलम में दवात का
भोजन में स्वाद का
गुरु जी के आशीर्वाद का
बड़ा ही महत्व है।

त्रिलोक के शीर्ष का
होने में हर्ष का
बड़े गांव के त्रिलोक तीर्थ का
बड़ा ही महत्व है।

चलने के लिये पथ का
राजस्थान में कथ का
चलाने में सिंहरथ का
बड़ा ही महत्व है।

धर्म के प्रभाव का
नदी में बहाव का
आ. श्री के सरल स्वभाव का
बड़ा ही महत्व है।

भोजन के चखने का
पांव में टखने का
गुरु जी के साहित्य लिखने का
बड़ा ही महत्व है।

बोलने में वचन का
प्रभु को नमन का
गुरु जी के प्रवचन का
बड़ा ही महत्व है।

20

ज्ञान-ज्ञान-ज्ञान ज्ञान के आलय - ज्ञान सागर

परम श्रद्धेय समाधि सम्राट आचार्य 108 सुमति सागर के परम प्रभावक शिष्य एवं परम पूज्य सिंहरथ प्रवर्तक 108 आचार्य सन्मति सागर के पट्टाचार्य, परम पूज्य प्रातः स्मरणीय, सराकोद्धारक आचार्य 108 श्री ज्ञान सागर जी महाराज की महिमा शब्दो में कहना अत्यंत कठिन है।

जैसे ज्ञान शब्द बहुत छोटा सा है किन्तु इसकी गहराई और ऊँचाई को नापना कठिन है वैसे ही आचार्य श्री ज्ञान सागर जी की गहराई और ऊँचाई को नापना कठिन है। ज्ञान शब्द में अनंत-अनंत संभावनाएँ तक बन सकती हैं, ठीक ऐसे ही यथा नाम तथा काम चरितार्थ करने वाले आचार्य श्री ज्ञान सागर जी महाराज का जीवन अद्‌भुत है। उन्होंने ज्ञान रूपी बीज को वृक्ष बनाने वाला जीवन प्राप्त कर उसका पूर्ण लाभ लिया है। तथा संसार के अनंत प्राणियों के ऊपर आपके ज्ञान और आशीर्वाद का अमृत बरस रहा है जिससे प्राणी सुख शान्ति और समृद्धि को प्राप्त कर रहे हैं। सारे शिष्य और सारे भक्त मिलकर भी गुणगान करें तो भी पूरा नहीं हो सकता है।

ज्ञान के सिन्धु - आचार्य श्री ज्ञान के सिन्धु हैं जैसे सिन्धु में अथाह जल राशि होती है। सूरज अपनी किरणों से उस जल राशि को लेकर मेघ बनाता है और सारे संसार में जाकर जल राशि उन पर बरसाकर उन्हें तृप्त करता है ठीक ऐसे ही आचार्य श्री अपनी तपस्या की किरणों से ज्ञान के मेघ बनाकर भक्तों पर बरसाते हैं। जैसे मेघ बिना भेद भाव किये जल राशि सबको समान रूप से देता है, उसके लिये गरीब का खेत और अमीर का खेत बराबर होता है ऐसे आचार्य श्री के ज्ञान की बारिश सब भक्तों पर समान रूप से होती है।

ज्ञान की सरिता - जो सरल होता है वो तरल होता है जो तरल होता है वह बहता हुआ होता है, जो बहता हुआ होता है तो शुद्ध होता है आचार्य श्री सरिता

की भाँति सदा बिहार करते हैं। इससे उनका मन सरिता की भांति पवित्र होता है। जैसे सरिता जहाँ से बहती है वहाँ के लोग उसके पानी का उपयोग कर जीवन यापन करते हैं। ठीक ऐसे आचार्य श्री जहाँ से विहार करते हैं वहाँ के भक्त आपके ज्ञान वैयावृत्त आशीर्वाद का निमित्त पाकर अपने जीवन को सुख मय बनाते है। सरिता का पानी सदा शुद्ध माना जाता है। इसी लिये कहा है।

रमता जोगी बहता पानी, सदा शुद्ध होता है।

ज्ञान के हिमालय - आचार्य श्री के विचार हिमालय के समान ऊँचे हैं, जिसमें सारे संसार के कल्याण की कामना है, भविष्य को सुंदर बनाने की और सुरक्षित करने का ध्येय है। दूरगामी परिणाम उनके ज्ञान में स्वयमेव झलक जाता है। आचार्य श्री के विचारों को समझाना उतना ही कठिन है जितना हिमालय के शिखर पर चढ़ना। अतः यदि आचार्य श्री के ज्ञान को ज्ञान का हिमालय कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

ज्ञान वाटिका - वाटिका में बैठना वाटिका के फूलों को निहारना और उसकी खुशबू लेना सबको अच्छा लगता है पर उस वाटिका को बनाना और उसका संरक्षण करना उतना ही कठिन कार्य है, जो कि आचार्य श्री ने कर दिखाया हैं संसार के योग्य विद्धानो को एकत्रित किया, उन्हे संरक्षण दिया और उनके ज्ञान की खुशबू से सारी दुनिया को लाभ मिल रहा है। विद्धान रूपी फूलों को एक वाटिका में रखना कितना कठिन है लेकिन आपकी सहजता और सरलता से कठिन कार्य भी सरल हो जाते हैं।

कभी वकीलो की गोष्ठी, कभी डाक्टरों की गोष्ठी, कभी वेज्ञानिकों की गोष्ठी कभी टीचर्स की गोष्ठी, सभी कार्य आपकी सुंदर सोच और भक्तों की सेवा का परिणाम हैं योग्य और बुद्धिमान विद्यार्थियों को प्रोत्साहन के लिये पुरुस्कार वितरण का विशाल कार्य अद्धितीय हैं जिससे विद्यार्थी एक नई ऊर्जा को पाकर नये आयाम को स्थापित करने को तेयार हो जाते हैं।

इस वाटिका में जो एक बार आयेगा आनंद से जीवन भर जायेगा ओर जीवन संवर जायेगा।

ज्ञान धन - सारा संसार धन के पीछे पागल हैं जो कि केवल जीवन यापन का साधन हैं यही इकट्ठा और यही छोड़ कर जाना पड़ेगा। फिर भी नश्वर

धन से आत्मा का भाव, प्राण जैसा बन कर जुड़ा है। यदि वही प्राणी जब आचार्य श्री के चरणों में आयेगा तो शायद उसे ज्ञान होगा कि बाह्य धन के साथ ज्ञान भी धन होता है, जो इस जन्म में भी सुखी रखेगा और अगला भव भी सुधार देगा। इस धन के साथ टैक्स का चक्कर, चोरी का चक्कर, रखने का चक्कर उधारी का चक्कर है इतने सारे चक्करों के बीच ये धन इंसान को घन चक्कर बना देता है। आचार्य श्री के पास जो ज्ञान धन है वे जितना बाँटते हैं वो उससे चौगुना बढ़ जाता है। और बढता ही चला आता है। इसीलिये आचार्य श्री इस धन को बाँटने में कभ कुंजूसी नहीं करते। दिल खोलकर बाँटते हैं

सरस्वती भंडार की बड़ी अपूरव बात।
ज्यों-ज्यों खर्चे त्यों बढ़ें, बिन खर्चे घट जाता।।

ज्ञान सागर जी का संपूर्ण जीवन ज्ञान मय हो गया है और अपनी किरणों से प्राणियों के अज्ञान अंधकार को मिटाते हैं। स्वयं प्रकाशित होकर सारे संसार को प्रकाशित करते हैं। ज्ञान, ध्यान एवं साधना का लाभ आचार्य श्री को तो है ही सारे संसार को भी आशीर्वाद के माध्यम से लाभ मिल रहा हैं और मिलता रहेगा।

- आ. 105 स्वस्ति भूषण

बड़ा ही महत्व है

करने में ध्यान का
तलवार में म्यान का
आ. ज्ञान सागर जी के ज्ञान का
बड़ा ही महत्व है।

वन टू में थ्री का
मंत्रो में श्री का
भक्तो के लिये आ. श्री का
बड़ा ही महत्व है।

21

हीरे की कीमत जौहरी, जीवन की कीमत ज्ञानी समझता है

हम कितनी गलत फहमी में हैं, हम कितने भुलावे में हैं। हम सब कुछ जानते हैं फिर भी गल्तियां करते हैं। हम जान बूझ कर अज्ञानी बने हुये हैं। मोह रूपी मदिरा का प्रभाव ही ऐसा है कि हमें होश में नहीं आने देता। सारा संसार इसी के वशीभूत है। और संपूर्ण जीवन की शक्ति को संसार में ही खर्च करता है। वह जानता है कि ना कुछ साथ लेकर आया हूँ ना कुछ साथ लेकर जाऊँगा। हम फिर ना जाने किस-किस चीज के मालिक बने हुये हैं। यम दूत के आते ही सारी मालकियत एक क्षण में खतम हो जाती है।

जिस शरीर में हम रह रहे हैं, वह शरीर हमें माता पिता से मिला हैं शरीर काला होगा या गोरा, लंबा होगा या ठिगना, मोटा होगा या पतला ये भी हमारे हाथ में नहीं है। माता पिता हमारे कौन होंगे ये भी हमारे हाथ में नहीं हैं। हमारा जन्म कौन से देश के कौन से शहर या गांव में होगा ये भी हमारे हाथ में नहीं हैं किस दिन किस नक्षत्र में जन्म होगा और किसमें मृत्यु होगी यह भी हमारे हाथ में नहीं हैं यह सब जानते हुये भी हम निश्चिंत हो संसार के मालिक बने हुये हैं।

जिसके बिना हम नहीं जी सकते, ऐसी प्राणवायु हमें प्रकृति से प्राप्त होती है। जिसके मालिक हम नहीं हैं दूसरी वस्तु है जल, जो कि जीवन का आधार है। वह भी हमें इसी प्रकृति से मिलता है। सुवह सोकर उठकर और रात्रि को सोते-सोते तक हम जल उपयोग करते हैं। जल ना हो तो शरीर में इतनी गंदगी इकट्ठी हो जाये कि इसमें आत्मा रहना मुश्किल हो जाये। हर पल जल की हमें आवश्यकता होती है।

तीसरा जीवन का आधार है भोजन। सागर धर्मामृत में भी लिखा है'' देह चन्नादि कीटकम्'' यह देह अन्न का कीड़ा है। बिना इसके जीवन असंभव है। उत्तराखंड की घटना में कई लोग भूख के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गये। ऐसा

भोजन भी हमें इसी प्रकृति से प्राप्त होता है। अन्न, फल, सब्जी, खाने की समस्त वस्तुयें। हमारा काम भूमि में बीज डालने का होता है। बाकी काम तो प्रकृति करती है। हम बीज से बीज बनाने के सहयोगी हैं मालिक नहीं प्रकृति हर चीज का बीज उसके साथ ही देती है। हर फल सब्जी अपने बीज अपने साथ ही लाते हैं। शरीर बीमार होता है तो दवाई भी हमें इसी प्रकृति से प्राप्त होती है।

संसार के समस्त कार्य करने के लिये हमें उजाले की आवश्यकता है जो कि सूरज हमें प्रतिदिन उजाला देता है। तुम अपनी आंख खोलो न खोलो वो तो अपना काम करता ही करता है। चार दिन सूरज ना निकले तो लोग परेशान हो जाते हैं। विश्राम के लिये रात्रि होती है, चांद की किरणा हमें शीतलता देती हैं।

यदि रेत सीमेंट मिट्टी ना हो तो हम मकान नहीं बना सकते, लकड़ी ना हो तो बढ़इ दरवाजे आदि नहीं बना सकता। मिट्टी ना हो तो कुम्हार बर्तन आदि नहीं बना सकता है। मसाला घी तेल ना हो भोजन कैसे बनेगा। लोग कहते हैं मकान मैंने बनाया, कुम्हार कहता है घड़ा मैंने बनाया महिलायें कहती है भोजन मैंने बनाया। सत्य यह है कि मैंने केवल सहयोग किया है बनाया नहीं है हम सहयोगी हैं कर्त्ता नहीं हैं।

सारी प्रकृति हम पर कितना उपकार कर रही है। किसी ने कहा है वृक्ष ना खाये कभी अपने फल, नदी पिये ना कभी अपना जल। सब कुछ हमे ही मिल रहा है। किन्तु हम किसी का कभी उपकार मानते ही नहीं हैं कि हमारे जीवन में सहयोगी प्रकृति, परिवार, समाज, देश और विश्व हैं। मन में सभी के प्रति कृतज्ञता के भाव होने चाहिये जिससे हमें अभिमान नहीं आता है और हम संसार की सत्यता का ज्ञान प्राप्त कर जाते हैं।

गीत उसी का है जो गाना जानता है।
साज उसी का है जो बजाना जानता है।।
परमात्मा उसी का है जो पाना जानता है।
जीवन उसी का है जो जीना जानता है।।

जीवन सबको मिला है पर सब जीवन को जीना नहीं जानते हैं। धन सबको मिला है पर सब उसका उपयोग करना नहीं जानते हैं। प्रकृति हम पर खुशियां

बरसा रही है हम लूट लें। जीवन में आनंद मिल रहा है ले-लें। और इस जीवन से आनंद की प्राप्ति कर लें संसार की मालकियत के चक्कर में पड़कर जीवन की खुशियों को नष्ट ना करें। प्रकृति के उपकार को मानने की आदत डालें।

शरीर की सेवा तो प्रकृति कर देती है पर आत्मा की सेवा हमें स्वयं करनी पड़ती है। ये पर्याय जीवन यापन के साथ आत्म कल्याण के लिये मिली है। बिना खुशबू के फूल बेकार है, और बिना आत्म कल्याण किये ये जीवन बेकार है। बिना धर्म की खुशबू के जीवन कागज का फूल है। शरीर के लिये जितना जरूरी सांस लेना है भोजन लेना है। आत्मा हीरा है, ज्ञानी बनकर रत्न को पहचानो और इसे संसार से संभाल कर रखो।

22

पाप पुण्य बन जाता है और पुण्य पाप

शीर्षक पढ़कर अवश्य ही कुछ शंका हो रही हो किन्तु मत कीजिये। कर्म सिद्धांत को समझने की कोशिश कीजिये। भगवान महावीर ने आठ कर्म की 148 प्रकृतियों को संपूर्ण विस्तार से कर्म काण्ड में वर्णन किया है। इस शास्त्र के लेखक है सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य नेमिचंद्र स्वामी। कैसे बनता है पाप पुण्य और पुण्य पाप।

जब जीव विशुद्ध परिणामों से अंतर के आत्मिक भावों से प्रभु की पूजा करता हे, वंदना करता है, जाप करता है, स्वाध्याय करता है, दान करता है, संयम पालन करता है, गुरु भक्ति करता है, तपस्या करता है उस समय उदय में आने वाला असाता कर्म साता रूप होकर फल देता है, पूर्व संचित कर्म की सत्ता में भी परिवर्तन आता है। जब जीव अशुभ कर्म को छोड़ कर शुभ कर्म में प्रवृत्त होता है तब उसके अशुभ कर्म उससे दूर भागना प्रारंभ कर देते हैं।

बचपन के दो मित्र जब बड़े हुये तो दोनों का रास्ता अलग-अलग हो गया। एक व्यसनो में फँस गया और दूसरा धर्म साधना में लग गया। अचानक दोनों रास्ते में जाते हुये मिले। चलते-चलते चर्चा कर रहे थे व्यसनी मित्र धर्मात्मा मित्र को समझा रहा था कि धर्म कुछ नहीं होना, फालतू पूजा पाठ उपवास करके भूखा मरने से कोई फायदा नहीं है धर्मात्मा मित्र अपने तर्कों से उसे व्यसन छोड़ने की प्रेरणा कर रहा था। तभी मंदिर जाने वाले मित्र को कांटा लगा और जुआं खेलने जा रहे मित्र को सोने के सिक्को से भरी थैली मिली। व्यसनी मित्र को कहने का मौका मिल गया उसने उसे समझाया कि देखा मैं जुआं खेलने जा रहा हूँ और मुझे सिक्को से भरी थैली मिली, तू पूजा करने जा रहा है तुझे कांटा चुभा, कुछ नहीं होता धर्म-वर्म, चल मेरे साथ और जिन्दगी का आनंद ले। लेकिन धर्मात्मा

मित्र सम्यक्दृष्टि था उसने कहा नहीं भाई इसके पीछे कोई रहस्य है। उसे जानना होगा।

आगे एक मुनिराज के दर्शन हुये, दोनो उनके चरणों में बैठ गये। अपनी जिज्ञासा को उनके समक्ष रखा। मुनिराज अवधिज्ञानी थे उन्होने अपने ज्ञान से उनका पूर्व भव देखा और बताया कि जो जुआँ खेलने जा रहा है उसका इस समय इतना पुण्य उदय आया था कि आपको राज्य की प्राप्ती होने वाली थी किन्तु आप पाप कार्य करने जा रहे थे इसीलिये पुण्य कर्म पाप रूप में परिवर्तित हुआ। वह राज्य के बदले सोने के सिक्कों की थैली में रह गया। दूसरे धर्मात्मा मित्र ने पूर्व जन्म में कोई ऐसा पाप किया था जिसके बदले में उसे शूली मिलने वाली थी किन्तु भावों में विशुद्धि पूजा के लिये जाने के भाव के कारण पाप के अणु पुण्य रूप परिवर्तित हुऐ और शूली शूल में परिवर्तित हो गई।

इस कहानी को अपने ऊपर लागू करके देखिये। जब आपका कोई काम नहीं होता है तो आप चिंता (टेंशन) करना शुरु कर देते हैं। जितनी टेंशन बढ़ती है मंजिल उतनी ही दूर चली जाती है। कारण! कारण यह है कि चिंता से अशुभ कर्म का बंध होता है और अशुभ का फल पाप है और पाप हमारे कार्यों में बाधा डालता है। चिंता भी इतनी जोरदार होती है कि रात में नींद नहीं आती, दिन में भोजन अच्छा नहीं लगता, मंदिर में पूजा माला में मन नहीं लगता चौबीस घंटे वही बात दिमाग में गूंजती है। प्रसन्नता हृदय मन और चेहरे से चली जाती है। उस समय आर्त्त ध्यान चल रहा है और आर्त्त ध्यान तिरचन्च गति का कारण है। अतः हमारी छोटी बाधा चिंता करने से बड़ी हो जाती है। आपका प्रश्न होगा कि क्या करें?

आप विश्वास ये रखे कि ''भाग्य से ज्यादा, समय से पहले किसी को न मिला है ना मिलेगा''। दूसरी आप प्रशस्त और प्रसन्न मन से कोई विधान करें, जाप करें गुरु का आशीर्वाद लें, कोई व्रत उपवास, रस त्याग करें, अभिषेक आदि करें। आपको इसमें सबसे सरल गुरु का आशीर्वाद लग रहा होगा, कुछ करना ना पड़ और काम हो जाऐ। याद रहे जब तक अपना पुण्य ना हो तब तक कुछ काम नहीं आता अतः आशीर्वाद के साथ अन्य कार्य भी अवश्य करें।

भगवान महावीर के उपदेश में हमारे जीवन को अच्छा बनाने के लिये बहुत सारी छोटी-छोटी बाते हैं। यदि हम उनकी आज्ञा का पालन करें तो हमारा जीवन अच्छा हो जायेगा।

बड़ा ही महत्व है

खाने में अन्न का
गणित में शून्य का
धर्म में पुण्य का
बड़ा ही महत्व है।

बोलने में अल्प का
वृक्षो में कल्प का
लेने में संकल्प का
बड़ा ही महत्व है

23

सुख चाहिये तो जैन धर्म अपनाईये

जैन धर्म की कहानी त्याग से प्रारंभ होती है। गृहस्थ आत्मानुशासन में रहने वाला ही त्याग की शक्ति को प्राप्त कर सकता है। जब तक मन वचन काया पर संयम नहीं होगा तो ये जीवन बैल, गाय घोड़े की तरह होगा, निरंकुश हाथी की तरह होगा, जो सवार को किसी भी गड्ढे में पटक देगा। ये मत सोचना कि त्याग करने पर घर गृहस्थी छूट जायेगी। बल्कि योग्यतानुसार जितना संभव है जिससे पापों से भी बचें और गृहस्थी भी पल जाये, उतना ही त्याग कराया जाता है। यदि गृहस्थ धर्म का पालन, अच्छी तरह से किया जाये तो, सामाजिक सम्मान, शरीर की स्वस्थ्यता, परिवार में शांति, उद्देश्य पूर्ण जीवन और अध्यात्मिक शक्तियों का जागरण ये सारे काम एक साथ हो जाते हैं। एक इंसान को अपने जीवन में इससे ज्यादा क्या चाहिये। भगवान महावीर ने गृहस्थ को प्रतिदिन छह कार्य करने को आवश्यक रूप से कहा है-

1. देवपूजा
2. गुरुउपासना
3. स्वाध्याय (शास्त्र पढ़ना)
4. संयम
5. तप
6. दान

आज जिसे देखो वह टेंशन में हैं। किसी को डिप्रेशन हो गया, किसी का ब्लड प्रेशर बढ़ रहा है तो किसी को शुगर हो गई। इन सबका कारण है कि भगवान ने जो छह कार्य कहे हैं उन्हें नहीं कर रहा है। यदि प्रतिदिन सुबह-सुबह भक्ति के साथ भगवान की पूजा करें, गुरु की सेवा करें, शास्त्रों को पढें, मन वचन काय पर और भोग उपभोग पर संयम रखें, थोड़ी-थोड़ी तपस्या करें, और अपनी कमाई दौलत से कुछ अंश दान करें तो बीमारी और चिंता 75% अपने आप भाग जायेगी। संयम की शक्ति से मन शांत रहेगा तो टेंशन नहीं होगी वचनों को

संभालकर बोले अथवा मौन रहें तो लड़ाई झगड़े नहीं होंगे, तो टेंशन नहीं होगी और काय यानि शरीर के भोग उपभोग पर संयम रखें तो आप स्वस्थ रहेंगे, चिंता से मुक्त रहेंगे। ये है जैन धर्म का गृहस्थ जीवन।

भगवान महावीर ने पांच अणुव्रतों के विषय में बताया। जिनकी आवश्यकता आज पूरे विश्व में हे। सरकार आज जितना खर्च अणुबम बनाने में कर रही है यदि उतना खर्च अणुव्रतों के प्रचार प्रसार में करें तो शायद अणुबम की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। छोटे-छोटे पांच नियमों का लेना अणुव्रत है।

अहिंसा अणुव्रत - गृहस्थी के कार्य में होने वाली हिंसा, व्यापार में होने वाली हिंसा एवं देश समाज धर्म की रक्षा में होने वाली हिंसा को छोड़कर किसी को व्यर्थ ही, मार डालूंगा ऐसा संकल्प नहीं करता है। हिंसा का व्यापार नहीं करता, छोटी-मोटी उद्योगी हिंसा की छूट है। अधिक नहीं। इसे प्रभु ने अहिंसा अणुव्रत कहा है।

सत्य अणुव्रत - किसी के प्राण चले जायें, ऐसा सच या झूठ नहीं बोलूँगा किसी से झगड़ा हो जाये ऐसा सच या झूठ नहीं बोलूंगा इसे सत्याणुव्रत कहा है। जहां हिंसा हो ऐसा सत्य भी झूठ की श्रेणी में आता है। किसी की जान बच जाये या किसी का झगड़ा होने से बच जाये ऐसा झूठ भी सत्य की श्रेणी में आता है। सत्य बोलने के साथ अहिंसा का ध्यान रखना आवश्यक है।

अचौर्य अणुव्रत - मिट्टी और पानी को छोड़कर बिना पूछे किसी की वस्तु ग्रहण नहीं करेंगे। गिरी, पड़ी, भूली, वस्तु को भी ना लेना अचौर्याणुव्रत कहलाता है।

ब्रह्मचर्याणुव्रत - अर्थात अपनी पत्नी को छोड़कर संसार की सभी स्त्रियां मां बहन और पुत्री के समान हैं तथा नारी के लिये पति को छोड़कर सभी पुरुष पिता पुत्र और भाई के समान हैं। इस व्रत के पालन से मन पवित्र चिंता मुक्त रहता है। युवक युवती का भी ऐसा संकल्प होता है कि जब तक शादी नहीं हो जाती तब तक के लिये ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करेंगे। ब्रह्मचर्य एक शक्ति है यदि ध्यान के माध्यम से इसका उर्ध्वारोहण किया जाये तो आत्मा परमात्मा बन जाती है। वर्तमान में लोग भोगों के प्रति जागरूक हैं शरीर के सुख को ही सच्चा सुख मानते हैं। और दिन रात इसी सोच विचार में रहते हैं। कि कैसे इस सुख की

प्राप्ति हो। चिंता, तनाव, लड़ाई झगड़े तक हो जाते हैं इन्हीं विषयों के कारण। रावण ने सीता का अपहरण किया था तो युद्ध हो गया। रावण जैसा शक्तिशाली यदि अपनी दृष्टि को दूषित करता है तो नरक जाना पड़ा। तब संसार के प्राणी कैसे बचेंगे।

धर्म और ध्यान के माध्यम से मन में आने वाले कुविचारों पर विजय प्राप्त की जा सकती है। अश्लील चित्र और दृश्यों को न देखें। तो ब्रह्मचर्याणुव्रत का पालन संभव है जिससे अनेक बीमारियों से बचा जा सकता है। और आत्मा में शांति प्राप्त की जा सकती है। भगवान महावीर ने कामना का पूरा त्याग नहीं करवाया है उसे अनुशासित कर दिया है। जैसे नदी दो किनारो के बीच बहे, जो सागर तक पहुंच जाती है, इसी तरह इच्छायें यदि सीमा में रहें जो मंजिल पर पहुँच सकते हैं।

परिग्रह परिमाण अणु व्रत - आत्मा को छोड़ कर संसार में जिन-जिन वस्तुओं पर अपनापन का भाव है वे सब परिग्रह के अंतर्गत आती हैं। वे वस्तुयें आपके पास हो या ना हों ये कोई जरूरी नहीं है। मेरा पन का भाव विचारों में होने पर उन वस्तुओं के प्रति मोह भाव प्रारंभ हो जाता है। और यही परिग्रह है। धन, सोना, चांदी, कपड़े, मकान, दुकान, गाड़ी, बंगला, दास-दासी इन सबका परिमाण करना आवश्यक है। इन सब पर सीमा लाइन खीचनी आवश्यक है। जीवन में जितनी आवश्यकता है, उतनी वस्तुओं का परिमाण बना लो, बाकी का त्याग करना व्रत कहलाता है। कितने मकान, कितनी दुकान, कितनी फैक्ट्री, कपड़े, सोना आदि अपने नाम से रखेंगे, बाकी त्याग कर देंगे।

आपके मन में प्रश्न होगा जितना है, बस है। बाकी नहीं है, तो त्याग की क्या आवश्यकता है, प्रतिक्षण मन वचन काय की क्रिया से कर्मों का मीटर घूम रहा है। बिजली का मीटर खराब हो सकता है पर कर्मों का मीटर एक सेकेन्ड के लिये भी खराब और बंद नहीं हो सकता। परिग्रह उपार्जन करने में चार कषाय और पांच पाप होते ही होते हैं। फिर उनके संरक्षण करने की भी चिंता करनी पड़ती है, और चला जाये तो जाने की भी चिंता होती है। धन की तीनों अवस्थायें आने में, रहने में और जाने में तीनो अवस्थायें ही कष्टकारी हैं। अतः सच्चे सुख के लिये भगवान ने त्याग का मार्ग श्रेष्ठ बताया। ग्रहस्थ में पूरा त्याग नहीं कर पाते तो परिमाण कर दिया, आवश्यकता अनुसार रखे बाकी का त्याग करो।

जिन वस्तुओं का त्याग किया जाता है, उन वस्तुओं के प्रति मोह खतम हो जाता है। उस संबंधी विचार समाप्त हो जाते हैं। उन वस्तु संबंधी मोह से कर्म आ रहा था उसका आना भी बंद हो जाता है। उस वस्तु या व्यक्ति संबंधी लड़ाई झगड़ा चिंता समाप्त हो जाती है। अर्थात जब मेरा हैं ही नहीं तो चिंता क्यों करना अर्थात त्याग में एक नहीं बहुत सारे फायदे हैं। जिन वस्तुओं का उपयोग कर रहे हो उनकी सीमा बनाओ और जिनका उपयोग नहीं करते हो उनका त्याग करदो। जैन धर्म कितना सीधा सरल और अच्छा है। कुछ नहीं करना पड़ रहा है और धर्म भी होगा।

बड़ा ही महत्व है

घुटनो के बल चलते-चलते,
पांव खड़े हो जाते हैं।
छोटे-छोटे नियम एक दिन
बहुत बड़े हो जाते हैं।।

स्वभाव में नर्म का,
भोजन में गर्म का,
जीवन में धर्म का
बड़ा ही महत्व है।

होने में नम का,
शरीर में दम का,
लेने में छोटे-छोटे नियम का,
बड़ा ही महत्व है।

सुधारने मे दशा का,
सोने में निशा का,
धर्म में अहिंसा का,
बड़ा ही महत्व है।

लिखने में खत का,
मकान में छत का,
जीवन में अणुव्रत का,
बड़ा ही महत्व है।

गाने में राग का,
शहरो में बाग का,
जीवन में त्याग का
बड़ा ही महत्व है।

नींबू के सत्व का
विषयो के तथ्य का
जीवन में सत्य का
बड़ा ही महत्व है।

सम्राटों में चन्द्रगुप्त मौर्य का
राजाओ में शौर्य का
धर्म में अचौर्य का
बड़ा ही महत्व है।

वृक्षो में ताड़ का
बागों में बाड़ का
व्रतों में परिगह परिमाण का
बड़ा ही महत्व है।

शहनाई में तुर्य का
प्रकृति में सूर्य का
धर्मों में ब्रह्मचर्य का
बड़ा ही महत्व है।

अनाज में चने का
गर्मी में पने का
अणुव्रत को ग्रहण करने का
बड़ा ही महत्व है।

24

बड़े की होती है बड़ाई

हर मनुष्य के अंदर बड़े बनने की भावना होती है। और यह भावना बचपन से प्रारंभ हो जाती है। बच्चा भी छोटा बन के नहीं रहना चाहता फिर तो बड़ी उम्र की बात कुछ और है। जवान शक्ति से बड़ा बनना चाहता, वृद्ध उम्र से वृद्ध और बातों से भी बड़ा बनना चाहता। बच्चे अपनी चंचलता दिखा के प्रसन्न करके बड़ो की मूँछ के बाल भी खींचते हैं मान कषाय अंदर से बड़े बनने की प्रेरणा देती है। बड़ा बनना और होना दोनो में अंतर है। बनना इंसान की इच्छा है पर बड़ा होने में उसकी योग्यता ही कारण है। जब व्यक्ति योग्य बुद्धिमान गुणवान और स्वयं को दूसरो के जीवन में सहयोगी बनता है तथा तब स्वयमेव लोग बड़ा मानने लगते हैं। वही दूसरा व्यक्ति किसी के काम नहीं आता किसी दूसरो को धमका कर बड़ा बनने की कोशिश करता है। एक को लोग दिल से बड़ा मानते हैं और दूसरे को भय से बड़ा मानते हैं। किसी ने कहा है-

बड़ा हुआ जो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर।
पंछी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।

जो बड़ा किसी के काम न आये ऐसे बड़े बनने से क्या फायदा जैसे खजूर का पेड़। वर्तमान में बड़ें बनने की लालसा में लोग कई तरह के गलत तरीके अपनाते हैं। सर्व प्रथम यह समझें बड़ा बनना यानि नेता बनना। नेता अर्थात् मार्ग दर्शन, संचालन, सहयोग और सहायता कार्य करना। नेता (बड़ा) बनने के लिये कड़ी मेहनत, पक्का इरादा करना पड़ता है। और जैसे दही बड़े को बड़ा बनने को दलना गलना पिसना अग्नि परीक्षा एवं फिर गलना पड़ता है तब बड़ा बनना है। ऐसे ही इंसान को बड़ा बनने के लिये निजी जिन्दगी के सुख छोड़ने पड़ते हैं और दूसरों के लिये दलना, गलना, पिसना, अग्नि परीक्षा देनी पड़ती है तब वह नेता बन पाता है। लोग बिना मेहनत किये बड़ा बनना चाहते हैं। नेता भी कई प्रकार के होने है।

मुखिया - परिवार में जो सबकी चिन्ता करे, सबका ध्यान रखे उसे मुखिया अर्थात् मुख्य व्यक्ति कहते हैं। यह परिवार में बड़ा कहलाता है।

पंच - अर्थात् गांव में किसी भी समस्या के समाधन के लिये पांच, समझदार व्यक्तियों को जिम्मेवारी दी जाती है। अर्थात् उन्हे बड़ा माना जाता है और न्याय व्यवस्था उनसे करवायी जाती है। वे गांव में बड़े होते है।

नेता - जो मोहल्ले, गांव, जिला, राज्य और राष्ट समाज के स्तर पर जन हित का कार्य करता है जन सेवा ही जिनका लक्ष्य होता है वे नेता की श्रेणी में आते हैं, वर्तमान में इनकी संख्या भी बढ़ती नजर आ रही है पर सेवा में स्वार्थ नहीं होना चाहिये।

अभिनेता - कुछ व्यक्ति जनहित का कार्य नहीं करते किन्तु अपनी कला के माध्यम से सबकी प्रशंसा के पात्र बनते हैं। कला दिखाकर वे लोगो के दिलो में राज करते हैं। ये अभिनेता किसी के सुख-दुख में काम नहीं आते पर मानसिक रूप से लोग इनके प्रशंसक होते हैं।

धर्म नेता - तीर्थंकर भगवान स्वयं अपनी आत्मा का कल्याण करते हैं और भव्यजीवों को मोक्ष मार्ग दिखाकर चलने की प्रेरणा देते हैं। जो धर्म ध्वज लेकर चारों दिशाओं में फहरा देते हैं। उन्हे धर्म नेता की उपाधि दी है। तत्वार्थ सूत्र में आचार्य उमास्वामी जी ने मंगलाचरण में लिखा है-

मोक्ष मार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्म भूभृताम।
ज्ञातारं विश्व तत्वानां, वंदे तद् गुण लब्धये।।

जो मोक्ष मार्ग के नेता हैं कर्मों के पर्वत को भेदने वाले हैं, विश्व के समस्त तत्वों को जानने वाले हैं, उन जैसे गुणो की प्राप्ति के लिये मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ।

सांसारिक नेता और अध्यात्मिक नेता दोनों में महान अंतर है। एक संसार के कार्यों में सहयोग करता है दूसरा आत्मा के कल्याण का मार्ग दिखाता है। एक नेता बाह्य गुणों के कारण बनता है दूसरा नेता आत्मिक गुणों के कारण बनता है। एक के अंदर नेता बनने की भावना है दूसरे के अंदर भावना नहीं केवल कर्तव्य है। आचार्य परमेष्ठी के लिये भी कहा है-

ज्ञान दर्शन नायक

अर्थात् जो ज्ञान सम्यक और सम्यक् दर्शन में जी रहे हैं और जीने की प्रेरणा देते है वे ज्ञान दर्शन के नायक हैं।

कुछ लोग जब उपर्युक्त गुण न होने के कारण बड़े न बन-पाये तो और अपने शरीर को सजाकर सुंदर गहने पहना कर, सुंदर रूप धारण करके उस क्षेत्र में बड़ा बनने का प्रयास करते हैं। कुछ लोगो के पास रूप भी नहीं हो तो धन से बड़े बनने का प्रयास करते हैं अर्थात रात दिन मेहनत करके खूब धन इकट्ठा करना चाहते हैं। और बड़ा आदमी बनना चाहते हैं। बहुत अच्छा लगता है जब लोग कहते हें कि बहुत बड़ा आदमी है। कुछ लोग धन से बड़े न बन पाये तो पहलवानी करना शुरु कर देते हैं, लोग कहते हैं बहुत बड़ा पहलवान है। किसी काम को करने में बड़ाई मिले वह बड़ा बन जाता है।

उपर्युक्त उक्ति से बड़े बने तो सब अस्थाई हैं अर्थात सुंदरता के कारण बड़े हो तो बुढ़ापा आते ही सुंदरता गायब हो जायेगी और बड़ापन चला जायेगा। धन के कारण बड़े बने हो, तो जब तक धन है तब तक बड़े हैं, जिस दिन धन गया तुरंत छोटे बन जाओगे। पहलवानी से बड़े बने तो, एक मलेरिया ही पहलवान की हवा उड़ा देता है। दूसरी वस्तु के कारण बड़ा बनना पराधीन है। ये संसार की वस्तुयें संसार में रह जायेंगी, आत्मा उड़ जायेगी बड़ा बनना है तो अध्यात्मिक ज्ञान से बनो, जो ज्ञान आपको इस जन्म में भी सुखी रखेगा और अगले जन्म में भी साथ जायेगा। ज्ञान प्राप्त किया जो रास्ता दिखाने के लिये और की आवश्यकता नहीं होगी ओर लोग कहेंगे बहुत बड़ा ज्ञानी है। इससे हमारे दोनो काम सिद्ध हो जाते हैं। किन्तु ज्ञान आने के बाद बड़े बनने की भावना ही समाप्त हो जायेगी। क्योंकि सच्चाई पता चलते ही कि हम कितने गहरे पानी में हैं, पता चल जायेगा, और बड़ा बनना ही भूल जायेंगे श्रीमद् रायचन्द्र जी लिखते हैं कि जब मुझे थोड़ा ज्ञान था तो मैं सिर उठाकर चलता था पर जब सच्चा ज्ञान हुआ तो मैं झुककर चलने लगा। अकड़ व अभिमान करना, अपने आपको बड़ा समझना अज्ञान की निशानी है। कषयों का उदय है।

सूरज चांद सितारे, फूल फल जल सारी प्रकृति आपका सहयोग करती है। किन्तु बदले में कुछ नहीं मांगती। लोग सूरज को जल चढ़ाते हैं क्योंकि संसार

नाम को नहीं काम को नमस्कार करता है। नाम को नहीं काम करने वाले को बड़ा मानता है। अतः बड़े बने पर स्वभाव अच्छा बना के किसी के काम आयें।

बड़े बड़ाई न करें, बड़े न बोले बोल।
हीरा मुख से कब कहे, लाख हमारो मोल।।

बड़ा ही महत्व है

गर्मी में घड़ा का
खेत में मंड़ा का
संसार में बड़ा का
बड़ा ही महत्व हैं।

बैलों में नांद का,
पानी के बाँध का,
आकाश में चांद का,
बड़ा ही महत्व हैं।

राज्यो में लंका का
सोचने में मंशा का
करने में दूसरो की प्रशंसा का
बड़ा ही महत्व हैं।

समय में पल का
गर्मी में जल का
मनुष्यो के फल का
बड़ा ही महत्व हैं।

पशुओं में गज का
प्रभुचरणों की रज का
मनुष्यो के लिये सूरज का
बड़ा ही महत्व हैं।

25

जब तक आयु है तब तक वायु है

भगवान महावीर ने बताया जीव के 10 प्राण होते हैं। जिनसे वह जीवन जीता है। पांच इंद्रियां, तीन बल (मन, वचन, काय) आयु और श्वासोच्छवांस। इंद्रिय जिससे जीव की पहचान होती है उसे इंद्रिय कहते हैं। इंद्रिय इंद्र के समान होती हैं। जैसे एक इंद्र दूसरे इन्द्र का काम नहीं करता वैसे ही एक इंद्रिय दूसरी इंद्रिय का काम नहीं करती। जैसे आंख का काम कान नहीं कर सकते, जीभ का काम नाक नहीं कर सकती। ये अपना-अपना काम ही करती हैं।

इंद्रिय पांच होती है 1. स्पर्शन, 2. रसना, 3. घ्राण, 4. चक्षु, 5. कर्ण। स्पर्शन अर्थात जिससे हल्का भारी, रुखा, चिकना, कड़ा-नरम और ठंडे गरम का ज्ञान होता है उसे स्पर्शन इंद्रिय कहते हैं। जिससे काला, पीला, नीला, हरा और सफेद रंग का ज्ञान हो उसे चक्षु इंद्रिय कहते हैं। जिससे खट्ठा, मीठा, कड़वा चरपरा, कषायला का ज्ञान हो उसे रसना इंद्रिय कहते हैं। जिससे सुगंध-दुर्गध का ज्ञान होता है उसे घ्राण इंद्रिय कहते हैं तथा जिससे सात स्वरो का ज्ञान हो उसे कर्ण इंद्रिय कहते हैं इन इंद्रियो के माध्यम से जीव बाहर के पदार्थो का ज्ञान करता है। बाहर रंगो को देखता है बाहर के स्वाद को चखता है, बाहर की आवाजों को सुनता है। बाहर की गंध को लेता है। इंद्रियों का मतलब ही चीजों को ग्रहण करना है।

तीन बल-मन बल, वचन बल, काय बल। बल यानि शक्ति शरीर भी एक शक्ति है। वचन भी एक शक्ति और सबसे बड़ी शक्ति है मन। जो केवल पंचेन्द्रिय संज्ञी जीव में पायी जाती है। श्वांसोच्छवास और आयु दोनो का घनिष्ठ संबंध है। अर्थात् आयु हो तो वायु ले सकते हैं, अर्थात जीने के लिये जितनी वायु जरूरी है उससे ज्यादा आयु जरूरी है। आयु के खत्म होते ही वायु अर्थात श्वांस आनी बंद हो जाती है। अर्थात जीव इन 10 प्राणों के माध्यम से संसारी जीवन जीता है। जब कर्मो का नाश करके सिद्ध भगवान बन जाते हैं। शरीर छूट जाता है। तब ये 10 प्राण भी यहीं रह जाते हैं जो कर्मो के उदय में मिले

हुये थे। सिद्ध मात्र आत्मा से जीते हैं। उनका पुदगल से संबंध खतम हो गया। कर्म भी पुद्‌गल हैं, शरीर भी पुद्‌गल है। जब तक कर्म है तब तक शरीर है, और जब तक शरीर है इन 10 प्राणों की आवश्यकता है।

एकेन्द्रिय स्थावर जीव (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति) के चार प्राण होते हैं। अर्थात् पांच इंद्रियों में से एक इंद्रिय 'स्पर्शन' तीन बल में से एक बल ''कायूबल'' तथा आयु और श्वांसोच्छश्वांस। ये चार से एकेन्द्रिय जीव अपना जीवन व्यतीत करता है। कितना मजबूर है पेड़ जहां खड़ा है वही खड़ा रहेगा हवा ने हिलाया तो हिल जायेगा। किसी ने पानी पिलाया तो पी लेगा। नहीं मिला तो मृत्यु को प्राप्त हो जायेगा। इस तरह हवा बहती रहती है, अग्नि को जलाया तो जल गये, बुझाया तो बुझ गये। पृथ्वी काय जमीन के अंदर हजारो वर्ष तक पड़ा रहता है। इस एकेन्द्रिय पर्याय के दुख ऐसे है जैसे एक आदमी के मुंह में कान नाक में कपड़ा भरदे, हाथ पांव बांध दे और बोरे के अंदर भर कर उसके ऊपर एक बड़ा सा पत्थर धरें। जितना कष्ट उस व्यक्ति को होगा उससे कहीं ज्याद कष्ट एकेन्द्रिय ओर निगोद की पर्याय में होता है। कष्टों से भरा जीवन थोड़े समय का नहीं है। शास्त्रों में अनंत काल तक वर्णन किया है। यह एकेन्द्रिय जीव जीता तो है पर केवल कर्म चेतना है कर्मो का फल भोग रहा है।

दो इंद्रिय जीव को छह प्राण बताये हैं चार प्राण तो पहले वाले, इनमें एक इंद्रिय वढ़ गई अर्थात जीभ मिल गई, और जीभ मिली तो वचन बल आ गया। जीवन में थोड़ी चेतना जागृत हो गई। शरीर ऐसा मिला थोड़ा चल-फिर सकते हैं। जैसे लट्‌ केंचुआ आदि। भोजन मुख से ग्रहण करने लगे। खाने में हालांकि मिट्‌टी खाते हैं पर भोजन प्रारंभ हो गया। लेकिन अभी भी मजबूर बिना ज्ञान जीवन जी लिया बस। भव भ्रमण भव-पूरा कर लिया। जीवन तो है, पर जीवन का सार नहीं है। पर एकेन्द्रिय की अपेक्षा थोड़ा सा उत्थान हुआ।

तीन इंद्रिय जीव के सात प्राण होते हैं। छह तो पूर्व वत्‌ तथा सातवा एक इंद्रिय और बढ़ गई। ''घ्राणेन्द्रिय''। नाक आ गई इंद्रिय सुख की आकांक्षा प्रारंभ हो गई। भोजन में पसंद पैदा हो गई। जैसे-चीटी खटमल सुरसुरी आदी। चींटी पूरी रसोई में से केवल मीठे पर ही जाती है। खटमल खून ही पीता है। सुरसुरी को अनाज पसंद है पूरे समय चलते फिरते घूमते रहते हैं घूमने के लिये पैर भी मिल गये। जब तक जीते बैठते नहीं। बस चलतें रहते हैं। थोड़ा तो

उत्थान हुआ है पर अभी जीवन की सार्थकता नहीं मिली।

चार इंद्रिय जीव में आठ प्राण होते हैं सात तो पूर्ववत आठवां चक्षु इंद्रिय यानि आंख मिल गई। संसार देखने को मिल गया। आंखो के भोग प्रारंभ हो गये, जो चीज अच्छी लगी उसी पर झूमने लगे। जैसे पतंगा को दीपक की लों अच्छी लगती है। जाता है दीपक की लौ को पकड़ने के लिये, और जल जाता है। मक्खी को गुड़, मींठी चीजे अच्छी लगती हैं गुड़ चासनी में बैठती हैं और पंख चिपक जाते हैं, मर जाती है। चीटी मक्खी मांसाहारी होती हैं। कहीं मिला झट वहां पहुंच जाते हैं। बसंत में कीड़े होते हैं वे पीले रंग के कपड़ों पर बैठ जाते हैं। लोग उन्हें भगाते हैं और वे मर जाते हैं। चार इंद्रिय, इंद्रिय की अपेक्षा थोड़ा आगे बढ़े, पैर के साथ पंख मिल गये, थोड़ा आकाश में उड़ लेते हैं पर वे भी अभी पूर्णता को प्राप्त नही है। पुरुषार्थ जाग्रत नहीं है। इसी से संसार भ्रमण ही चल रहा है।

पंचेन्द्रिय असंज्ञी जीव के 9 प्राण होते हैं इंद्रिया पांचो मिल गई। पर बल पूरे नहीं हुये। काय बल है, वचन बल है पर अभी मन बल नहीं आया। जैसे पानी में रहने वाले सर्प। फिर पंचइन्द्रिय संज्ञी में मन बल भी आ गया पर पर्याय तिर्यच की मिली। प्राण तो 10 मिल गये पर चार पैर वाले जानवर की पर्याय में पड़े रह गये। कुत्ता, घोड़ा, गधा, गाय, भैंस, हाथी, बंदर आदि। इन जीवो के मन होता है पर भाव व्यक्त करने के लिये भाषा नहीं होती। जिसको जिससे आवाज मिली बस उसी स्वर में सारी जिन्दगी निकल जाती है। जैसे भारत का कुत्ता भौं-भौं करता है वैसे ही विदेश का कुत्ता भी करता है। पूरे विश्व के जानवर की भाषा एक है पर मनुष्य सब जगह अलग-अलग भाषा में बोलता है। वचन तो है पर भाषा नहीं है। जहां भाषा नहीं वहां साहित्य नहीं, और जहां साहित्य नहीं वहां उत्थान नहीं।

पंचेन्द्रिय संज्ञी पशु इतना ज्ञान जागृत है कि डंडा देखते ही भागना शुरु कर देते हैं। धूप लग रही है तो छाया में बैठ जाते हैं। बारिश हो तो छाया चाहते हैं। कुत्तो को ट्रेनिंग देकर अनेक काम करवाये जाते हैं। बंदर को डमरूं बजाकर नचाया जाता है। गाय भैंस आदि जिस घर में रहती हैं बाहर जाने पर बिना बताये ठीक उसी घर में वापस आ जाती हैं। पीठ पर प्यार से हाथ फेरो तो अच्छा महसूस करती हैं। अपने बच्चों के प्रति जाग्रत, मोह करना आता है ये सब क्रियाये एक संज्ञी जीव में ही संभव हैं। भगवान महावीर के

जीव ने शेर की पर्याय में सम्यग्दर्शन प्राप्त किया था। हाथी की पर्याय में भगवान पारसनाथ ने सम्यग्दर्शन प्राप्त किया था। बैल को णमोकार मंत्र सुनाया तो उनका कल्याण हुआ। जटायु पक्षी अणुव्रत लेकर रामचन्द्र और सीता के साथ जंगल में रहता था। तथा सीता की रक्षा के लिये अपने प्राण भी निछावर कर दिये, कुत्ता भी अपनों को देखकर पूंछ हिलाता है, और अनजान को देखकर भौंकता है। पशुओ में चेतना बहुत जाग्रत हो गई पर कल्याण पूर्ण मार्ग प्रशस्त नहीं हो पाया।

देव, नारकी, मनुष्य इनके भी दस प्राण होते हैं। यहां चेतना पूर्ण जाग्रत है। देव पर्याय में वैक्रियक शरीर है जिससे भोग तो भोगे जाते हैं पर तपस्या संभव नहीं है। वहां शारीरिक सुख है, सुख चार गुणस्थान तो हैं पर व्रत नियम नही होने से चार गुण स्थान से ऊपर नहीं जा सकते, सम्यग्दर्शन तो प्राप्त कर लिया पर संयम धारण नहीं कर सकते। इस देव पर्याय से मुक्ति संभव नहीं है।

नारकी जीवों में 10 प्राण हैं पर यहां भी संयम का अभाव है। नरक में दुख ही दुख है। नरक में सुख भी किसी नारकी के सम्यग्दर्शन में कारण बन जाता है। अतः नरक में चतुर्थ गुण स्थान से ऊपर नहीं जा सकते।

मनुष्य संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। आकाश में उड़ने वाले पक्षी ओर जंगल में रहने वाले शेर हाथी जैसे जानवरो पर राज्य करने वाला मनुष्य है। मनुष्य-मनुष्यों पर भी राज्य करना जानता है। जीवन को अच्छी तरह से जीना ये भी मनुष्य जानता है एवं आत्मा को परमात्मा बनाने की ताकत भी मनुष्य में है। आत्मा अपने जीवन का चरमोत्कर्ष लक्ष्य मानव जीवन से ही प्राप्त करता है। तीर्थंकर चक्रवर्ती बलभद्र नारायण प्रतिनारायण सभी महापुरूष मनुष्य पर्याय में ही इस पद को प्राप्त करते हैं। अंतिम जन्म और अंतिम निर्वाण भी मनुष्य पर्याय में ही हो सकता है। अतः मनुष्य पर्याय की सार्थकता इसीलिये है कि इसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थ मनुष्य कर सकता है।

मनुष्य के भी 10 प्राण होते हैं। पांच इंद्रिय, तीन बल, श्वांसोछवांस, आयु, दसो प्राणों का संपूर्ण सदुपयोग करने की ताकत मनुष्य में है, यदि मनुष्य इन्द्रियों के भोग उपभोग में लग जाये तो उसका पतन हो जाता है। मन से, वचन, काय, से हिंसा आदि पाप कषाय आदि में लग जाये तो मनुष्य का पतन हो

जाता है। शरीर के स्तर पर जीवन जिया जाता है, तो संसार भ्रमण और शरीर धारण करके संसार दुखों को बढ़ाता है। अधिक से अधिक प्राणी सांसारिक सुख और मोह भाया में भटक जाते हैं, इच्छा पूर्ति में ही सारा जीवन निकाल देते हैं। और पुनः-पुनः दुःखों को उठाते हैं। विरले हैं, जो संसार में रहकर अपने जीवन का सदुपयोग कर पाते हैं, इंद्रिय भोग विषयों को छोड़ आत्मा के उद्धार के लिये धर्म और ध्यान करते हैं। जो मनुष्य करते हैं वे आगामी भवों में मुक्ति को प्राप्त कर सच्चा सुख पाते हैं।

दस प्राण उसके पास भी हैं जो पाप कर रहा है, दस प्राण उसके पास भी हैं जो पुण्य कर रहा है। उत्कृष्ट से उत्कृष्ट कार्य दस प्राणों से किये जा सकते हैं। और निकृष्ट से निकृष्ट कार्य करने के लिये भी दस प्राण चाहिये। जैसे जो सीढ़ी ऊपर चढ़ाती है वही सीढ़ी से नीचे उतरा जा सकता है। सीढ़ी एक है। जैसे चाकू एक होता है। एक डा. के हाथ में है तो, जीवन दान देता है और डाकू के हाथ में हो तो जीवन नष्ट कर देता है। चाकू एक है। उपयोग दो है। ठीक इसी तरह दस प्राण एक से सबको मिले पर कोई इनका सदुपयोग करता और कोई दुरुपयोग करता है।

मनुष्य पर्याय चारो गतिका जंकशन है। अर्थात मनुष्य पर्याय से चारो गति में जा सकते हैं तथा मोक्ष का रास्ता भी यहीं से खुल है। पसंद आपकी है। 60-70 वर्ष में संयम धारण कर स्वर्ग और क्रम से मोक्ष प्राप्त होता है। इसी 60-70 में पाप करें तो नरक और तिर्यंच गति का रास्ता खुला है। जब चींटी मच्छर मक्खी को देखे। तो सोचो कि यदि हमने अपना उद्धार नहीं किया तो आगे इन्ही पर्यायों में जाना पड़ेगा। उद्धार का मार्ग केवल मनुष्य पर्याय में संभव है अतः संसार में कषाय और पापों से आत्मा की रक्षा करके आत्मा का उद्धार करना चाहिये।

बड़ा ही महत्व है

हीरे के कणों का
गर्मी में घड़ो का
मनुष्य के दस प्राणो का
बड़ा ही महत्व है।

बच्चों में प्रिय का
शरीर में हिय का
अच्छे काम के लिये इंद्रिय का
बड़ा ही महत्व है।

जीवन में गति का
नारी में सती का
सुधरने में मति का
बड़ा ही महत्व है।

रात्रि में तम का
शरीर में दम का
इन्द्रियों पर संयम का
बड़ा ही महत्व है।

इनाम में पाने का
घर को सजाने का
मनुष्य पर्याय से मुक्ति पाने का
बड़ा ही महत्व है।

रहने के लिये भवन का
साधुओं के लिये वन का
मनुष्य के जीवन का
बड़ा ही महत्व है।

करने में योग का
मिलने में संयोग का
दस प्राणों के सदुपयोग का
बड़ा ही महत्व है।

गणित में वर्ग का
गोत्र में गर्ग का
मोक्ष जाने के पहले स्वर्ग का
बड़ा ही महत्व है।

वृक्षो में प्राणवायु का
पक्षियो में जटायु का
जीने के लिये आयु का
बड़ा ही महत्व है।

26

सूक्ष्म दृष्टि से सूक्ष्म दिखेगा

हमारे पास दो तरह की दृष्टि है। एक स्थूल दृष्टि दूसरी सूक्ष्म दृष्टि। अधिकांशतः हम समस्त व्यक्ति और वस्तुओं को स्थूल दृष्टि से देखते है। स्थूल दृष्टि से देखने पर हमें उसका ऊपरी आवरण नजर आता है। ऊपर की लंबाई, चौड़ाई, आकार, वजन, कलर (रंग) नजर आता हूँ उसकी स्थूलता को हम एक नजर में पकड़ लेते हैं। पर वस्तु और व्यक्ति को सूक्ष्म दृष्टि से देखने के लिये ज्ञान की आवश्यकता होती है। स्थूल दृष्टि तो एक बच्चे के पास भी हैं पर सूक्ष्म दृष्टि ज्ञानी के पास होती है। ज्ञानी अपने जीवन के अमूल्य समय को दृष्टि को सूक्ष्म बनाने में लगाता है।

सर्व प्रथम हम स्वयं से प्रारंभ करें तो बात जल्दी समझ में आयेगी। उदाहरण के तौर पर आपने देखा होगा। गाय घास खाती है, घास का दूध बनता है दूध का दही बनता है, दही से मक्खन निकाला जाता है और मक्खन को तपाने पर घी बन जाता है। अर्थात घी अब कभी घास या दूध नहीं बनेगा। घी-घी ही रहेगा। ठीक ऐसे ही जीव चारो गतियों में भ्रमण कर रहा है। धीरे-धीरे वृद्धि को प्राप्त होते हुये-जैन कुल मनुष्य पर्याय मिली। घास से दूध-तक की यात्रा तो हमने पूर्ण कर ली। अब ऐसा पुरुषार्थ करें कि दूध दही मक्खन और घी बन जाये। अर्थात् हमारे अंदर का शुद्ध परमात्मा प्रगट हो जाये।

जैसे घर में एक महिला दूध में से मलाई निकालती है। मलाई से घी बनाती है। उसे उस दूध की मलाई में घी नजर आ रहा है। तभी तो उसने मलाई निकाली। बस यही सूक्ष्म दृष्टि है कि दूध में घी की संभावना मानकर, पुरुषार्थ पूर्वक उसका घी निकाल लेना। ठीक ऐसे ही हमारे इस शरीर में विद्यमान आत्मा परमात्मा को देखकर पुरुषार्थ करके उसे प्रगट करना सही

सूक्ष्म दृष्टि है। जैसे-हथेली पर रखे एक बीज में वटवृक्ष की संभावना है। किसान खेत में बीज बोता है। उसे उस बीज में पूरी लहलहाती फसल दिख रही है। तभी वह हाथ फैला कर बीज फेंक रहा है। ठीक ऐसे ही हमारी आत्मा में परमात्मा विद्यमान है।

जैन धर्म बहुत विशाल हृदयी है। वह मनुष्य मात्र की नहीं प्राणी मात्र की रक्षा की बात करता है। इससे भी ज्यादा विशालता तब है। जब कि जीव अभी भगवान नहीं बना है, आज वह संसारी पर्याय में है लेकिन उसके नाम की पूजा, अर्घ्य अभी से चढ़ाये जाने प्रारंभ हो गये हैं। जैसे भूत भविष्य और वर्तमान की चौबीसी। भूत काल की चौबीसी हो चुकी, वर्तमान की अभी चल रही है लेकिन भविष्य के तीर्थंकर कोई स्वर्ग में है कोई नरक में है, पर हम उनकी भावी पर्याय की आराधना आज भी कर रहे हैं। जो भगवान बना नहीं बनने वाला है। हमें सूक्ष्म दृष्टि से आप ही भगवान नजर आ रहे है।

भगवान महावीर की पर्याय को देखे तो दस भव पूर्व सिंह की पर्याय में थे। सीमंधर स्वामी के समवशरण में किसी ने प्रश्न किया कि भरत क्षेत्र के अंतिम तीर्थंकर कौन होंगे और आज वह किस पर्याय में है। प्रभुने उत्तर दिया कि अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर होंगे तथा आज वह शेर की पर्याय में है। तब दो मुनिराज उन्हे उपदेश देने आये। शेर ने मांस का त्याग किया अणुव्रत लिये और मोक्ष की यात्रा यही से प्रारंभ हो गई। भगवान पार्श्वनाथ जी ने हाथी की पर्याय में अणुव्रत ग्रहण किये। मेढक समवशरण में जा रहा था। कुत्ते ने णमोकार मंत्र सुना तो देव बन गया। बंदर, कुत्ता सिंह नेवला ने मुनिदर्शन से अपना कल्याण किया।

संसार में जितने जीव हैं, हर आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति है। चीटीं, मक्खी, मच्छर, कुत्ता, मेढ़क, देव, नारकी, मनुष्य कोई भी भगवान बन सकता है, किसी भी जीव को हम छोटा न समझे। शरीर की दृष्टि से छोटे बड़े हो सकते हैं पर आत्मा की दृष्टि से हर जीव बराबर है। जब हम चीटी को छोटा नहीं समझ सकते, तो उसे मार कैसे सकते हैं। और परिवार को समाज एवं अन्य लोगों को छोटा कैसे मान सकते हैं। क्योंकि हर आत्मा में परमात्मा विराजमान है। हर जीवन की विनय करना यानि भावी परमात्मा की विनय करना है। ये सब जीव भविष्य में होने वाले परमात्मा हैं। भावी परमात्मा का अपमान कैसे कर सकते हैं। भावी परमात्मा को गाली कैसे दे सकते हैं भावी परमात्मा को मार कैसे सकते हैं। हर आत्मा में परमात्मा देखें यानि सूक्ष्म दृष्टि को उपयोग में लेना हो गया।

सूक्ष्म दृष्टि शरीर नहीं देखती आत्मा देखती है। शरीर स्थूल है, आत्मा सूक्ष्म है। सूक्ष्म को देखने के लिये सूक्ष्म दृष्टि चाहिये। एक कुतर्की शिष्य ने गुरु से पूछा, गुरु जी उपवास आदि व्यर्थ में क्यों करते हैं आत्मा तो दिखती नहीं है। गुरु जी ने कहा बेटा हवा दिखती नहीं है पर जीवन उसी से चल रहा है। शरीर में सुई चुभोने पर जहां-जहां कष्ट हो यानि वहां-वहां आत्मा है। आत्मा आंखो से नहीं दिखती, पर सूक्ष्म ज्ञान से जानी जाती है। वह ज्ञान हम सबके पास है। वह सूक्ष्म दृष्टि हम सबके पास है, उस दृष्टि को खोलने की आवश्यकता है।

आंख मक्खी की भी होती है कुत्ता बंदर घोड़ा गधा की भी होती है। उनकी आंख उन्हे केवल बाहर के गडढ़े से बचाती है। पर मनुष्य के इन दो आंखो के अलावा ज्ञान की सूक्ष्म आंख भी है जो हमें संसार के समस्त दुखों से बचाती है।

बड़ा ही महत्व है

जल की वृष्टि का
दसवें गुण स्थान में कर्मों की कृष्टि का
मनुष्य की सूक्ष्म दृष्टि का
बड़ा ही महत्व है।

भव से तरने का,
पानी के भरने का,
सब जीवों की विनय करने का,
बड़ा ही महत्व है।

आगम में नय का
प्रभु की जय का
जैन धर्म के विशाल ह्दय का
बड़ा ही महत्व है।

व्यापार में आय का
छोड़ने में चाय का
जीवों की मनुष्य पर्याय का
बड़ा ही महत्व है।

महाभारत में पार्थ का
पर्वतो में विजयार्द्ध का
जीवन में पुरुषार्थ का
बड़ा ही महत्व है।

ताले की चाबी का
रिश्तो में भाभी का,
तीर्थंकरो में भावी का
बड़ा ही महत्व है।

मिट्टी में कंकर का
विदेह में सीमंधर का
होने वाले तीर्थंकर का
बड़ा ही महत्व है।

27

चलते फिरते धर्म हो सकता है

आपके अनुसार धर्म केवल मंदिर में पूजा करने पर होता है माला जाप करने पर होता है। अभिषेक और दान करने से ही धर्म होता है। विधान करने पर ही धर्म होता है। पूजा, विधान, जाप, अभिषेक धर्म हैं पाप से दूर होने के निमित है। परमात्मा को याद करने का प्रभावशाली द्रढ़ निमित्त है। प्रतिदिन मंदिर जाना भी आत्मा को पवित्र करने के लिये द्रढ़ निमित्त है। ग्रहस्थ श्रावक के लिये ये सभी कार्य आवश्यक हैं इसके बिना श्रावक कहलाने का अधिकारी नहीं हैं मंदिर जाना पूजा करना, दान देना, गुरु सेवा, स्वाध्याय करना ये सब क्रियायें हमारी दृढ़ आस्था और श्रद्धा का प्रतीक हैं।

किन्तु प्रातः इन क्रियाओं से निवृत्त होने के पश्चात् दिन भर गृहस्थ की क्रिया करते हुये क्या धर्म नहीं हो सकता? हो सकता है प्रातः जब सोकर उठते हैं तो लोग सबसे पहले मोबाइल देखते हैं, किसका Good Morning का मेसेज आया किसकी Miss Call आई है। वही से आपके दिन की शुरुआत हो जाती है पर अपनी सुबह जो कि आँख खोलकर जागते मे आत्मा को कैसे जागरत की जाये सुबह धर्म मयी कैसे बनायी जायें जैसा आप जाने, पहला विचार भगवान का आना चाहिये और ध्यान पूर्वक नौ बार णमोकार मंत्र पढ़के सभी अरिहंत सिद्ध साधु को स्मरण करके नमस्कार करें संसार में सब प्राणी सुखी हों ऐसी दिल से भावना भायें फिर अपनी श्वांस देखे-जिस तरफ की श्वांस चल रही है, वह पैर जमीन पर रखें। बस हो गया धर्म मुश्किल से पांच मिनिट लगेंगे और प्रातः का मंगल चरण आपने कर लिया। इसी तरह परिवार वालो में बड़ो को प्रणाम जैजिनेन्द्र कीजिये छोटो को स्नेह से जय जिनेन्द्र कीजियें आपका सुखद सुप्रभात हो गया।

भगवान महावीर ने सभी शास्त्रों में कहा है कि क्रोध मत करों उन्ही के अनुसार मैं भी कहती हूँ आपस में, परिवार वालो में झगड़ा मत करो। पति-पत्नि, सास-बहू-पिता पुत्र, भाई-बहन, अड़ौसी-पड़ौसी, रिश्तेदार आपस में

झगड़ा मत करो। जब आपस में झगड़ा न करके वही बात प्रेम से बोल दी तो बस हो गया धर्म। घर में शांति पूर्ण वातावरण बनाना हो गया धर्म। दूसरो में लड़ाई नहीं करवाना हो गया धर्म। इन छोटी-छोटी बातो को ध्यान में रखा जाये तो धर्म दिन भर हो सकता हैं दश धर्मों में पहला धर्म है उत्तम क्षमा। अर्थात् क्रोध नहीं करना क्षमा कर देना। क्रोध तीन तरह का होता है-

सात्विक - दूसरों को सुधारने की भावना से।

राजसिक - अपना अहंकार दिखाने के लिये।

तामसिक - दूसरों को नीचा दिखाने के लिये।

आप मेरे कहने का आशय समझ गये होगें। क्रोध नहीं करना, करना पड़ें तो केवल दूसरों को सुधार की भावना से करें।

गृहस्थी के बहुत सारे रिश्ते दार होते हैं। समय-समय पर मिलना भी होता है। मानो चार बहने आपस में मिली, वो बात करते हुये रात के दो कब बज जाते हैं पता नहीं चलता। बातों का विषय भी कोई घटना जिसमें भोजन कथा, वस्त्र कथा, बच्चों की कथा, पति कथा, पड़ौसी रिश्तेदार कथा होती हैं। ये कथाये करके वे सुख की नीद सोती हैं। अक्सर आप देखना कि समूह में बैठे हुये जो पहला टॉपिक (विषय) शुरु करता है। सबका दिमाग उसी विषय को पकड़ के सोचना शुरु कर देता है। मान लो किसी ने चुटकुला सुनाया, दूसरा भी दिमाग में ढूंढता है कोई चुटकुला याद आये। यदि भोजन का विषय शुरु हुआ तो दूसरा भी उसी अनुसार चर्चा करता है। राजनीति आदि भी हो सकती है। जब अन्य विषयों पर चर्च शुरु कर दे, बस मिलना भी हो गया और ध र्म भी हो गया कोई भजन सुनादे, कोई चार लाइन का मुक्तक सुना दे। कोई अच्छी कहानी सुना दे फिर देखिये कैसा सुखद माहौल तैयार होता है। गाड़ी में सफर कर रहे हो तो भी इसी तरह की चर्चा करें। सफर धर्म मय हो जायेगा। पाप क्रियाओं के साथ-साथ पुण्य क्रियाओं को छोड़े ना।

जब किसी के शादी होती है तो व्यवहार यानि गिफ्ट दी जाती है, कोई साड़ी, कोई अंगूठी, कोई पायल, कोई कंगन आदि-आदि सामान देते हैं। पर इन सामानो के साथ प्रभु को स्मरण कराने वाली एक माला अवश्य भेंट करें। साड़ी शरीर की रक्षा करेगी। माला आत्मा की रक्षा करेगी। अंगूठी अंगुली कि

शौभा बढ़ाये गी, माला आत्मा की शौभा बढ़ायेगीं एक शास्त्र भेंट करे। लो हो गया धर्म। बोन चाइना के बर्तन न खरीदें घर के लिये, न गिफ्ट देने के लिये ऐसे विचार रखना और उसका अनुसरण करना निश्चित ही एक दिन हमारे विचारों में क्रांतिकारी परिवर्तन लायेगा।

बैठें तो जमीन देखकर बैठें, चलें तो जमीन देखकर चलें, किसी जीव की जान न जाये, चलने फिरने बैठने में धर्म हो गया। बरसात का मौसम है बाजार का ना खायें जिमीकन्द पत्ती आदि ना खाये, हो गया धर्म बोलने में सबसे प्रिय वचन बौले, सबका यथा योग्य सम्मान करें हो गया धर्म। अर्थात प्रिय बोलना भाषा समिति है सबकी विनय करना सोलह कारण भावनाओ में एक भावना विनय भावना है। पूजा में भी कहा है-

विनय महा धारे जो प्राणी।
शिव बनिता की सखी बखानी।।

प्रिय बोलने वाला सबका प्रिय बन जाता है। सभी चाहते है कि मैं प्रिय बनूं। उसके लिये वाणी में संयम आंखो में शर्म दिल में धर्म रखना पड़ेगा। अतः घर में रह कर बहुत कुछ हो सकता है। मैंने तो बहुत थोड़ा लिखा हैं शरीर में रहकर शरीर को पड़ौसी मानना सबसे बड़ा भेद विज्ञान है। शरीर में बुखार आये तो कहों, पड़ौसी को बुखार आ गया, दवाई खिलाओ तो कहो कि पड़ौसी को दवाई खिला रहा हूँ। बस इतनी सी साधना शुरू करदे देखिये विचारो में कैसा चमत्कार होता है। यही से धर्म की शुरूआत होती है। जिसके घर में धर्म होता है उसका मंदिर में भी मन लगता हैं अपने जीवन को अच्छा बनाने के लिये छोटे-छोटे धर्म का भी पालन करें।

बड़ा ही महत्व है

भोजन में गरम का
स्वभाव में नरम का
चलने फिरने में धर्म का
बड़ा ही महत्व है

रिश्तो में मौसी का
बनने में संतोषी का
आत्मा के पड़ोसी का
बड़ा ही महत्व है।

बनिया में तौलने का
पानी के खौलने का
प्रिय वाणी बोलने का
बड़ा ही महत्व है

सुधरने में मति का
होने में अच्छी गति का
जीवन में भाषा समिति का
बड़ा ही महत्व है

मनुष्यों में वय का
आगम में नय का
करने में विनय का
बड़ा ही महत्व है

बड़ी बिल्डिंग में लिफ्ट का
ट्रांसफर होने पर शिफ्ट का
देने में धर्म की गिफ्ट का
बड़ा ही महत्व है

कर्म के हरने का
त्याग के बरने का
घर में झगड़ा नहीं करने का
बड़ा ही महत्व है

स्वर्गों में इन्द्र का
देवो में देवेन्द्र का
सुबह-सुबह जय जिनेन्द्र का
बड़ा ही महत्व है

नाव के खेने का
दान में देने का
सुबह-सुबह प्रभु नाम लेने का
बड़ा ही महत्व है

घर मे सामान का
ज्ञान में प्रमाण का
देने में सम्मान का
बड़ा ही महत्व है

28

जो दिखता है उसके लिये साधन चाहिये, जो नहीं दिखता उसके लिये साधना चाहिये

संसार आँखों से देखा जा सकता है, अर्थात संसार की स्थूल वस्तुये आँखों से देखी जा सकती हैं पर उसमें बहने वाली सूक्ष्म ऊर्जा आँखों का विषय नहीं है, वह तो अनुभव से ही मापी जाती हैं, सूक्ष्म का असर स्थूल पर भी होता है और स्थूल का असर सूक्ष्म पर भी होता है। दोनो साथ-साथ रहते हुये भी अलग-अलग तरह से पहचाने जाते हैं। उदाहरण के लिये शरीर स्थूल है और उसमें रहने वाली आत्मा सूक्ष्म है। विचार की तरंगे शरीर में नहीं आत्मा में उठती हैं। शरीर तो एक माध्यम है, मुख्य तो इसमें विचार ही हैं। शरीर अपने आप कहीं नहीं जाता, मन में विचार आया बाहर जाना है, शरीर उठ कर चल पड़ेगा। मन में विचार उठा कि पकौड़ी खाना है, शरीर उसके खाने की तैयारी में जुट जायेगा। अतः स्थूल से ज्यादा सूक्ष्म प्रभाव शाली हैं विचारों को सुधारते ही शरीर का आचरण अपने आप सुधर जायेगा। शरीर में जितनी हड्डी और नसें हैं उससे कई गुने विचार मन में भरे पड़े हैं। शरीर जितना बीमार नहीं होता उससे ज्यादा बीमारी मन में होती है।

सारा संसार शरीर का इलाज करवाता है पर भगवान महावीर कहते हैं कि आत्मा का इलाज करो तो शरीर, अपने आप स्वस्थ रहेगा। अर्थात 75 प्रतिशत बीमारी मन के कारण से होती है BP, शुगर, हार्टअटैक, डिप्रेशन इन बीमारियों के शरीर में आते ही बाकी बीमारी अपने आप चली आती हैं। अर्थात सूक्ष्म आत्मा का इलाज करने पर स्थूल शरीर अपने आप ठीक हो जायेगा अथवा सूक्ष्म ठीक रहेगा तो स्थूल बीमार ही नहीं होगा। बाहर तप में, छह तप स्थूल को ठीक करते हैं और छह तप सूक्ष्म को ठीक करते हैं। अनशन उपवास अनोदर, व्रत संख्यान, रस परित्याग, विविक्त शैय्यासन कायक्लेश, ये शरीर को ठीक करते

हैं, और प्राशचित, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, व्युत्सर्ग और ध्यान से सूक्ष्म आत्मा को ठीक करते हैं यदि कोई जीव सावधान होकर बारह तपों को थोड़ा-थोड़ा भी करे तो, निश्चित ही आधी बीमारी यूं ही भाग जायेगी। शरीर को साधन चाहिये पर आत्मा साधन को छोड़ साधना करे तो आत्मा प्रसन्न होती है।

कैंसर की बीमारी में जब दवाई इंजेक्शन गोली असर नहीं करती तब कीमो थेरेपी दी जाती है। अर्थात सूक्ष्म किरणों से इलाज किया जाता है। सूक्ष्म किरणें भी महान प्रभावशाली हैं। जो आंखो से नही दिखता है हम उसे अनदेखा नहीं कर सकते। आत्मा आंखो से नहीं दिखती, इसीलिये है नही, ऐसा नही कह सकते। संसार सूक्ष्म द्रव्य की शक्ति पर ही चल रहा है। छह द्रव्यो में से एक ही द्रव्य स्थूल है, जिसे पकड़ा जा सकता है पुदगल बाकी सूक्ष्म दोनो तरह के हैं।

आज के विज्ञान ने स्थूल को, हार्डवेयर और सूक्ष्म को साफ्टवेयर नाम दिया है कम्प्यूटर मोबाइल में और जो टी.वी. में है वो साफ्टवेयर है, जो कागज पर आ गया वह हार्डवेयर है। इसी तरह से हमारी आत्मा साफ्टवेयर है और शरीर हार्ड वेयर, है, साफ्ट वेयर जितना सुन्दर होगा हार्ड वेयर भी उतना ही सुन्दर होगा। हार्ड वेयर को सजाने पर साफ्ट वेयर सुन्दर नहीं होगा पर साफ्ट वेयर को जितना सुन्दर बनाओ हार्डवेयर अपने आप सुंदर बन जायेगा। निश्चित ही सूक्ष्म की तरफ ध्यान देना आवश्यक है। जिसकी दृष्टि सूक्ष्म पदार्थ की तरफ नहीं है समझना उसको जीवन का बहुत बड़ा हिस्सा, उसके ज्ञान से अधूरा हो गया। उदाहरण हमारे सामने चारो तरफ धूम रहे हैं, हम फिर भी उस पर ध्यान नहीं देते हैं। आत्मा सूक्ष्म है और उसमें रहने वाला ज्ञान भी सूक्ष्म है। सूक्ष्म ज्ञान आंखो से नजर नहीं आता पर उस ज्ञान में इतनी ताकत है, आत्मा का अनुभव करा दे। अभी ज्ञान भौतिक पदार्थो में लगा हुआ है। जैसे करेंट बिना तार के नहीं रह सकता, वैसे ही संसारी आत्मा बिना शरीर के नहीं रह सकती हैं, बस इस बात का ज्ञान होना आवश्यक है तार अलग वस्तु है और करेंट अलग वस्तु हैं शरीर अलग है आत्मा अलग है।

खाली जगह जितनी आपको खाली नजर आ रही है, वह खाली नहीं हैं, सूक्ष्म किरणों से सारा स्थान भरा पड़ा है। दूरदर्शन की किरणे, मोबाइल में रहने वाला जितना भी मैसेज, आवाजे, चित्र नजर आते है वे सब हमारे आस पास सूक्ष्म परमाणु के रूप में घूम रहे हैं, जिसे हम नेत्रों के माध्यम से नहीं बल्कि टी.वी. और मोबाइल, कम्प्यूटर जैसे यंत्रो के माध्यम से देख पाते हैं। कई बार आपके फोन के बाहर मैसेज का जाम लग जाता है, और आपको मैसेज देर

से मिलता है। सूख्म किरणों में सारे प्रवचन, सारे विषय खाली जगह में ऐसे तैरते है जैसे सागर में लहरे। और ये सब आपके आस पास ही हैं। जैसे ये किरणे दिखती नहीं हैं पर इसका अस्तित्व स्वीकार करना पड़ेगा वैसे सूक्ष्म आत्मा का अस्तित्व भी स्वीकार करना पड़ेगा। जैसे टी. वी. और मोबाइल से इनका उपयोग करते हो, वैसे शरीर के माध्यम से आत्मा को जानने का प्रयास करें और कर्म परमाणु भी सूक्ष्म है, जैसे भाव बनाते हैं, वैसे सूक्ष्म कर्म परमाणु आकर हमारी आत्मा से चिपक जाते हैं। और समय पर उदय में आकर फल देते हैं।

भगवान महावीर ने इसी सूक्ष्म आत्मा की साधना की, ध्यान लगाया, शरीर को तपाकर, आत्मा को तपाया और कर्मो का नाश करके अपनी आत्मा को परमात्मा बना लिया। संसारी प्राणी सारी जिन्दगी स्थूल पदार्थो को पकड़ने में और उसे सजाने में पूरी कर देता है, पर सूक्ष्म आत्मा की तरफ उसकी दृष्टि नहीं जाती है। आंख खोलता है तो स्थूल ही दिखता है, पर आंख बंद करके सूक्ष्म ध्यान किया जाता है जिसे वह नही करता। अपने सूक्ष्म ज्ञान से सूक्ष्म आत्मा को जानें।

बड़ा ही महत्व है

नदी के कूल का
बागों में फूल का
दिखने में स्थूल का
बड़ा ही महत्व है

मिटने में अज्ञान का
खोज करने में विज्ञान का
सूक्ष्म आत्मा के ध्यान का
बड़ा ही महत्व है

ऋतुओं में ग्रीष्म का,
महाभारत में भीष्म का,
जानने में सूक्ष्म का,
बड़ा ही महत्व है

पेड़ में तना का,
रिश्तो में नाना का,
सूक्ष्म आत्मा की साधना का
बड़ा ही महत्व है

भव से तारने का
अपनो से हारने का
सूक्ष्म आत्मा को जानने का
बड़ा ही महत्व है

प्रभु के चरणों का
पुदगल के वरणों का
वस्तु से निकलने वाली सूक्ष्म किरणों का
बड़ा ही महत्व है

29

चातुर्मास के चार चरण

चातुर्मास हर वर्ष आता है। चातुर्मास का समय साधुओं के कारण ही माना जाता है। क्योंकि बारिश के चार महीनों में साधु सर्वत्र विचरण न करके, एक स्थान पर ही रहते हैं। पर श्रावको का ऐसा नियम नहीं होता। वह साधुओं का चातुर्मास करवा के, धर्म का विशेष लाभ उठाता है। और कहने में यही आता है कि आजकल चातुर्मास में व्यस्त हैं। अपने जीवन में हम लोगों ने ना जाने कितने चातुर्मास करा लिये पर चातुर्मास को व्यवस्थित तरह से नियम पूर्वक नहीं बिताया होगा। जो कार्यक्रम चल रहे हैं उसमें भाग ले लिया, बस इसके अलावा स्वयं से विचार नहीं किया होगा कि वास्तव में चातुर्मास में मुझे कितनी साधना करनी है। चातुर्मास 105 दिन का होता है उसमें से निश्चित करें कि प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ माह में क्या-क्या करना है। चातुर्मास स्थापना आसाढ सुदी चतुदर्शी से प्रारंभ होती है और तीसरे दिन से सावन शुरु हो जाता है।

बारिश का मौसम है पेट की पाचन शक्ति कमजोर हो जाती है, व्यापार भी कमजोर हो जाता है। अतः तन और धन दोनों तरह से त्याग प्रारंभ हो जाना चाहिये। शरीर से खाने का विकल्प छोड़ो बाहर से कमाने का विकल्प छोड़ो अतः

सावन में - भक्ति

भादों में - त्याग

क्वाँर (अश्विन) में - संयम

कार्तिक में - वैराग्य

इन चार महीनों में इनकी विशेष साधना करनी है बाकी जो धर्म हम कर रहे हैं उन्हे तो करना ही है।

सावन में भक्ति

आत्मा और परमात्मा के प्रति होने वाली श्रद्धा और आस्था को प्रगट करने का माध्यम भक्ति है। जिन परमात्मा के प्रति श्रद्धा है, उनका गुणानुवाद करने का मन स्वयमेव होता है। उनके गीत गुनगुनाने का मन करता है। उनकी प्रशंसा और तारीफ करने का मन करता है। उनकी पूजा और अर्चना करने का भाव होता है। इन सब कार्यों के माध्यम से भक्ति की भावनायें बाहर में प्रगट होती हैं। मन में भक्ति है पर वचन से बोलने पर पता चलता है। और काया के बार-बार झुकने पर पता चलता है। भक्ति के भाव अंदर में कितने भरे हुये हैं। और जब तक मन वचन काया तीनों के द्वारा भक्ति ना की जाये भक्ति में पूर्णता नहीं होती।

जब भक्त के अंदर भक्ति उमड़ती है तो उसका रोम-रोम बोलता है। कृष्ण की भक्ति जब मीरा ने की तो सारे संसार को पता चल गया। राम भक्त हनुमान ने राम भक्ति में संपूर्ण जीवन समार्पित कर दिया। सीता ने भक्ति से णमोकार मंत्र पढ़ा तो अग्नि का नीर हो गया। मेढक की भक्ति ने उसे स्वर्ग पहुंचा दिया। अर्थात भगवान हमारे रोम-रोम में बस जायें, सावन में ऐसी भक्ति करें। भगवान के सामने बैठकर भजन पढ़े विनती पढ़े, जिनवाणी में भक्तामर आदि प्रभु भक्ति के बहुत सारे पाठ है वे विशेषतया पूजा करें। आप देखेंगे कि भक्ति करने के बाद आत्मा कितनी प्रसन्न होती है। भक्ति करने से पाप कर्म का नाश, पुण्य की प्राप्ति सम्यग्दर्शन की प्राति होती है। सावन में स्वयं को पावन करने में भगवान की भक्ति आवश्यक है।

भादों का त्याग

भादों का महीना त्याग के नाम से ही विख्यात है। जितना त्याग भादों के महीने में गृहस्थ करते हैं उतना पूरे वर्ष में नहीं हो पाता। लेकिन वो त्याग केवल दशलक्षण पर्व के दस दिनों में किया जाता है। मेरी चर्चा भादो के पूरे महीने से है। त्याग करना ज्यादा कुछ नहीं बस अपने बोझ कम करना है। संसार में रहते हुये वस्त्र, भोजन, मकान, दुकान, परिवार, सोना-चांदी, दास दासी आदि का इतना बोझ इकट्ठा कर लिया है कि जीवन में आत्मा परमात्मा याद ही नहीं

आते। दिल में बाहर की ही चिन्ता सदा रहती है। यदि त्याग जीवन में अपनाया जाये, तो आप पायेंगे कि जीवन में हल्का पन आ गया। अत्यधिक बोझा हमारी इच्छाओं के कारण इकट्ठा हुआ है। इच्छाओं को सीमित करें तो बाह्य वस्तु स्वयंमेव कम हो जायेंगी और तब सच्चा त्याग प्रतिफलित होगा। जितनी वस्तुओ का त्याग होगा, उतनी वस्तुओं से होने वाला कर्म बंध कम हो जायेगा और संवर निर्जरा भी प्रारंभ हो जाती है। त्याग इंसान को भगवान बना देता है। आप भगवन बनने लायक त्याग नहीं कर पा रहे तो कम से कम देवता बनने लायक त्याग अवश्य करें।

त्याग का शुभारंभ उन वस्तुओं से करों कि जिससे आपके जीवन में बाधा न आये जैसे-एक महीना क्रोध नहीं करेंगे, एक महीना दो समय भोजन करेंगे पर चाय आदि तरल पदार्थ की छूट रखके। एक महीना श्रृंगार आदि का भी त्याग कर सकते हैं। नये वस्त्र आभूषण खरीदने का त्याग कर सकते हैं निंदा बुराई करने का त्याग कर सकते हैं। यदि आपने इतने कार्य करके भादो का महीना पूर्ण कर लिया तो घर में रहकर साधु स्वभाव वाले बन गये। घर में रहकर आप धर्मात्मा बन गये। धर्मात्मा दिखना और धर्मात्मा होना दोनों में अंतर है। बाह्य का त्याग अंतरंग की भावनाओं को दिखाता है। अतः भादों का महीना त्याग में बितायें।

आश्विन (क्वांर) में संयम

घोड़े में लगाम, हाथी में अंकुश गाड़ी में ब्रेंक जो काम करते हैं वही काम, जीवन में संयम करता है। जब तक घोड़े की लगाम हाथ में है, हाथी अंकुश में है, और गाड़ी का ब्रेंक सही है, तीनों मंजिल पर पहुंचा देते हैं, ऐसे ही इंसान के जीवन में संयम है तो इंसान भी संसार की ठोकर खाने से बचेगा। और अगला जन्म भी सुधर जायेगा। संयम 12 प्रकार का है पांच इंद्रिय एक मन पर संयम, पांच स्थावर और त्रय काय की रक्षा करना। आंख, नाक, कान, जिव्हा और शरीर को अपने वश में करना जो ये कहे वह नहीं करना जो आत्मा कहे वह करना है। इंद्रिया और मन दिन भर संसार के भोगों की मांग करता है। इंसान उसकी पूर्ति के लिये सारी जिन्दगी लगा देता है, पर फिर भी ये पूरी नहीं हो पाती।

इच्छाओं ने इस जीवन को बस एक भिखारी कर डाला।

भिखारी बना दिया इन इंद्रियों ने। हम जितेन्द्रिय के भक्त हैं, अर्थात् भगवान ने अपनी इंद्रियों पर विजय प्राप्त की, हम उनके भक्त हैं, हमारे जीवन में कुछ संयम आना चाहिये। हर रोज स्वादिष्ट भोजन न करें रूप को देखने के लिये आंखो को वश में करें, नाक को वश में करने को खुशबू वाली वस्तुओं का प्रयोग न करें, एक महीने के लिये फिल्मी संगीत सुनने का त्याग करें, ब्रह्मचर्य आदि का पालन करें इससे मन वश में होगा, प्राणियों की रक्षा करें।

मन में सोचने में संयम रखें, वाणी से बोलने में संयम रखें, और शरीर पर संयम रखें। मन पर संयम होगा जो तो चिन्ता नही होती, वचन पर संयम होगा तो लड़ाई झगड़ा नहीं होगे, और काय पर होगा तो बीमारी नहीं होगी अतः जीवन को अच्छा और सच्चा बनाने के लिये संयम अति आवश्यक है।

कार्तिक में वैराग्य

जीवन में त्याग आ गया संयम आ गया भक्ति भी कर ली। ये सब राग को ऊपर से छोड़ना हुआ। अभी हमने पेड़ की शाखा फल फूल और पत्तियों को पानी दिया है। जड़ अभी शेष है। अभी उसे छोड़ा है जो आंखो से दिख रहा है, अब उस को छोड़ना है जो आंखों से नहीं दिख रहा है। भक्ति में दृढ़ता त्याग में गहराई और संयम में मजबूती तब आयेगी जब अंदर में वैराग्य होगा। बिना वैराग्य के भक्ति, त्याग और संयम कभी नही छूट सकते हैं। इसीलिए धर्म की जड़ वैराग्य को पानी देना आवश्यक है।

वैराग्य किसे कहते हैं? वस्तु को अनित्य, क्षणभंगुर, अशुचि और अशरण रूप देखना वैराग्य है। जिन-जिन वस्तुओं में व्यक्ति को राग है उनकी सच्चाई देखने से राग कम होता है और वैराग्य आता है आंखो पर हरा चश्मा लगाओ सब वस्तुये हरी नजर आती हैं चश्मा उतार कर देखो तो असली रंग रूप दिखता है। ऐसे ही हम मोह का चश्मा लगाकर संसार को देखते हैं तो सब कुछ अच्छा और अपना लगता है। यदि मोह हटा कर अपने ही शरीर को देखा जाये तो यह गंदगी का पिटारा है। जब अपना शरीर ही गंदगी से भरा है और कभी भी धोखा दे सकता है तो अन्य पर भरोसा कैसे किया जा सकता है। इस तरह संसार की वस्तु का अध्ययन हर पहलू से किया जाये तो निश्चित ही, राग कम होगा, वैराग्य से हमारे आत्म धर्म में दृढ़ता आयेगी। आत्मा को पाने के लिये बाहर मोह कम करना जरूरी है।

वैराग्य को बढ़ाने वाली बारह भावना माता के समान काम करती हैं। जिस तरह मां शरीर को पुष्ट करती है उसी तरह बाहर भावनाओ का चिंतन हमारी

आत्मा के भावों को पुष्ट करता है। कार्तिक के महीने में इस पर विशेष ध्यान देकर वैराग्य को बढ़ाना चाहिये।

आध्यात्मिक पर्व को आत्मा से मनाये आडंबर से नहीं

रत्नों में जिस तरह हीरा है, मनुष्यों में चक्रवर्ती है, तिर्यंचो में शेर है, आकाश में सूरज है उसी तरह पर्वों में दशलक्षण महापर्व है। समय, घड़ी, घंटा को हम खराब नहीं कह सकते। किन्तु महापर्व के आते ही आत्मा मन भाव सब परिवर्तित हो जाता है। अपने आप त्याग आचरण में परिलक्षित होने लगता है। पर्व तो अनेको हैं पर जो भावनायें दशलक्षण महापर्व पर होती हैं, वर्ष के अन्य पर्वों में नहीं होती इसीलिये इसे महापर्व कहा है।

पर्व कई प्रकार के होते है सामाजिक पर्व, राष्ट्रीय पर्व, अनादिनिघन पर्व, अध्यात्मिक पर्व, भक्ति पर्व सामाजिक पर्व जैसे होली रक्षाबंधन आदि सभी किसी घटना क्रम से जुड़े होते है उस घटना के पश्चात उस घटना से मिलने वाली शिक्षा को दोहराने के लिये यह पर्व आते हैं। भगवान महावीर मोक्ष गये उस दिन दीवाली पर्व, राष्ट्रीय पर्व जैसे 15 अगस्त, 26 जनवरी अथवा किसी विशेष नेता से जुड़ा हुआ दिन। स्वतंत्रता दिवस स्वतंत्र होने की खुशी में मनाया जाता है तथा 26 जनवरी गणतंत्र भारत का संविधान भारत में लागू हुआ था इस खुशी में मनाया जाता है।

अध्यात्मिक पर्व - दशलक्षण पर्व के सिवाय अन्य पर्वों में लोग नये कपड़े पहनते हैं, मिठाइयां खाते हैं, रिश्तेदारी में मिलने जाते हैं। पर यह पर्व न खाने आता है, न कपड़े पहनने आता है, यह पर्व तो त्याग और संयम का जीवन सिखाने आता है। वर्ष भर में जितनी गल्ती, अपराध हुये हैं उनका प्रायश्चित प्रतिक्रमण और पश्चाताप कराने आता है। आत्मा में लगे पापों का नाश करने आता है, विचारों की शुद्धि से आत्मा को स्नान कराने आता है। आत्मा को परमात्मा बनाने आता है। अतः मन त्याग और संयम में लगे इस पर्व को इस तरह से मनायें।

बड़ा ही महत्व है

कार्य करने में सर्व का
शरीर में नर्व का
पर्वों में दशलक्षण महापर्व का
बड़ा ही महत्व है।

पैसो में जमा का,
रात्रि में शमा का,
पर्वों में क्षमा का,
बड़ा ही महत्व है।

मनुष्य में भव का
निर्माण में नव का
धर्मों में मार्दव का
बड़ा ही महत्व है।

मिलने में सुभव का
होने में सुलभ का
धर्मों में आर्जव का
बड़ा ही महत्व है।

अजवाइन के सत का
पूजा में नित्य का
धर्मों में सत्य का
बड़ा ही महत्व है।

पक्षियों में कॉच का
चिड़िया की चोंच का
धर्मों में शौच का
बड़ा ही महत्व है।

शरीर में दम का
लेने में नियम का
धर्मों में संयम का
बड़ा ही महत्व है।

करने में जप का
पीने में कप का
धर्मों में तप का
बड़ा ही महत्व है।

भोजन में साग का
शहरो में बाग का
धर्मों में त्याग का
बड़ा ही महत्व है।

पेडो पर जल सिंचन का
चेहरे पर लोचन का
धर्मों में अकिंचन का
बड़ा ही महत्व है।

मनुष्यों में वर्य का
आकाश में सूर्य का
धर्मों में ब्रह्मचर्य का
बड़ा ही महत्व है।

बच्चें के लालन का
दही के बिलोवन का
धर्मों के पालन का
बड़ा ही महत्व है।

मंदिर में जिनवाणी का
मनुष्य की वाणी का
धर्म में क्षमावणों का
बड़ा ही महत्व है।

30

रंगीन दुनिया में एक त्यौहार रंग का

रंग राग का प्रतीक है। छहढाला में कहा है- ''यह राग आग दहे सदा, तातें समामृत सेइए। यानि राग आग के समान है। अतः होली राग और आग दोनों का त्यौहार है। राग में रंगते हैं, और आग में होलिका को जलाते हैं। राग के साथ द्वेष अवश्य होता है दोनो का जोड़ा है किन्तु यह त्यौहार अच्छाई को बचाने का है और बुराई को जलाते हैं। अर्थात जो प्रह्लाद की बुआ होलिका ने किया है उसे छोड़ना है। प्रल्हाद ने जो किया है उसे करना है। दोनो पात्र हमें शिक्षा दे रहे हैं।

होलिका को वरदान था कि आग उसे जला नहीं सकती। अंतरंग की बुरी भावनाओ ने उसके वरदान को नष्ट कर दिया क्योंकि होलिका का उद्‌देश्य भक्त प्रह्लाद को नष्ट करना था। भगवान का भक्त कष्ट से नष्ट हो ये कर्मों को भी मंजूर नहीं है। धर्मात्मा को दिया जाने वाला कष्ट धर्मात्मा के पुण्य की वृद्धि करता है। और जो कष्ट दे रहा है उसके हजारो पुण्य का नाश कर देता है। उदाहरण साक्षात है कि होलिका का वरदान भी खत्म हो गया और आग ने होलिका को जला दिया। और आग जिसे जला सकती थी यानि प्रह्लाद को, किन्तु उसके लिये वह कष्ट, वरदान बन गया। क्योंकि प्रल्हाद के कार्य का उद्देश्य सही था। भक्त की रक्षा देवता करते हैं।

भारत में इतिहास को बार-बार दोहराया जाता है अर्थात होलिका और प्रह्लाद को आज तक याद किया जाता है। याद करने का कारण उनसे मिलने वाली शिक्षा है। हर साल होली आती है और चली जाती है। खा-पीकर डकार लेते हैं पर पता नही शिक्षा लेते हैं या नहीं? त्यौहार खाने-पीने को कम और शिक्षा देने ज्यादा आते हैं। हम त्यौहारों को अज्ञानता में मनाते चले जा रहे हैं, त्यौहार चाहे कोई भी हो। दीवाली, रक्षा बंधन, दशहरा, आदि अन्य त्यौहार हमें कोई न कोई शिक्षा अवश्य देते हैं।

बसंत मौसम में बसंतोत्सव मनाया जाता था। शास्त्रों में ऐसा वर्णन मिलता है। राजा रानी जन समूह उद्यानों में, बनो में जाकर रंगों से बंसतोत्सव

की क्रीडा करते थे। और कई बार राजा अपने पड़ौसी मित्र राजा आदि को भी आमंत्रित करते थे। वही रूप अब होली पर देखने मिलता है। अधिकांश लोग होली पूर्णमासी या एकम खेलते हैं। तथा अलग-अलग स्थानों पर कहीं पंचमी, सप्तमी, ग्यारस तक खेलते हैं। अर्थात भारत में कम से कम ग्यारह दिन रंग से खेला जाता है। कही-कहीं लट्ठमार होली भी होती है।

बच्चों को होली का बड़ा इंतजार रहता है। उन्हे पिचकारी चलाने में बहुत मजा आता है। छत पर खड़े होकर पानी फेंकना, और बाद में बोलना बुरा न मानो होली है। सारे क्रोध को ठंडा कर देता है। और बड़े बूढ़े भी इन क्रियाओं का आनंद लेते हैं। रंगी को रंगने में बड़े भी पीछे नहीं रहते। अपने मन को साफ करके पुराने रंगो पर नया रंग चढ़ाकर नये जीवन की शुरूआत करते हैं। सबके चेहरे लाल, पीले हरे, काले होते हैं। लोगो को पहचानना मुश्किल होता है। अकसर लोग पुराना चेहरा देख कर बोर हो जाते हैं, इसीलिये एक दो दिन के रंग परिवर्तन की अनुभूति मन को प्रसन्न कर देती है। कुछ नया पन आ जाता है जीवन में। नये पुराने वस्त्र भी इंतजार करते हैं, कब हमारा पहनने का नंबर आयेगा। होली का त्योहार आते ही लोग पुराने वस्त्र ढूंढने लगते हैं।

भारत के त्यौहार हर महीने कोई न कोई खुशी देकर जाते हैं, और जीवन के उबाउ पन को दूर करके अच्छी अच्छी शिक्षा देते हैं। जितने त्यौहार भारत में मनाये जाते हैं, इतने त्यौहार किसी देश में नहीं मनाये जाते। अनेकता में एकता भारत में ही देखने मिलती है। जैसे एक ही रंग से चित्र नहीं बनता वैसे एक संस्कृति से उत्थान नहीं होता। अतः भारत की रंग बिरंगी संस्कृति भारत रूपी उपवन की तितलियों जैसी होती है। और भारत की शोभा बढ़ाती है। संस्कृति ही हमें संस्कारित करती है अतः संस्कृति का सम्मान अवश्य करें।

बड़ा ही महत्व है

पहाड़ों पर डोली का
मनुष्यों की बोली का
पर्वों में होली का
बड़ा ही महत्व है।

शरीर में अंग का
देशों में बंग का
होली पर रंग का
बड़ा ही महत्व है।

लिखने में खत का
चलने में पथ का
देशों में भारत का
बड़ा ही महत्व है।

31

संक्लेशता से कम हो जाती है बुद्धि, कैसे?

संसार का हर मनुष्य चाहता है कि उसकी बुद्धि बहुत तेज हो, वो हर चीज में आगे रहे। हर माता पिता का सपना होता है कि उसका बच्चा पढ़ने में बहुत आगे हो। नहीं होने पर बच्चों को चिंता कम होती है पर माता पिता को चिंता ज्यादा होती है। हर माता पिता तो चाहते ही हैं कि मेरा बच्चा होशियार हो किन्तु जिनके यहां कुत्ता आदि होते हैं वे भी चाहते हैं कि हमारा कुत्ता बहुत होशियार हो। सबको ज्ञानवान बुद्धिमान, होशियार होना अच्छा लगता है। क्यों नहीं है? इसके कारण खोजने होंगे।

उम्र बढ़ने पर लोगो के अंदर भूलने की बीमारी हो जाती है। चाबी कहाँ रख दी, किसको सामान दे दिया भूल जाते हैं। शास्त्र पढ़ते हैं याद नहीं रहता। जिन्दगी भर से पूजा करते हैं पर आज तक पूजा याद नहीं हो पाई, अभी भी किताब की आवश्यकता पड़ रही है। कई बच्चे पढ़ते हैं बहुत, पर जैसे ही प्रश्न पत्र सामने आता है, सब भूल जाते हैं। किसी को डिप्रेशन की बीमारी हो जाती है। विचारों की श्रृंखला नहीं रूकती लगातार उल्टे-उल्टे विचार आते हैं। मरने-मारने का मन करता है। हँसती खेलती जिन्दगी ना जाने कहां चली जाती है। इनके भी कारण खोजने पड़ेंगे।

भगवान महावीर के द्वारा उपदेशित गौतम गणधर के द्वारा रचित सूत्र, महाबंध ग्रंथ में आया है कि संक्लेशता से ज्ञानावरणी का बंध होता है, और हमारा ज्ञान का क्षयोपशम कम हो जाता है। इस एक लाइन की बात में सारा निचोड़ आ गया। अब इस सूत्र को विस्तार से समझना होगा, तभी हम जीवन में उतार पायेंगे।

क्रोध, मान, माया, लोभ, हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह संचय के परिणामों को संक्लेश कहते हैं। क्रोध के समय हम अपने में नहीं रहते हैं।

तभी लोग कहते हैं कि ये आपे से बाहर हो रहा है। अभिमान माया की लोभ की स्थिति भी इसी तरह बनती है। लोगों को क्रोध ज्यादा समझ में आता है, जबकि जो हालत आत्मा की क्रोध करता है वही हालत मान, मायाचारी, हिंसा आदि करते हैं। इस स्थिति में हमारे मन पर आवश्यकता से अधिक जोर पड़ता है। मन वचन काय को भी उसी अनुरूप कार्य करना पड़ता है। योगो की तीव्रता, संक्लेशता की तीव्रता से पाप कर्मों का आस्त्रव अधिक होता है। बस यही पाप हमारी बुद्धि को, हमारे ज्ञान को खत्म करना प्रारंभ कर देता है।

क्रोध चाहे बच्चा करे या बड़ा, तीव्रता तो दोनो में होती है। अभिमान चाहे राजा करे या सेठ संक्लेशता तो होती है। मायाचारी स्त्री करे या पुरुष कषाय परिणाम तो होते हैं। लोभ चाहे गृहस्थ करे या श्रावक कर्म का बंध हो ही जाता है। किसी को मारने की भावना हो या झूठ की, चोरी करने की हो, अब्रह्म सेवन (कुशील) की, या परिग्रह संचय की भावना हो सबमें परिणामों में संक्लेशता होती है। किसी ने कहा है-

काजल की कोठरी में, कैसे भी सयाने जाये;
एक दाग लागे, तो लागे जरूर है।

अर्थात् जब पूरी कोठरी काली है, कितना होशियार व्यक्ति भी जाये कितना बचने के बाद भी दाग लग ही जाता है। इसी तरह गृहस्थी भी ऐसी चीज है, कितना ज्ञानी हो, बुद्धिमान हो होशियार हो, यदि गृहस्थी में रहता है तो वहाँ का वातावरण निश्चित प्रभावित करता है और कषाय तथा पाप के परिणाम होने ही होने हैं। इसीलिये कहा है घर में रह कर कितना धर्म कर लो मोक्ष नहीं मिलने वाला। क्योंकि घर में रह कर संक्लेश भाव कम तो कर सकते हैं पर खतम नहीं कर सकते। खतम करने के लिये ग्रहस्थी को छोड़कर स्वयं में आना आवश्यक है। घर में रहने वाला व्यक्ति यदि घर के कार्य नहीं करेगा, घर वालो को अच्छा नहीं लगेगा। कर्म भूमि का प्रभाव कम करना ही पड़ेगा। और करेगा तो घर में उपेक्षित रहेगा, और उसे इसी बात की संक्लेशता शुरु हो जायेगी। घर वाले कहना शुरू कर देंगे की कुछ काम नहीं करना है तो, निकल जा घर से हमें आवश्यकता नहीं तेरी। संसार स्वार्थ का मेला है। ना मानो तो प्रेक्टीकल करके देख लेना। संसार का स्वरूप समझ में आ जायेगा। कोई न कोई निमित मिलता ही रहता है संक्लेशता को। दीक्षा ही एक मार्ग है संक्लेश से रहित होने का।

गृहस्थी में रहकर घर गृहस्थी के कार्य में तो होशियार हो ही जाते हैं। पर मानसिक रूप से बुद्धि दौड़नी बंद हो जाती है। जैसे घर के जितने कार्य हैं, रोटी कपड़ा, बर्तन, बच्चे का पालन पोषण, पैसे कमाना। भोजन बनाने में अच्छे से अच्छा भोजन बनाने का प्रयास करते हैं, कपड़ो में अच्छे से अच्छा कपड़ा पहनने का प्रयास करते हो, व्यापार में पैसा कमाने के तरीके खोजते हो, बच्चो के भविष्य को अच्छा बनाने के लिये सौ तरह से दिमाग लगाते हो। थोड़ा फिर लिया, थोड़ी हँसी मजाक कर ली और थोड़ा लड़ लिया, सामने वालो को नीचा दिखा दिया। असफल होने पर टेन्शन और चिन्ताओं के बोझ से स्वयं को भारी कर लिया। जनम मरण परण (शादी) के प्रोग्रम में उठने बैठने चले गये, उससे संबधित थोड़े सुख दुख के विचार कर लिये। थोड़ा राजनीति में रूचि हो-तो राजनीति की चर्चा कर ली। खेलो में रूचि हो तो उसकी चर्चा करली। पिक्चर सीरीयल संबंधित विषय सोच लिये। इतने में संसार के 90% विचार आगये। दस प्रतिशत का वर्णन हम करना नहीं चाहते। आप अपने आप पर स्वयं लगा सकते हैं। संपूर्ण जीवन इन्हीं विचारो में समाप्त हो जाता है। प्रतिदिन इन्ही विचारों को दोहराते रहते हैं, आश्चर्य है कि एक बात बार-बार करके बोर क्यों नही होते?

एक भोजन रोज नहीं करना चाहते, एक रंग के वस्त्र पहन कर बोर हो जाते हो, कुछ लोगो की बात करके बोर हो जाते हो, पर प्रतिदिन की बातों से बोर क्यों नहीं होते। बात करने के लिये आदमी बदल लेते हो, पर बात नहीं बदलते हो। इतना बड़ा जीवन मिला इससे हम बहुत कुछ कर सकते हैं पर अंदर का उत्साह मानसिक परिवर्तन के लिये जाग्रत क्यों नहीं होता? अज्ञानता की जिन्दगी जीकर जिन्दगी को बर्बाद क्यों करते हैं? जागो-जागो-जागो।

संक्लेशता अनादि काल से की है। विशुद्धि स्थान प्राप्त करें ताकि आत्मा का उत्थान हो। इस संक्लेशता से ज्ञानावरणी कर्म का तीव्र बंध कराया जिससे हमारे अन्दर अज्ञानता बढ़ती जा रही है। अज्ञानता संसार का सबसे बड़ा पाप है। क्योंकि पाप अज्ञानता में ही होते हैं। ज्ञान होगा तो पाप नहीं होगा, फिर घर में रहे होगे तो छोड़ने का प्रयास करेगा। अज्ञानी व्यक्ति बिना झिझक, बिना संकोच प्रायश्चित के भावो से रहित हो कर पाप करता है। उसे ना नरक से डर होता है ना कष्टों का भय। किन्तु ज्ञानी व्यक्ति जानता है कि किसमें पाप है किसमें नहीं, और वह गृहस्थ में रहता है तो हर कार्य में वही चुनता है जिसमें कषाय और पाप कम से कम होवे, संक्लेशता कम से कम होवे।

जितनी होती है उसके लिये प्रतिक्रमण प्रायश्चित करता है पश्चाताप करता है।

घर में रहते हुये क्रोध मान माया के पापों के निमित बहुत मिलते हैं। इन्ही निमित्तो से संक्लेशता होती है। संक्लेशता से अज्ञान और अज्ञानता से पाप और पापों से दुख बढ़ता है। अतः यदि दुख नहीं चाहते हो तो संक्लेशता से हटने का प्रयास करें।

बड़ा ही महत्व है

मन को मोड़ने का
गुणों को जोड़ने का
संक्लेशता को छोड़ने का
बड़ा ही महत्व है।

सिंह के शावक का
भोजन बनाने में पावक का
घर में रहने वाले श्रावक का
बड़ा ही महत्व है।

भोजन में शुद्धि का
जीवन में वृद्धि का
सुधरने में बुद्धि का
बड़ा ही महत्व है।

मसाले में स्वाद का
सिद्धांतो में स्याद्वाद का
अच्छी बातो की याद का
बड़ा ही महत्व है।

तीर्थंकरों में सन्मति का
पाने में अच्छी गति का
सुधरने में मति का
बड़ा ही महत्व है।

करने में ध्यान का
तलवार में म्यान का
जीवन में ज्ञान का
बड़ा ही महत्व है।

32

पदस्थ एवं रूपस्थ ध्यान में पढ़े णमोकार मंत्र

मन संसार के समस्त जीवो में मनुष्यों के लिये वरदान है, जिससे वह आत्मा परमात्मा का ध्यान लगा सकता है। मन कल्पवृक्ष है जिसके माध्यम से वह मन चाही गतियों में जा सकता है। मन शक्ति है जिससे वह क्षण भर में सुमेरु पर्वत, सम्मेद शिखर और नंदीश्वर द्वीप की वंदना कर सकता है। मन चिंतामाणि है जिससे वह मन चाही वस्तु का ध्यान कर सकता है। मन के पास सूरज जैसा उजाला है, जिसे वह आत्मा में भर सकता है। मन के पास चंद्रमा जैसी ठंडक भी है जिससे वह शांति प्राप्त कर सकता है। वर्तमान की परिभाषा में मन वह उत्कृष्ट मशीन है जिससे मोक्ष जाने वाला माल तैयार किया जा सकता है।

मन के विषय में मूल ग्रंथ षट्खंडागम में क्या लिखा है मन रहित और मन सहित जीव मिथ्यात्व का कितना बंध करता है। एकेन्द्रिय जीव मिथ्यात्व का अधिक से अधिक एक सागर का बंध करता है, दो इन्द्रिय 25 सागर का, तीन इंद्रिय 50 सागर का, चार इंद्रिय 100 सागर का, मन रहित पंचेन्द्रिय 1000 सागर का, तथा मन सहित पंचेन्द्रिय 70 कोड़ा कोड़ी सागर मिथ्यात्व का बंध करेगा। अर्थात मन आते ही जीव करोड़ो गुना पापों का बंध कर सकता है। लेकिन डरने की बात नहीं है। मन यदि बंध करवा सकता है तो बंध काटने की ताकत मन के पास है यदि व्यक्ति दुश्मन से लड़ना जानता है तो कर्मों से भी लड़ना जानता है। जितने तीर्थंकर या कोई भी आत्मा परमात्मा बनी हैं तो वह मन की शक्ति से ही बनी हैं। वही मन आपको भी मिला है। मन को सवारने पर हम मन चाहा फल प्राप्त कर सकते हैं।

इंसान का शरीर कुछ नहीं है जो कुछ विशेषतायें हैं वे सब मन की ही हैं। मन ही चोर डाकू है, मन साधु है, मन ईमानदार है, मन ही बेईमान है, मन

ही इंजीनियर है, मन ही डाक्टर और व्यापारी है, जाति पाति भी मन से बंटी हुई है। बड़ा होगा तो मन से होगा छोटा होगा तो मन से होगा। मूर्ख या पागल होगा तो मन से होगा और विद्वान होगा तो मन से होगा। अच्छे विचार और बुरे विचार दोनो मन में ही होते हैं। मन ही रत्नों का खजाना है और मन ही कंकड़ पत्थर इकट्ठे करता है। दुनिया में सबसे बड़ी ताकत मन है। नियम धरम पूजा माला मन के लिये ही की जाती है। दुनिया के सारे धर्म केवल मन को सुधारने के लिये हैं। ज्ञान और ध्यान के माध्यम से मन को स्थिर करके मन को संस्कारित किया जाता है। बिना ज्ञान और ध्यान के पशु और मनुष्य में कोई अंतर नहीं है। शरीर मकान है और मन उसमें रहने वाला है। जरूरी नहीं कि अच्छे मन में अच्छा व्यक्ति निवास करता है। व्यक्ति अच्छा ना हो तो उसे सुधारा जा सकता है। ऐसे ही शरीर में रहने वाले मन को सुधारते ही सब कुछ सुधर जाता है।

मन के द्वारा किया गया विचार कर्म बंध में सबसे बड़ा कारण है। वचन का 5% शरीर का 5% और मन का 90% फल मिलता है। कर्म बंध होता है। क्रोध मान माया लोभ भी मन के विषय हैं। ये दुष्ट कषाय हमारे मन में निवास करती हैं। ये कषाय ही मन के माध्यम से आत्मा को नर्क और पशु गति भेज देती है। अतः इस मन को सुधारने के लिये आवश्यक है णमोकार मंत्र को मन मे स्थित किया जाये।

णमोकार मंत्र को सबसे बड़ा मंत्र कहा जाता है, सुना तो है पर प्रैक्टीकल नहीं किया। शास्त्रो में णमोकार मंत्र के लिये कहा है कि यदि भाव णमोकार मंत्र पढ़ा जाये ध्यान से अधिक गहराई में पहुंचा जाये तो केवलज्ञान की प्राप्ति भी हो सकती है। णमोकार का फल इससे बड़ा और क्या हो सकता है। णमोकार मंत्र जब सीधा मोक्ष का कारण हो सकता है तो संसार के सुख तो बहुत छोटी चीज हैं। इस णमोकार मंत्र को पढ़ते-पढ़ते काले बाल से सफेद बाल हो गये पर अभी णमोकार मंत्र को भाव से पढ़ना नहीं सीख पाये। संसार के सारे काम भाव और दिल से होते हैं पर मंत्र को ऊपर-ऊपर से ही पढ़ा जाता है। भाव से पढ़ा गया णमोकार मंत्र हजारो पाप को काट देता है।

कैसे पढ़े णमोकार मंत्र?

किसी भी किताब में पहले भूमिका होती है, किसी भी कार्य को करने के

पहले भूमिका बनाई जाती है। अचानक किये कार्य में सफलता मिले यह पूर्ण संभव नहीं होता अतः जाप करने के पहले भूमिका बनाये यानि अपने मन को पहले शांत करें। मन को शांत करने में आसन की प्रमुख भूमिका है कि आप किस आसन में बैठे हैं। ध्यान एकाग्रता का आसन पद्मासन है जैसे भगवान की मुद्रा होती है। इस आसन में मन को एकाग्र करने में देर नहीं लगती है। इस आसन से ध्यान की सिद्धि करके मोक्ष तक पहुंचा जा सकता है। अतः सर्व प्रथम पदमासन लगायें फिर हाथों को सावधानी से रखें तथा ओंकार ध्वनि तीन, पांच, सात बार करें फिर जिन तीर्थों पर आप गये हैं उन्हे याद करके भाव नमस्कार करें। पदमासन न लगा सके तो अर्द्ध पदमासन लगाले।

इतना करने पर आपका भटकता हुआ चंचल मन शांत होगा। जैसे तालाब के हिलते पानी में तस्वीर नहीं दिखती वैसे ही चंचल मन से परमात्मा को याद नहीं किया जा सकता। इतना सब कुछ करने पर मन शांत हुआ है। अब पदस्थ ध्यान में णमोकार मंत्र पढ़े। पदस्थ यानि पद पर ध्यान लगाना। णमोकार मंत्र में पांच पद हैं। पहला पद ''णमो अरिहंताणं''। आँख बंद करके अपने सामने दीवार बनाये और उस पर णमो अरिहताणं लिखें, उसके नीचे ''णमो सिद्धांण'' उसके नीचे णमो आइरियाणं उसके नीचे णमो उवज्झायाणं उसके नीचे णमो लोए सव्वसाहूणं अर्थात पूरा णमोकार मंत्र लिख लिया। अब आपको जो णमोकार मंत्र याद है उसे ना पढ़े। जो आपने कल्पना में लिखा है उसे देखकर पढ़े। आपको णमोकार मंत्र याद है ये भूल जाओ। मंत्र देखकर ही पढ़ना। इसे क्रम पर ले आये। और णमोकार मंत्र श्रद्धा से पढ़ते जायें इस तरह पढ़ा गया णमोकार मंत्र हजारों पापों का नाश कर देता है।

रूपस्थ ध्यान में णमोकार मंत्र

णमोकार मंत्र में जिन महान आत्माओं को नमस्कार किया है, उनके रूप को ध्यान में रखकर मंत्र को पढ़ना रूपस्थ ध्यान है। रुपस्थ ध्यान के पहले भूमिका अवश्य बनाये, जो पहले पदस्थ ध्यान में बताई थी। कमर सीधे करके आसन लगाने पर ध्यान ज्यादा देर तक स्थिर रह सकता है। आंखे बंद होना आवश्यक है। रूपस्थ ध्यान में णमोकार मंत्र में पहले अपनी कल्पना में एक समवशरण की रचना करें। उस समवशरण के बीच में कमल के ऊपर अरिहंत भगवान को विराजमान करें। उसी समवशरण के ऊपर चंद्राकार बना के उसमें सिद्ध परमेष्ठी के आकार को विराजमान करें। समवशरण की सभाओं में

आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठी को विराजमान करें। फिर क्रम से णमो अरिहंताण में, अरिहंत भगवान को नमस्कार करें, णमों सिद्धाण में सिद्ध भगवान को णमो आइरियाणं में आचार्यो को णमो उवज्झायाणं में उपाध्यायो को और णमो लोए सव्व साहूणं में सर्व साधुओं को नमस्कार करें। और इस क्रम को लगातार करके पूरी माला भी कर सकते हैं। इस ध्यान को करने में जो आंनद आयेगा, वह संसार की किसी भी वस्तु में नहीं मिल सकता।

दूसरे तरह से सामान्य से ध्यान में आंख बंद करके पांच कमल बनाये और जो क्रम से ऊँचे नीचे हो, और उन पर अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साध ु परमेष्ठी को विराजमान कर उन्हें देखते हुये णमोकार मंत्र पढ़ें। अत्यधिक आनंद आयेगा। इस ध्यान से णमोकार मंत्र पढ़ने पर अनंत पापों का नाश होता है।

तीसरा आप कमल की रचना करे पांच पंखुड़ियो वाला उस पर णमोकार मंत्र लिखकर उस पर ध्यान लगायें। इस तरह अलग-अलग तरह से णमोकार मंत्र पढ़ने पर मन एकाग्र होता है और पापों का नाश होता है। कहा जाता है कि णमोकार मंत्र का ध्यान लगाने पर केवल ज्ञान हो जाता है। ध्यान पूर्वक णमोकार मंत्र पढ़ने पर और भाव णमोकार को आत्म सात करने पर ध्यान लगाने की अधिक जानकारी के लिए आप ज्ञानार्णव ग्रंथ पढ़ें आनंद आयेगा।

बड़ा ही महत्व है

जीवन में सुधार का
प्रभु के आधार का,
मंत्रों में णमोकार का
बड़ा ही महत्व है

मनुष्यों में वृद्ध का
घी में शुद्ध का
णमोकार में सिद्ध का
बड़ा ही महत्व है।

राही में पंथ का
धरती पर संत का
णमोकार में अरिहंतका
बड़ा ही महत्व है।

भारत में आर्य का
स्कूल में प्राचार्य का
णमोकार में आचार्य का
बड़ा ही महत्व है।

करने में उपाय का
पापो से बचने के लिये स्वाध्याय का
णमोकार में उपाध्याय का
बड़ा ही महत्व है।

मेवे में काजू का
चमत्कार में जादू का
णमोकार में साधू का
बड़ा ही महत्व है।

लेने में मौन का
बोलने में टोन का
मंत्रों में ओम का
बड़ा ही महत्व है।

समाज में कमेठी का
उत्तर प्रदेश में अमेठी का
वंदना में पंच परमेष्ठी का
बड़ा ही महत्व है।

गर्मी में ताप का
टेलर में नाप का
णमोकार की जाप का
बड़ा ही महत्व है।

शरीर में जान का
रहने में मकान का
णमोकार के ध्यान का
बड़ा ही महत्व है।

लिखने में तख्ती का
दीप में ज्योति का
णमोकार की शक्ति का
बड़ा ही महत्व है।

33

भीड़ का संबंध सत्य से नहीं होता, आकर्षण से होता है।

अक्सर लोग भीड़ से बहुत प्रभावित होते हैं। रास्ते में कही जा रहे हैं और रास्ते के किनारे भीड़ लगी है तो लोग गाड़ी रोक कर उतर कर देखते हैं, क्या हुआ। लोगो को लगता है भीड़ है तो कुछ ना कुछ जरूर होगा, वरना लोग इकट्ठे क्यों होते। कहा भी है-

भीड़-भीड़ को खींचती हैं।
पैसा पैसे को खींचता है।

कहीं भीड़ दिखे और विचार आये बिना रह जाये उस तरफ खिचें बिना रह जाये ऐसा बहुत मुश्किल है। भीड़ कही भी हो सकती है। टॉकीज में देखिये वहां भी भीड़ मिल जायेगी। डा. के यहां लाइन लगी मिल जायेगी, ज्योतिषी के यहां भी भीड मिल जायेगी। स्कूल कॉलेज भीड से भरे पड़े हैं। जिस स्कूल में बच्चे ज्यादा हो आपके हिसाब से वह अच्छा स्कूल है। आपस में चर्चा करते हैं उसका बच्चा उस स्कूल में पढ़ता है, फलाने का बच्चा उसमें पढ़ता है। इसीलिये मैं भी अपने बच्चे को वही पढ़ाऊँगी। खींचती है भीड, इंसान को उसके रोम रोम को।

लोग शिखर जी जाते हैं। एक बार एक व्यक्ति शिखर जी से लौटकर आये और बोले पिछले बार शिखरजी गया था तब ज्यादा अच्छा नहीं लगा। बिल्कुल भीड़ नहीं थी मात्र 25-50 लोग पहाड़ पर थे। वंदना करने में मजा ही नहीं आया। लेकिन इस बार तो होली पर गया था। कमरा भी नहीं मिला, बरामदे में सोना पड़ा। और भीड़ पहाड पर इतनी थी कि चलना मुश्किल हो रहा था। लेकिन बहुत अच्छा लगा। आगे उसने बताया माताजी चंदा प्रभु भगवान के दर्शन में लाइन लगानी पड़ी। एक घंटे में नंबर आया और पार्श्वनाथ भगवान

के दर्शन में तीन घंटे इंतजार करना पड़ा। बाकी टोंको पर भी बड़ी मुश्किल हो रही थी दर्शन करने में। लेकिन आनंद काफी आया और सोचा है कि अब हर साल इन्ही दिनों जाया करूँगा, इस समय में भीड़ अच्छी होती है।

इस व्यक्ति की बात पर चिंतन करें कि इस व्यक्ति को पहली बार में शिखर जी की वंदना बड़ी आसानी से हुई, अर्थात भगवान के चरण छूने में मेहनत नहीं लगी या सरल भाषा में कहे तो भगवान अकेले में मिल गये, तो उस व्यक्ति को मजा नहीं आया। वही दर्शन भीड में मिले तो मजा आया मैं पूछना चाहती हूँ उन व्यक्ति से कि वह शिखर जी के दर्शन करने गया था या भीड़ के। यदि शिखरजी के दर्शन करने गया था तो पहली बार में अच्छा लगना चाहिये। वरना कहना तो यही पड़ेगा कि उसे भीड़ के दर्शन में मजा आया। भीड़ जहां जाती हैं, लोग बिना समझे बिना भावों के वहां भागते हैं। भीड़ को देखते ही लोग उदेदश्य भी भूल जाते हैं। और भीड़ के पीछे भागते है। शिखर जी जाना बड़ा पुण्य का काम है, पर वहां जाकर करना क्या है यदि ये नहीं पता तो भीड़ से ही प्रभावित रहोगे। जितने लोग शिखर जी जाते हैं वदंना कैसे करनी है आधे लोगो को भी नहीं आता। चक्कर लगा कर वापस आ जाते हैं। कोई तीर्थ स्थान हो या पर्यटक स्थल, भीड़ तभी होगी जब भीड़ होगी।

आज के प्रचार प्रसार ने इस पर और ज्यादा असर डाला है। बच्चे वहीं चीज खायेंगे जो टी. वी. पर दिखाई जा रही है। भीड़ का संबंध सत्य से नहीं है। भीड़ का संबंध आकर्षण है। जहां आकर्षण होगा भीड़ वही खिंच जायेगी। भीड़ ज्ञानियों की नहीं अज्ञानियों की होती है। भीड को ये नहीं पता कि उसे क्या सुनना है, जो सुनाया जा रहा है बस अच्छा लगना चाहिये, प्रभावक होना चाहिये। प्रभावक से प्रभावित होता है। जितने नये धर्मो का प्रादुर्भाव हुआ है वह सब वाणी के प्रभाव का ही कारण है।

एक बार बृहस्पति और लक्ष्मी में विवाद हो गया कि लोग मुझे चाहते हैं। दोनो का विवाद बढ़ गया। विष्णु जी के पास पहुंचे। उनसे निर्णय करने को कहा। उन दोनों को छह माह का समय दिया और कहा जाओ धरती पर अपनी महत्ता सिद्ध करो। पहले बृहस्पति पहुंचे वे बहुत ज्ञानी थे। अतः उन्होने प्रवचन करना प्रारंभ किया। धीरे-धीरे प्रवचन सुनने वालो की संख्या बढ़ने लगी। लोग वृहस्पति के पीछे-पीछे भागने लगे। वे जहां जाते वहां सभी प्रवचन सुनने पहुंच जाते। अपार जन समूह पीछे-पीछे रहने लगा वृहस्पति को लगा कि ये भीड़ मेरे

पीछे है। छह महीने में कुछ समय बाकी था। अपार भीड़ वृहस्पति का प्रवचन सुन रही थी। पीछे एक बुढ़िया, सोने के कटोरे में भीख मांगने आई। लोगो की नजर तब पड़ी जब उसने कहा कि ये कटोरा उसको दूँगी जो मुझे पानी पिलायेगा। भीड़ में 10-20 उठकर उस अम्मा के पीछे पहुंच गये। पीछे की भीड़ देखकर सामने मंच से अध्यक्ष मंत्री भी पहुंच गये। देखे क्या हुआ। बुढ़िया कह रही थी कि मेरी झोली में बहुत कटोरे है सोने के, मै मंच से बैठकर बांटूगी। अध्यक्ष मंत्री उसके हाथ जोड़ने लगे कि चलो अम्मा मंच पर चलो। बुढिया बोली पहले उस बूढे को मंच से हटाओ तब मंच पर आऊँगी। अध्यक्ष मंत्री पहुंच गये वृहस्पति के पास। बाबा जी आपके प्रवचन बहुत सुन लिये आज प्रवचन रहने दो, आज आप आराम करो। वृहस्पति ने कहा आज प्रवचन क्यों छोडू छह महीने से कर रहा हूँ। बुढ़िया के कारण छोड़ दूँ। अध्यक्ष मंत्री बोले महाराज आप हाथ जोड़ने से मान जाओ वरना आपका तखत हम उठा कर कमरे में रख देगें। पीछे से बुढ़िया (लक्ष्मी) ने वृहस्पति को आंखे मटका के बताया। देख लिया भीड़ किसको चाहती है।

कहानी का सार यह है कि भीड़ का अपना कोई उद्देश्य नहीं है जहां उसके स्वार्थ की पूर्ति होती है वह वही भागने लगती है। उसे मोक्ष, आत्मा, ज्ञान से कुछ लेना देना नहीं है। अज्ञानी की भीड़ स्वार्थ से जुडी है सबसे पहला स्वार्थ है धन का आकर्षण, जहां विदेश में जाना स्वीकार है। दूसरा आकर्षण रूप अर्थात जिसका रूप दिल को भा जाये चाहे मिथ्या दृष्टि क्यों ना हो, वही भागेगा फिल्मी कलाकारो के पीछे आज के लोग दीवाने है। खाना पीना भूल जाये यदि वो हमको मिल जाये तो। शहर में एक तरफ साधु आया हो, दूसरी तरफ फिल्मी कलाकार आया हो तो साधु के पास दो-चार लोग ही मिलेंगे और कलाकार के पास हजारों की भीड़ मिल जायेगी। उस समय साधु संत बाधा प्रतीत होंगे।

भीड इंसान तो क्या जानवर के पीछे भी मिल सकती है। एक बार हम विहार कर रहे थे, एक जगह एक कुत्ते के पीछे सैकड़ो व्यक्ति भाग रहे थे। हम ने पूछा ये क्या हो रहा तो उन्होने बताया कि कल यहां चोरी हुई थी ये विशेष कुत्ता है चोरों का पता लगा रहा है। अर्थात कुत्ते भी भीड़ इकट्ठी कर सकते हैं। घोड़ो की रेस देखने बहुत दुनिया जाती है। और लाखो रूपये का जुआँ भी खेला जाता है। चिड़िया घर में भी भीड़ होती है। लाखों लोग

जानवरों को देखने जाते है। अर्थात् भीड़ से धर्म का संबंध नहीं।

अर्थात् ये आवश्यक नहीं है कि जहां भीड है वहां सत्य होगा। और ये भी आवश्यक नहीं है कि जहां सत्य है वहां भीड़ जरूरी है। सत्य (धर्म) एकांत में भी पाया जा सकता है। धर्म को भीड़ की नहीं भाव की जरूरत है। भीड़ का धर्म उन्हें करना पड़ता जिनसे एकांत में धर्म नहीं होता है। एकांत साधना करने वाले भीड़ से भागते हैं फिर भी भीड में रहना पडे तो भीड़ में रह कर एकांत वास का अनुभव करते हैं। लिखने को तो बहुत लिखा जा सकता है पर इसको पढ़ कर आगे का चिंतन आप स्वयं करें तो ज्यादा अच्छा है।

34

जो काम भारत को स्वतंत्र करने में किया था, वही आत्मा के लिये करना है।

अंग्रेज जब भारत में आये थे, व्यापार लेकर आये थे। व्यापारी के रूप में आने वाले भारत में 200 वर्ष तक मालिक बन कर रहे। जिस समय अंग्रेज आये थे, उस समय भारत छोटे-छोटे राज्यों में बँटा था। हर राज्य का एक राजा होता था। वही अपनी प्रजा का पालन करता था। अंग्रेजो ने आकर व्यापार का प्रस्ताव रखा कुछ राजाओं ने सहर्ष स्वीकारा, धीरे-धीरे वे राजाओं के मित्र बन गये। जो राजा उनकी बात ना मानते, वे मित्र राजा के साथ मिलकर उनका राज्य छीन लेते। व्यापार की शर्त और मित्रता की आड़ में उन्होने शासन करना प्रारंभ कर दिया। धीरे-धीरे वे पूरे भारत में फैल गये। अब वे व्यापारी नहीं मालिक थे।

उन्होंने भारतवासियों को गुलाम बनाया ये सच है, पर गुलाम बनने में सहयोग करने वाले हमारे भारत वासी ही थे। घर में ही आग लग गई, घर के चिराग से अंग्रेज संख्या मे कम थे, हमारे कुछ भारतीयों ने उनकी गुलामी स्वीकार की और अपनों पर ही अत्याचार करवाया। भारत वासी बहुत भले और भोले प्राणी हैं। तथा कषायों की भी तीव्रता है, भाई ने कुछ नहीं दिया तो अपने ही भाई को अंग्रेजों से मिलकर मरवा दिया और अपनी ईर्ष्या की क्रोध की अग्नि में भाई को झोंक देंगे। इसके बदले चाहे सारी जिंदगी अंग्रेजो की गुलामी करनी पड़े। उसमें ये खुश हैं, पर अपने भाई को क्षमा करना नहीं आया। राजा पड़ौसी राजा से ईर्ष्या करते थे, अंग्रेजो के साथ मिलकर उनसे युद्ध करते थे। पड़ौसी राजा को मरवा कर राज्य अंग्रेजो को देते थे और अपना राज्य भी खो देते थे।

अंग्रेज आये तो बड़े प्यार से थे, पर लाखों को मारकर गये। विनाश करके गये, भारत को लूट के गये और भारत को तोड़ के गये, ताकि ये कभी शांति से न रह सकें। इतनी पीड़ा और इतना कष्ट देके गये, कि हर 15 अगस्त को हम

उसे याद करते हैं और इसी दुःख के साथ सुखी हो लेते हैं कि अब वे दुःख छूट गये, अब हम सुखी हैं।

अंग्रेजो की स्वतंत्रता की तरफ से तो हम सुखी हैं, पर कर्मों के कारण हम आज भी दुखी हैं। कर्म भी अंग्रेजो की तरह हैं, अर्थात् कर्म करते हुये पता नहीं चलता कि किन-किन कर्मों का आगमन हो गया, पर कर्म जब जाते हैं, तो बहुत पीड़ा और कष्ट देके जाते हैं जैसे अंग्रेजो के शासन करने में हमारे अपने वैसे ही कारण थे। बिना उनके अंग्रेजो का राज्य करना संभव नहीं था। ठीक वैसे ही कर्मों के आने में कारण-पुदगल नहीं जीव ही है। यदि जीव इस तरह के भाव न बनाये तो कर्म के बिना बुलाये कर्म नहीं आते, हम कर्मों को खुद ही बुलाते हैं, जब उनका शासन चलता है तो पराधीन होकर कर्मों को दोष देते हैं।

कर्मों को दोष देने की आवश्यकता नहीं है। जब तक शेर सोया है तब तक जंगल में पशु विचरण कर रहे हैं, जाग कर शेर की एक दहाड़ से सारे पशु भाग जायेंगे। ठीक ऐसे ही जब तक आत्मा सोयी है, तभी तक कर्म विचरण कर रहे हैं यदि आत्मा अपनी शक्ति को पहचान कर जीवन जिये, तो, कर्म भागते नजर आयेंगे। सर्व प्रथम आत्म जागरण हमें ही करना होगा। जब भारतीयों को महसूस हुआ कि ये हमारा देश है, और अंग्रेजो ने इस पर कब्जा कर रखा है, तब उन्होने क्रांति शुरू की। 1857 में क्रांति अपनो के कारण भारत को आजाद होने में 100 साल लग गये। सौ साल के बीच हजारों ने बलिदान दिया, मां ने अपने बेटे दिये, पत्नि ने पति दिया, और बहन ने भाई का बलिदान दिया।

हम स्वतंत्र हो सकते हैं, हमारी आत्मा कर्मों से स्वतंत्र हो सकती है। सर्व प्रथम हमें इस बात का अहसास होना चाहिये। फिर स्वतंत्रता के लिये जुनून, जोश, लगन चाहिये। जब तक बीमारी को बीमारी नहीं मानोगे तब तक इलाज कैसे करवाओगे। अतः परतंत्रता का अहसास रोम-रोम से होना चाहिये। शरीर का हर अंग कहे कि हमें कर्मों से स्वतंत्र होना है। जैसे भारत वासियों ने सोच लिया कि चाहे कितने कष्ट झेलने पड़े, पर अंग्रेजो को भगाकर रहेंगे। ठीक ऐसे आत्मा को सोचना होगा कि चाहे कितनी तपस्या करनी पड़े पर कर्मों को भगवाकर रहेंगे।

भारत को सौ वर्ष लगे स्वतंत्र होने में, क्योंकि अंग्रेज 100-200 साल से भारत में थे। पर ये कर्म अनंत काल से आत्मा पर कब्जा किये हैं, इसी लिये इनको भगाने में कई जन्म लग जायेंगे। सोते उठते बैठते जागते विचारों में गूँज होनी चाहिये कि मुझे स्वतंत्र होना है। और गूँज के साथ उतना ही पुरुषार्थ भी होना चाहिये।

भारत को स्वतंत्र करने में मेहनत तो लाखों लोगों ने की, पर सिस्टम से मेहनत करके स्वतंत्रता दिलाने का श्रेय महात्मा गांधी को मिला। स्वतंत्रता पाने के लिये युद्ध तो सौ साल किया, पर अंग्रेज नहीं भागे। तब महात्मा गांधी ने श्रीमद् रायचन्द्र जी के प्रवचन से मिली शिक्षा से देश को आजाद कराया। जैसे-

अहिंसा आंदोलन

सत्याग्रह

असहयोग आंदोलन

अहिंसा युद्ध से विपरीत स्थिति है। जैसे अग्नि और बरफ, अर्थात् अग्नि जलाकर नष्ट करती है और बर्फ गलाकर नष्ट करती है युद्ध अग्नि है और आंदोलन असहयोग आंदोलन बर्फ है जो काम अग्नि न कर पाये वो काम बर्फ ने कर दिया किसी को मारना नही पीटना नही गाली नही देना सत्य के रास्ते पर चलते हुऐ अहिंसा के साथ सहयोग किया और इसी अहिंसा ने बिना तलवार बिना बंदूक, बिना तीर धनुष और बिना तोपो के देश को आजाद करा दिया।

जिन सिद्धांतो से देश आजाद हुआ, उन्ही सिद्धांतो पर चलने से आत्मा कर्मों से स्वतंत्र हो सकती है। भगवान महावीर ने कहा है अहिंसा परमो धर्मः, अहिंसा ही परम धर्म है। ना दूसरो को सताओ, न खुद को सताओ। जब तुम खुद को नहीं सताओंगे तो तुम दूसरो को सता ही नहीं सकते हो। बस इस स्थिति में नये कर्मों का आना रूकता है, और पुराने कर्मों का झड़ना शुरु हो जाता है। सत्याग्रह आंदोलन, भगवान महावीर ने दूसरा व्रत बताया है, सत्य महाव्रत, सत्य अणुव्रत भाषा समिति अर्थात भाषा समिति से प्रारंभ करके सत्य महाव्रत तक पहुंचिये निश्चित ही स्वतंत्रता मिलेगी।

अंतिम है असहयोग आंदोलन अर्थात जिन-जिन कार्यो से अंग्रेजों को यहाँ रहने में सहयोग मिल रहा है, उन उन कारणों को बंद कर दो अर्थात् असहयोग कर दो बस अंग्रेज भाग जायेंगे। ठीक ऐसे ही जिन-जिन कारणों से कर्म आ रहे

हैं, उन्हें सहयोग करना बंद कर दो कर्म भाग जायेंगे। कर्मों के आने में कारण सबसे ज्यादा हमारी इंद्रिया हैं, स्वादिष्ट व्यंजन, रंगीन चित्रावली, रागमय संगीत, भोगोपभोग के साधन, खुशबू दार वस्तुऐं, बस इंद्रियों को इनके इस कार्य में सहयोग न करें, कर्म भागने शुरु हो जायेंगे।

ऐसे ही गांधी जी ने नमक आंदोलन चलाया था कि अंग्रेजो को नमक मत दो। इसी तरह इस जीभ को भी नमक मत दो, अपने आप सुधर जायेगी असहयोग आंदोलन एक शक्ति शाली बिना हथियार का हथियार है। ये कार्य आत्मा को स्वतंत्र करने में करना पड़ेगा। और आत्मा कर्मों से स्वतंत्र होकर आत्मा के राज्य को प्राप्त कर अनंत काल के लिये मुक्ति में विराजमान हो जायेगी।

बड़ा ही महत्व है

लिखने में खत का
मकान की छत का
देशो में भारत का
बड़ा ही महत्व है।

बच्चो में ताता का
घर में माता का
मिलने में स्वतंत्रता का
बड़ा ही महत्व है।

देने में दान का
ज्ञान में प्रमाण का
स्वतंत्र होने में बलिदान का
बड़ा ही महत्व है।

नापने में दोलन का
बच्चों के पालन का
अहिंसा में असहयोग आंदोलन का
बड़ा ही महत्व है।

आकाश में गृह का
कर्मों में निग्रह का
आंदोलन में सत्याग्रह का
बड़ा ही महत्व है।

हीरे की चमक का
सूर्य की दमक का
आंदोलन में नमक का
बड़ा ही महत्व है।

पूजने के लिये परमात्मा का
ज्ञान देने में महात्मा का
स्वतंत्र होने में आत्मा का
बड़ा ही महत्व है।

जंगल में घास का
साधुओं के चातुर्मास का
स्वतंत्र होने में प्रयास का
बड़ा ही महत्व है।

बात को बताने का
काम को जताने का
अपनी आत्मा को नहीं सताने का
बड़ा ही महत्व है।

आत्मा के निखरने का
खुशबू के बिखरने का
धर्म पुरुषार्थ करने का
बड़ा ही महत्व है।

होने में विश्रांत का
आत्मा के शांत का
जैन धर्म के सिद्धांत का
बड़ा ही महत्व है।

35

जिसका मन सुंदर, उसकी आत्मा सुंदर

सम्यक्‌दर्शन, सम्यकज्ञान और सम्यक्‌चारित्र ये रत्नत्रय हैं। प्रथम दर्शन द्वितीय ज्ञान तृतीय चारित्र है। इनका क्रम है। पहले श्रद्धा आती है तो सम्यक् दर्शन होता है, फिर ज्ञान है। विवेक आता है, तो सम्यक् ज्ञान होता है, फिर विवेक आया तो पापों से बचना प्रारंभ हो गया तो सम्यक् चारित्र आ गया। हम ज्ञान को प्रथम नम्बर पर मानते है कि ज्ञान होगा तो सब कुछ होगा पर भगवान महावीर कहते हैं कि श्रद्धा होगी तो ज्ञान प्राप्ति की भावना होगी, और श्रद्धा नहीं होगी तो अकेला ज्ञान अभिमान का कारण बनेगा।

कुछ मात्र जानने के लिये पढ़ते हैं, अर्थात उनके मन का विचार है कि शास्त्रों में क्या है यह जानना है। श्रद्धा नहीं होने के बावजूद उनका ज्ञान बहुत अच्छा हो जाता है। बड़े-बड़े ज्ञानी भी बन जाते हैं। पर वह ज्ञान मात्र अहंकार बढ़ाने में काम आता है। यह ज्ञान उन्हें प्रसिद्धि दिलाने के काम आता हे। श्रद्धा के बिना अकेला ज्ञान चरित्र तक नहीं पहुँचा सकता। अतः श्रद्धा का नम्बर पहला है ज्ञान का दूसरा। सच्चे देव शास्त्र गुरु के प्रति श्रद्धा होते ही जितना ज्ञान हो वह सम्यग्ज्ञान बन जाता है। मात्र णमोकर मंत्र ही क्यों न हो वह सम्यक् ज्ञान बन जाता है, ज्ञान भी मतिज्ञान श्रुत ज्ञान हो जाता है। लेकिन सम्यक् दर्शन नहीं है, तो ज्ञान भी कुमति कुश्रुत ही होगा, शुभ योग तो हो जाता है पर शुभ उपयोग नहीं हो पाता इसीलिये श्रद्धा से ही ज्ञान में समीचीनता है।

सम्यक् दर्शन ज्ञान होने के बाद ज्ञान की पॉवर बढ़ जाती है, सम्यक् दर्शन के बाद ज्ञान का दीप प्रज्ज्वलित हो जाता है। तब ज्ञान सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र दोनो विशेषता उत्पन्न करता है। ज्ञान बीच में बैठा है दोनो तरफ प्रकाश फेंकता है। सम्यक् दर्शन में मजबूती लाता है, और सम्यक् चारित्र की ओर आगे बढ़ाता हे। जैसे-जैसे ज्ञान में वृद्धि होती है वैसे-वैसे पापों से बचने का उपाय किया जाता है, तब गुणस्थान में वृद्धि होती है। पापो की निर्जरा

प्रारंभ हो जाती है। मन की स्थिरता बढ़ती है, श्रद्धा और ज्ञान चारित्र में वृद्धि करते हुए एक दिन मोक्ष महल में पहुंचा देते है।

छहढाला में कहा भी है-

समयक् ज्ञानी होय बहुरि, दिन चारित्र लीजे।
एक देश अर सकलदेशवसु भेद कहीजे।।

अर्थात् सग्यकज्ञान का कार्य ही संयम में आगे बढ़ाना है। यदि सम्यग्ज्ञान होते हुये विशुद्धि नहीं बढ़ी तो निश्चित ही पाप कर्म का तीव्र उदय है, हाथ में दीपक लेकर गड्ढे में गिरना जैसे है। सम्यग्ज्ञान हमें शास्त्र पढ़ने को प्रेरित करता है और द्रव्य की जिज्ञासा को जन्म देता है। मैं कौन हूँ जानने की आकाँक्षा पैदा करता है और उनका समाधान चाहता है। जड़ चेतन के भेद को जानता है।

जानना और देखना आत्मा का स्वभाव है। वर्तमान में मतिज्ञान और श्रुतज्ञान के कारण आत्मा, पांच इंद्रिय और मन के माध्यम से जानती और देखती है। अर्थात् स्पर्श माध्यम से बाहर के ठंडे गरम रूखे-चिकनें, कडे-नरम, हल्का भारी जानती है। रसना के माध्यम से बाहर के खट्ठा मीठा कड़वा चरपरा, कषायला स्वाद को जानती है। घ्राण (नाक) के माध्यम से सुगंध दुर्गंध को जानती हे, चक्षु (आंख) के माध्यम से सफेद, हरा, लाल, पीला, काला रंग को जानती हे। कर्ण के माध्यम से बाहर की आवाजो को जानती है। जानने वाली आत्मा है, इंद्रिया जानने में कारण हैं।

इंद्रिया केवल बाहर का ज्ञान करवाती है। यदि सम्यग्ज्ञान ना हो तो ये इंद्रिया, इंद्रिय भोग में भोगने की इच्छा पैदा कर दुर्गति में भेज देती हैं। और यदि सम्यग्ज्ञान है तो इंद्रियों पर संय रखके, आत्मा परमात्मा तक पहुँच जाती है। माध्यम इंद्रिया ही बनेगी। रसना को वश में करके स्वाद पर विजय पाना तथा कान श्रुत ज्ञान प्राप्त करने में सशक्त माध्यम है, कानो से उपदेश सुनकर अनेक जीव सम्यक् दृष्टि हुये हैं, शेर, हाथी, कुत्ता, बैल जटायु आदि। धर्म करने में कानो का अत्यधिक महत्व है। आंखे भी बड़े काम की चीज हैं, प्रभु का दर्शन यदि आत्मा के भावो से कर लिया तो, ''जिन दर्शन से निज दर्शन'' होने से देर नहीं लगेगी। देव दर्शन भी सम्यक दर्शन में कारण है। स्वाध्याय करके आत्म ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, आँख भी हमें धर्म करवाने में अत्यंत उपयोगी है। मुख से प्रभु भक्ति करके, धर्म चर्चा कर के, पृच्छना करके अपने आत्म ज्ञान में

वृद्धि की जा सकती है। अतः यह मुख भी हमें धर्म करने में सहायक बन सकता है। हमारी इंद्रिया, हमें धर्म मार्ग में आगे बढ़ा सकती हैं, लेकिन इंद्रियों को चलाने वाला मन साथ होना चाहिये, पांचो इंद्रियां दिखती हैं पर मन नहीं दिखता। और मन ही आत्मा के सबसे निकट है। यदि मन चाहे तो दिला दे। इंद्रियों से पूर्व मन संस्कारित करना आवश्यक है।

मन ही प्रवचन सुनेगा, मन ही स्वाध्याय करेगा, मन ही पापों से बचायेगा, मन ही प्रभु भाव करवायेगा, मन ही प्रभु दर्शन करायेगा, मन मंदिर ले जायेगा। मन धर्म चर्चा करायेगा, मन सेवा पूजा करायेगा। इंद्रियाँ तो माध्यम हैं, करना तो आत्मा को है, जिसका मन सुन्दर उसका जीवन सुंदर, जिसका जीवन सुन्दर उसका आचरण सुन्दर जिसका मन सुन्दर उसकी आत्मा सुन्दर।

बड़ा ही महत्व है

चंद्रमा में गुरुत्वाकर्षण का
कला में आकर्षण का
जीवन में सम्यक् दर्शन का
बड़ा ही महत्व है।

मंदिर में भगवान का
मिलने में सम्मान का
होने में सम्यग्ज्ञान का
बड़ा ही महत्व है।

मनुष्यों में मित्र का
सुधरने में चरित्र का
होने में सम्यक् चारित्र का
बड़ा ही महत्व है।

क्रोध के शमन का
पापों के दमन का
सुधारने में मन का
बड़ा ही महत्व है।

शांति धारा में झारियों का
जंगल में झाड़ियों का
धर्म करने में इंद्रियों का
बड़ा ही महत्व है।

नाम में अनुपमा का
देने में उपमा का
हमारी अपनी आत्मा का
बड़ा ही महत्व है।

36

संसारिक सुख का दूसरा नाम छोटा दुख है।

संसारी प्राणी सुख को न जानता है ना मानता है। सांसारिक सुख को समझना अत्यंत कठिन है। और जिसकी समझ में आ जाये वो घर में ठहर ही नहीं सकता है। वह सच्चे सुख की खोज में निकल पड़ता है, मोह माया के बंधन को तोड़ कर, राग द्वेष के जाल को तोड़ कर। व्यक्ति को, मछली को फंसाने वाला जाल आंखो से नजर आता है, मकड़ी का जाल भी नजर आता है पर यह मोह माया का जाल राग द्वेष का जाल नजर नहीं आता है। पक्षी और मछली जाल से निकलने के लिये छटपटाते हैं, पर मनुष्य मोह माया के जाल से निकलने के लिये कहीं से कहीं तक तैयार नहीं है। और उस जाल को इतनी जोर से पकड़ रखा है कि उसे केवल मृत्यु ही छुड़ा पाती है। यमराज ही आता है तुम्हें लेने तभी उस जाल से मुक्ति मिलती है। किन्तु जाल बनाने की आदत इतनी पड़ चुकी है, कि अगले जन्म में जाकर दूसरा जाल बनाना शुरू कर देते हैं और जिन्दगी भर उसी जाल में घूमते रहते हैं। फिर यमराज आता है और अनंतकाल से यही कार्यक्रम चल रहा है।

भगवान को यह जाल उतना ही कष्टदायक लगा जितना पक्षी और मछली को लगता है। जैसे तोता को पिंजरे में काजू किसमिस खाने को मिलती है पर जिस दिन पिंजरा खुला मिल जाय वह भाग जाता है। लेकिन मोही प्राणी की स्थिति कबूतर के समान है, कबूतर का मालिक उसके दड़बे को गंदा रखता है, खाने को निकृष्ट अनाज बाजरा खिलाता है और हाथो से उड़ाता है किन्तु कबूतर लौट के उसी दड़बे में पहुंच जाता है। बस संसारी प्राणी की स्थिति कबूतर के समान है। किन्तु भगवान ने घर छोड़ने के बाद मुड़कर नहीं देखा। वे सत्य की खोज में ऐसे निकले कि सत्य का सूर्य प्रगट कर ही लिया।

संसारी प्राणी से यदि पूछा जाता है कि सुख क्या है तो उसका उत्तर होगा। बढ़िया भोजन की व्यवस्था हो जाये, रहने को बढ़िया कोठी मिल जाये, घूमने को गाड़ी मिल जाये, सुन्दर योग्य बच्चे हो, बच्चों के रिश्ते अच्छे परिवार में हो जाये।

सोना चांदी हीरा मोती इकटठा कर लूँ। संपत्ति का भंडार हो बस यही सुख की परिभाषा है। समाज में प्रतिष्ठा हो, संसार में नाम हो, जहाँ जायें वहां लोग खड़े हो जाये, गले का हार और सिर पर पगड़ी पहनाये बस यही सुख है इससे ज्यादा सुख संसार में हो नहीं सकता। स्वास्थ्य अच्छा हो, पत्नी सुंदर सुशील हो, और सुख क्या होता है? कुछ नहीं।

अब भगवान महावीर से पूछा जाये सुख क्या है? उनका उत्तर होगा कि जो आत्मा के ध्यान से प्राप्त होता है उसका नाम है सच्चा सुख। आप भ्रम में पड़ गये, सुख दो तरह का कैसे हो सकता है। हाथ पे हाथ धर के बैठना पांव पे पांव धर के बैठना, आँखे झुका कर बैठना इसमें कोई सुख मिल सकता है क्या? अरे सुख तो अच्छा-अच्छा खाने और देखने मिलता है। लेकिन तुम अच्छा-अच्छा खाते हो और अच्छा पहनते और अच्छा देखते हो फिर भी तुम्हारे चेहरे पर वो शांति सौम्यता नहीं दिखती जो भगवान को आत्मा के ध्यान करने पर उनके चेहरे पर दिखती है। खोज करो कि वास्तव में सुख क्या है?

सुख दो प्रकार है - 1. इंन्द्रिय सुख 2. आत्मिक सुख

1. **इंद्रिय सुख** - स्पर्शन (शरीर) रसना (जीभ) घ्राण (नाक) चक्षु (आँख) कर्ण (कान) ये पांच इंद्रियां है। इन इंद्रियो के अपने-अपने विषय हैं जिससे वह भोग और उपभोग करके सुख जैसा अनुभव करती है। जैसा तुम्हारी पसंद खाने में क्या है वह वस्तु मिल गई मन खुश हो गया। देखने में सूंघने में क्या पसंद है? सुनने में क्या पसंद है वह सब कुछ मिल गया। मन खुश हो गया। लेकिन वे सब चीजें कितनी देर सुख देती हैं। जैसे रसगुल्ला खाना पसंद है, कितने रसगुल्ले खा सकते है? एक दो तीन... सौ। नहीं सीमा है जो मजा पहले रसगुल्ले में आया पचासवाँ रसगुल्ला उल्टी करा के अंदर वाले को बाहर बुला लेगा। अर्थात रसगुल्ला स्थायी सुखी नहीं कर सकता। जैसे टी.वी. मोबाइल, या कम्प्यूटर या पिक्चर देखना अच्छा लगता है। लेकिन आप कितनी पिक्चर एक साथ देख सकते हो। आँख दुखने लगेगी, आंखे कमजोर हो जायेगी। और अधिक पिक्चर देखने के बाद पिक्चर देखने का मन ही नहीं करेगा। अतः ये सुख भी स्थायी नहीं है। इसीलिये परिवर्तित होता रहता है कभी आंख का सुख कभी कान का कभी नाक का कभी शरीर का कभी जिव्हा का। अनंत काल से इसी इंद्रिय सुख में भटकते रहते हैं। किसी भी पर्याय में रहे, किसी भव में रहने पर इंद्रिय सुख की खोज में भटकते रहे और अनंतकाल व्यतीत कर दिये।

वैसे इंद्रिय सुख को दुख के नाम से पुकारा जाये तो अतिशयोक्ति नही होगी। जैसे उबलता गरम पानी और दूसरा कम (गुनगुना) गरम पानी। उबलता गरम पानी हमारे लिये कष्ट का कारण है वैसे ही गुनगुने पानी से नहाना आदि काम करते है तो सुख का कारण है दोनों पानी गरम ही है। ठीक ऐसे ही एक रसगुल्ले में सुख मिलता है तो सौ रसगुल्लो का सुख नहीं दुख महसूस होता है। इस गणित को इंद्रियों के हर सुख के साथ लगाना चाहिये। यदि इस दृष्टि से देखा जाये तो इंद्रिय दुख का द्वार है, इस द्वार में अंदर प्रवेश करने वाला दुख ही पाता है, सच्चा सुख नहीं। यदि इंदिय सुख ही श्रेष्ठ होता तो भगवान महावीर जैसे ज्ञानी पुरुषों के पास कमी नहीं थी, फिर उसे क्यों छोड़ते। इंद्रिय सुख-दुख का द्वार है या इंद्रिय सुख छोटा दुख है, यह बात भगवान महावीर के समझ में आ गई ओर उन्होंने सच्चे सुख की प्राप्ति के लिये सांसारिक सुख को छोड़ दिया।

संसार के भोग और उपभोग करते समय जीव अनंत पापों का बंध करता है। इंद्रिय सुख की प्राप्ति के लिये वह क्रोध मान माया लोभ करता है। हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह इकट्ठा करता है। इनके बीच रहकर आत्मा की दुर्गति हो जाती है। संसार परिभ्रमण से मुक्ति प्राप्त नहीं कर पाता। इसी सुख के भ्रम में अनंत काल से दुख ही भोग रहा है। किसी ने कहा-

भोगो को इतना भोगा कि, खुद को ही भोग बना डाला।
साध्य और साधन का अंतर, मैने आज मिटा डाला।।

सांसारिक भोग सदा बाहर की वस्तु का करते हैं। बाहर की वस्तु क्षणिक नश्वर और अस्थायी है। इसके अलावा दुख दूसरे सुख का नाम है।

2. अध्यात्मिक सुख (आत्मिक सुख) - मन का दरवाजा दोनो तरफ खुलता है अंदर और बाहर। अर्थात जब मन इंद्रिय के साथ होता है तो भोग उपभोग में प्रवृत्ति करता है। और जब मन इंद्रिय से हटकर आँख बंद करके, आत्मा उस परमात्मा के ध्यान में लीन होता है तब सच्चे सुख का आनंद लेता है। जिसमें बाह्य वस्तुओं की आवश्यकता नहीं होती है। अर्थात कुछ लोग कहते है कि पैसे से धरम होता है पर सच्चे सुख वाला धरम बिना पैसे के ही होता हे। आज लोग धन से इतना जुड़ चुके हैं कि वे बिना पैसे का धरम या सच्चा धरम भूल चुके हैं। सच्चे धरम से ही सच्चा सुख मिलता है जिसमें भावों की विशुद्धि

होती है। जिसमें कषायों से रहित परिणाम होते हैं, जिसमें पाप और मोह माया रहित भाव होते हैं। यही धरम का फल है और यही धरम का वृक्ष है। संसार से दृष्टि हटाकर आत्मा और परमात्मा का गुणगान करना। जीव और पुदगल को जानना, द्रव्य और तत्वों को पहचानना धरम है। इन सब का ज्ञान, भगवान महावीर की वाणी, अर्थात आचार्यो के द्वारा लिखित शास्त्रों के स्वाध्याय से होगा अतः स्व का अध्ययन करने के लिये स्वाध्याय अवश्य करना चाहिये।

बड़ा ही महत्व है

कपड़ो में हुक का
शरीर में मुख का
आत्मा के सच्चे सुख का
बड़ा ही महत्व है।

मंदिर में जिनवाणी का
महिलाओं में साड़ी का
भगवान महावीर की वाणी का
बड़ा ही महत्व है।

बादल के पानी बरसाने का
सुबह-सुबह नहाने का
सच्चे सुख को पाने का
बड़ा ही महत्व है।

किताब में अध्याय का
पंचपरमेष्ठी में उपाध्याय का
करने में स्वाध्याय का
बड़ा ही महत्व है।

मन को मोड़ने का
कर्मों के पर्वत तोड़ने का
इंद्रिय सुख को छोड़ने का
बड़ा ही महत्व है।

लड़ाई में नहीं उलझने का
मानसिक रूप से सुलझने का
धर्म के मर्म को समझने का
बड़ा ही महत्व है।

अच्छे कार्य में प्रयोग का
मिलने में संजोग का
छोड़ने में भोग का
बड़ा ही महत्व है।

गर्मी में रूमाल का,
पूछने में हाल का
तोड़ने में मोह के जाल का
बड़ा ही महत्व है।

37

संकल्प नियम क्यों आवश्यक है

लोगो का कहना है कि जब रात्रि भोजन करते ही नहीं हैं तो त्याग क्या करना, संकल्प ले के क्या करना?

1. यदि आपका संकल्प नहीं है तो किसी के कहने पर जिद करने पर खाने की संभावना होती है। और नियम लेने पर सामने वाला भी जिद नहीं करता है।

2. आपके पसंद की वस्तु रात्रि में आपके सामने आ जाये और नियम नहीं है तो मन को समझाना मुश्किल हो जायेगा।

3. दरवाजा जब तक बंद नहीं होगा तब तक हवा आयेगी, आप चाहे तो भी ना चाहें तो भी, इसी तरह जब तक संकल्प नहीं लिया है तब तक कर्म आस्त्रव (आना) जारी है। आप खायें तो भी नहीं खायें तो भी।

एक महिला ने फटी साड़ी को तीन बार सिला अंत में जब वह सुई से ध ागा खींचती साड़ी वापस फटी की फटी रह जाती। वह परेशान, उसने किसी से पूछा तो पता चला कि उसने धागे में गांठ नहीं लगाई थी। इसी तरह जीवन की फटी चादर को सिलने के लिये व्रत नियम की गांठ लगाना आवश्यक है।

- आ. 108 स्वस्ति भूषण

बड़ा ही महत्व है

चंद्रमा में गुरुत्वाकर्षण का
कला में आकर्षण का
जीवन में सम्यक् दर्शन का
बड़ा ही महत्व है,

मंदिर में भगवान का
मिलने में सम्मान का
होने में सम्यग्ज्ञान ज्ञान का
बड़ा ही महत्व है।

मनुष्यो में मित्र का
सुधरने में चरित्र का
होने में सम्यक् चारित्र का
बड़ा ही महत्व है।

क्रोध के शमन का
पापों के दमन का
सुधारने में मन का
बड़ा ही महत्व है।

शांति धारा में झारियों का
जंगल में झाड़ियों का
धर्म करने में इंद्रियों का
बड़ा ही महत्व है।

नाम में अनुपमा का
देने में उपमा का
हमारी अपनी आत्मा का
बड़ा ही महत्व है।

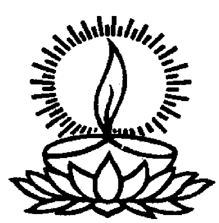

38

भाग्य सुधारने की सीढ़ी

1. ईश्वर एक है, हमने उसे नामों में बांटा। धरती एक थी, हमने उसे देशों में बाँटा। धर्म एक था, हमने उसे सम्प्रदायों में बांटा। मनुष्य एक था हमने उसे जातियों में बांटा। बंट-बंट कर इंसान ही इंसान के खून का प्यासा हो गया।

2. हिन्दू मंदिर जाते हें, मुस्लमान मस्जिद और ईसाई चर्च जाते हैं तीनों की स्पेंलिंग में 6 अक्षर हैं। हिन्दू गीता, मुस्लमान कुरान और ईसाई बाइबिल पढ़ते हैं तीनों की स्पेलिंग में पांच अक्षर हैं 6 में से 5 घटाये तो 1 बचा जिसका मतलब ईश्वर एक है, God is One

3. जो जिंदगी को जिंदा दिली से नहीं जीते उन्हे स्वर्गीय होना पड़ता है और जो जिंदगी को उत्साह आनंद, आत्मविश्वास से जीते हैं उनके लिये वही जीवन स्वर्ग बन जाता है।

4. याद रखें यदि कोई आपके सूट, घड़ी, साड़ी की सुदरता की तारीफ करे तो खुश मत होना, क्योंकि इसमें हमारी नहीं, बनाने वालों की तारीफ है। यदि कोई आपकी मधुरता, विनम्रता और सरलता की तारिफ करे तो समझना इसमें हमारी तारीफ है।

5. छोटी सोच वाले, फूल बरसाने वालों पर कांटे बरसाते हैं और बड़ी सोच वाले कांटे फेंकने वालों पर भी फूल बरसाते हैं।

6. घर में बेटी आराम करती है तो अच्छा लगता है, पर बहू आराम करने लग जाये तो हम झल्लाने लगते हैं, ऐसा क्यों बहू तो बेटी से ज्यादा काम करती है।

7. हम फोटो खिचवाने जब स्टुडियो जाते हैं तो फोटोग्राफर हमे न तो क्रीम लगाने कहता है न लिपिस्टिक, वह तो मिक्सिंग से भी हो जायेगी। पर मुस्कान को अवश्य कहता है सोचो अगर हम दो सकेन्ड मुस्कुराते हैं तो

फोटो सुंदर आती है अगर दोपल मुस्कुरायेगे तो जिंदगी सुंदर बन जायेगी।

8. एक घंटे की खुशी चाहते हैं तो झपकी लीजिये, एक दिन की खुशी के लिये पिकनिक पर जाइये, एक सप्ताह की खुशी के लिये हिलस्टेशन पर जाइये, एक माह की खुशी चाहिये तो शादी कर लीजिये, एक साल की खुशी चाहिये तो किसी अमीर की गोद चले जाइये और सारी जिन्दगी की खुशी चाहिये तो कार्य उत्साह से करना शुरु कर दीजिये।

9. आगे बढ़ने के लिये खूबसूरत चेहरा दस प्रतिशत काम आता है और खूबसूरत व्यवहार नब्बे प्रतिशत।

10. अच्छा व्यवहार हमें लोगों के दिलों में उतार देता है, वहीं घटिया व्यवहार लोगों के दिलों से उतार देता है।

11. अगर हमारे कारण किसी की आँखों में आंसू आते हैं तो समझना हमें अपने व्यवहार को सुधारने की जरूरत है। वही हमारे लिये किसी की आंखों में आंसू आते हैं तो समझना हम श्रेष्ठ व्यवहार के मालिक बन चुके हैं।

12. विश्वास शब्द सुनने में एक सेकेन्ड, समझने में दिन और जमाने में कई साल लग जाते हैं। पर यदि एक बार टूट जाये तो सारी मेहनत पर पानी फिर जाता है। इसीलिये कभी किसी का विश्वास ना तोड़े।

13. रिश्तों में कितनी ही खींचतान क्यों न हो पर उसे टूटने न दे, गंदा पानी भले ही पीने के काम ना आये, पर आग बुझाने के काम तो आ ही जाता है।

14. अमीर, ज्ञानी, नेता और संत यदि विनम्र रहेंगे तो लोग इन्हे बढ़ता देख कर खुश होंगे, अन्यथा जलने लगेगे।

15. तारीफ करने से दुश्मन मित्र बन जाता है और मित्र कन्नी काट लेता है।

16. मां के पेट से शरीर का निर्माण होता है, जीवन का नहीं। जीवन का निर्माण श्रेष्ठ संकल्प से होता है।

17. किसी का पर्स, मोबाइल या अंगूठी आपको मिली है तो उसे लौटा दें ऐसा करना आपके लिये तीर्थ यात्रा के समान पुण्यदायी होगा।

18. शरीर के सारे अंग स्वतः विकसित होते हैं पर दिमाग विकसित करना पड़ता है। जैसे पड़ी-पड़ी कुल्हाड़ी में जंग लग जाती है, वैसे यदि दिमाग का उपयोग न करें तो दिमाग भी जंगली हो जाता है।

19 सौ शास्त्र मिलकर एक दिमाग का निर्माण नहीं कर सकते, पर एक दिमाग यदि लग जाए तो सौ शास्त्रों का निर्माण कर सकता है।

20. दिमाग के तीन दुश्मन है, क्रोध, चिंता और ईर्ष्या। गुस्सा करने से बड़ों का भाग्य और बच्चों का दिमाग कमजोर हो जाता है।

21. अच्छा है भारत में स्कूल आठ बजे खुलते हैं, वरना भारत की जनता आठ बजे से पहले नहीं उठती।

22. जो व्यक्ति गुरु के क्रोध को भी आशीर्वाद के रूप में लेता है तथा गुरु के द्वारा किये गये विपरीत व्यवहार को कसौटी मानता है। वही व्यक्ति आगे चलकर पूरे देश में पूजा जाता है।

23. गुरु से ऊपर या बराबर पर न बैठें, गुरु से दो कदम पीछे चलें, जब भी बोले अदब से बोले, कुतर्क न करें व आवश्यक कार्य होने पर ही गुरु के पास बैठें।

24. अगर पति गुस्सा करेगा तो पत्नी सुबह 9 बजे घड़ी देखेगी ये गये क्यों नहीं, यदि पति शांत स्वभाव का होगा तो पत्नि शाम 6 बजे घड़ी देखेगी कि अभी तक आये क्यों नहीं।

25. अगर हम किसी की एक गलती माफ करेंगे तो भगवान हमारी सौ गल्तियां माफ करेगा।

26. बचपन में हजार बार लड़ते हैं तो भी रिश्ता खत्म नहीं होता और आज दो बार लड़ने की नौबत नहीं आती, क्योंकि पहली लड़ाई में ही रिश्ता खत्म हो जाता है।

27. दुनियां की कोई गाय अपने आप दूध नहीं देतीं जैसे गाय से दूध बूंद-बूंद कर निकालना पड़ता है वैसे ही भाग्य को पुरूषार्थ से जगाना पड़ता है।

28. हम संत समाज में होकर मुफ्त का नहीं खाते। जब दो खाते है तो उसके बदले में बीस गुना लौटा देते हैं। आप बुजुर्ग हैं, तो घर के छोटे-छोटे काम अवश्य करें। उपयोगी जीवन जीने वाले स्वस्थ रहते हैं।

29 जहां रावण ने अहंकारी कड़क जुबान से अपने सगे भाई विभीषण को खो दिया वही राम ने नम्र होकर मीठी जुबान से दुश्मन के भाई को अपना बना लिया।

30. रिश्ते टूटने के पीछे धन दौलत, जमीन जायदाद का कम, कड़वी जुबान का हाथ ज्यादा हुआ करता है।

31. बोलने से पहले अपने चेहरे और हाथों की स्थिति को ठीक करलें। पहले मुस्कुरा कर प्रणाम करें, फिर बोलें यह आपकी वाणी को हजार गुना प्रभावशाली बना देगा। बड़ों के आगे पहले श्री और बाद में जी लगायें।

32. शिष्ट, इष्ट, मिष्ट भाषा इंसान को औरों के दिलों में अमर कर देती है।

33. अगर आपके पीछे कुत्ता काटने दौड़े तो क्या आप उस समय भी यही कहेंगे, कि अभी मेरा दौड़ने का मूड नहीं है। हर समय पुरुषार्थ करें।

34. एकलव्य, शाहजहाँ, महात्मा गांधी ने अपने दृढ़ निश्चय से मंजिल को प्राप्त किया। आप भी दृढ़ निश्चय करें और आगे बढ़ें।

35. अपनी प्रतिभा को पेंसिल की तरह नुकीला बनाये। पेंसिल मे 5 गुण है 1. स्वनिहित शक्ति 2. समर्पण 3. सहनशीलता 4. सृजन 5. सुधार

36. मंजिले उनको मिलती हैं जिनके सपनो में जान होती है। पंखो से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है।

37. मां बाप की कमाई की बजाय स्वयं के बलबूते पर आगे बढ़ने की कोशिश करें।

38. हम चौबीस घंटे को पच्चीस तो नहीं बना सकते पर, काम अच्छी तरह से करके 24 घंटे में 25 घंटे का काम अवश्य कर सकते हैं।

39. दरी को युं ही पटक देगें तो ढंग से 3 लोग भी नहीं बैठ पायेंगे, और यदि अच्छे से बिछाकर बैंठेंगे तो दस लोग बैठ जायेंगे। जो हर चीज को व्यवस्थित रखते हैं, उन्हें रात 12 बजे भी चीज मिल जाती है लापरवाह को दिन में 12 बजे भी नहीं मिलती है। सुबह जल्दी उठने से स्वस्थ, धनवान और बुद्धिमान होते हैं।

40. रविवार के दिन बच्चों को पार्क में घुमाने की बजाय उन्हे योगाभ्यास,

प्रार्थना और ध्यान करवाएं। बिखरे सामान को व्यवस्थित रखना सिखाएं।

41. लड़की चली गई फैशन में, लड़का चला गया व्यसन में, परिवार आ गया टेंशन में।

42. हाथ पर बांधी जाने वाली घड़ी समय देखने के लिये नहीं समय पर चलने के लिये है। हर काम समय पर होना चाहिये।

43. बड़े सपनों को साकार करने के लिये बड़ी सोच चाहिये।

44. सकारात्मक सोच से स्वर्ग और नकारात्मक सोच से नरक का निर्माण होता है।

45. गांधी जी के तीन बंदर, बुरा मत देखो, बुरामत सुनो, बुरा मत बोलो चौथा बंदर बुरा मत सोचो।

46. मां बाप को आपने भगवान भरोसे छोड़ दिया, सोचो बचपन में उन्होंने हमें छोड़ दिया होता तो? बेटा बहू मां बाप के साथ रहें और उनकी सेवा करें तथा उनकी छोटी मोटी बातों को इग्नोर करें।

47. बीमार होकर दवाई खाना मजबूरी है पर बीमार नहीं होना समझदारी है। हितकारी भोजन, सीमित और ऋतुअनुसार भोजन से स्वास्थ्य उत्तम रहता है।

48. सुबह का भोजन राजा की तरह, दोपहर का भोजन प्रजा की तरह और शाम का भोजन रोगी की तरह होना चाहिये।

49. आरोग्य लाभ के लिये उगाना, पकाना, चबाना और पचाना चारों कार्य जरूरी है।

50. भोजन को पूरा चबा चबा कर खायें, अन्यथा दांतो का काम आंतो को करना पड़ेगा।

51. अकेले-अकेले खाने से भोजन भोग बन जाता है खिलाकर खाने से भोजन प्रभु का प्रसाद बन जाता है।

52. हम जितना महत्व पत्नी, पैसे और बच्चो को देते हैं उतना महत्व शांति को दे तो अवश्य ही प्राप्त होगी।

53. सत्ता, सम्पत्ति, परिवार में शांति होती तो भगवान महावीर ये सब कुछ छोड़ कर ना जाते।

54. भगवान पर भरोसा रखें, वह 99 द्वार बंद होने पर एक सफलता का द्वार खोल ही देता है।

55. नशा नाश की निशानी है। नशा दांत से लेकर आंत तक और दिल से लेकर दिमाग तक नुकसान ही नुकसान करता है। हम इन्हे जीते जी छोड़ दें वरना ये मौत बनकर हमें छोड़ देंगे।

56. शराबी बाप भी अपने बेटे को शराबी नहीं बनाना चाहेगा। पर शराबी दोस्त अपने दोस्त को शराबी बनाकर ही छोड़ेगा।

57. कपड़े बदलकर संत बनने में एक घंटा लगता है, पर स्वभाव बदल कर संत बनने में बीस साल कम पड़ जाते हैं।

58. जो खुद की गलतियों को नजर अंदाज करता है वह दूसरो की गल्तियों पर नजर गाड़ता है।

59. गुस्सा तीन प्रकार का होता है-

सात्विक - दूसरों को सुधारने के लिये

तामसिक - दूसरो को नीचा दिखाने के लिये

राजसिक - अहंकार दिखाने के लिये।

60. दूध का सार मलाई, और जीवन का सार भलाई।

61. ताली बजाओ रोग भगाओ। तलवा घिसो ऊर्जा जगाओ। हंसों मुस्कुराओ, सुस्ती हटाओं इस से जीवन प्रसन्न हो जाता है।

62. जो व्यक्ति प्रतिदिन बीस मिनिट योगासन, दस मिनट प्राणायाम बीस मिनट ध्यान और दस मिनिट प्रार्थना करता है वह तन मन और आत्मा तीनों से दुरूस्त रहता है।

63. महावीर के जमाने में शेर और गाय एक घाट पर पानी पीते थे, पर आज के समय में यदि सास और बहू एक थाली में खाना खा लें तो बहुत है।

64. ईट, चूने, पत्थर से जो बने उसे मकान कहते हैं पर सहयोग, आत्मीयता ईमादारी से बने उसे घर कहते हैं।

65. कोई एक गिलास चाय पिलाये या एक किलोमीटर की लिफ्ट दे तो हम

थैक्स कहते हैं। लेकिन जिसने जीवन दिया, जो जिंदगी भर हमारे काम आते हैं, ऐसे मां बाप को हम थैक्यू कहना भूल जाते हैं।

66. घर के बाहर कार है ये आपकी संपत्ति का परिणाम है, पर आपकी बहू आपको दादी सास को गर्मा गर्म खाना परोस रही है यह उसके संस्कारों का परिणाम है।

67. पिछले तीस सालो में भारत में समृद्धि तो आई पर लोगों ने संस्कारों पर ध्यान देना छोड़ दिया।

68. जो मिलता है विनम्रता से मिलता है। रावण के पास विनम्रता नहीं थी।

69. बच्चे इसीलिये कहना नहीं मानते कि वे लाड़ ज्यादा मिलने पर बिगड़ जाते हैं, अनुशासन अवश्य बनाकर रखें।

70. जो लोग बुढ़ापे में गणित के भाग की जगह योग, लाभ की बजाय भला और अर्जन की बजाय विसर्जन का मार्ग अपनाते हैं, उनका जीवन सत्यम् शिवम् सुन्दरम, बन जाता है।

71. किसी लायंस क्लव या रोटरी क्लब के सदस्य बनकर शहर की सेवा करना सरल है पर अपने घर में रहने वालों की सेवा करना मुश्किल है।

72. जो पति का कहना मानती है वह पत्नि, पर जो सास सुसुर का कहना मानती है वह महालक्ष्मी। पत्नि बनने के साथ महालक्ष्मी भी बनिये।

73. मछलियां तालाब में कीड़ो को खाकर जिन्दा रहती हैं। जब तालाब का पानी सूखता है तो मछलियां मरती हैं कीड़े उन्हें खाना शुरु कर देते हैं। बूढ़े मां बाप की सेवा दिल से करें वरना ....

74. जब भगवान को प्रणाम करवाना होता है तो वह मंदिर में जाकर बैठता है जब प्रणाम का परिणाम देना होता है तब वह माता पिता के रूप में आता है। इसलिये मंदिर बाद में जायें, संतो की सेवा बाद में करें, पहले माता पिता की सेवा करें।

75. जो जिंदगी को सार्थक नहीं करता उन्हे मौत मिलती है, और जो सार्थक करता है उसका मृत्यु महोत्सव होती है।

76. ऐसे मित्रों से बचकर रहना चाहिये। जो विपत्ति में डालकर गायब हो जाते हैं।

77. कहा है गधे के पीछे से, सांड के आगे से बचना चाहिये पर गलत मित्र के चारों ओर से बचना चाहिये।

78. जननी और जन्मभूमि की महिमा स्वर्ग से भी ज्यादा है। जिस धरती पर जन्म लेने मात्र से हम ऋणी हो जाते हैं, सोचो जिसने हमें जन्म दिया है उसका हम पर कितना ऋण होगा।

79. चाहे अवतार हो या पैगम्बर, सिकन्दर हो या सम्राट दुनिया में ऐसा कौन होगा जो मां के दूध का कर्जदार न बना होगा।

80. जैसे हम पत्नी और बच्चों को हाथ खर्चा देते हैं, वैसे ही अपनी कमाई का एक हिस्सा बिना मांगे माता पिता को समर्पित करें।

81. जो माता पिता को प्रतिदिन प्रणाम करता है, उसके ग्रह गोचर सदा अनुकूल रहते हैं।

82. सप्ताह में एक दिन सभी माता पिता के साथ खाना खायें, और अपने हाथों से उन्हें रोटी चूरकर खिलायें। साल में एक बार तीर्थ यात्रा ले t k, sA ft ud sekr k fi r k gSos 2½% हिस्सा सत्कर्म में खर्च करें।

83. ललाट पर लगाया तिलक हमें इस बात की प्रेरणा देता है कि हम मंदिर के बाहर भी प्रभु की आज्ञा को शीश पर धारण करेंगे।

84. बहू ने आपके बेटे का घर बसाने के लिये अपना घर छोड़ा, पहनावा छोड़ा, जाति बदली और बहुओं से कहा कि सासु मां ने आपके सुहाग को पालपोस कर बड़ा किया, तो क्या आप एक दूसरे के लिये थोड़ा दिल बड़ा नहीं कर सकते।

85. बहू पीहर की मां को भूले और अपनी सास में मां देखना शुरू करे सास ससुराल गई बेटी को भूलकर अपनी बहू में बेटी देखना शुरू करे, अपने कत्तव्यों को निभाये तो घर अपने आप स्वर्ग बन जायेगा।

86. मंत्र को किसी ताम्र पत्र, या भोज पत्र पर साकार करे तो वह यंत्र बन जाता है और मंत्र अंको से जुड़ जाए तो तंत्र बन जाता है।

87. मंत्र से मंत्रित पानी दवाई का काम करता है।

88. अगर किसी सुखी आदमी को देखकर हम सुखी और दुःखी को देखकर

दुखी होते हैं, तो समझना हमारा इंसान के रूप में जन्म लेना सार्थक हो गया।

89. जैसे छोटे से अंकुश से हाथी वश में हो जाता है, वैसे तपस्या के द्वारा तन और मन वश में किया जा सकता है।

90. झूठ न बोलना वाणी का तप है, दूसरों के काम आना काया का तप है। किसी की सोने की अंगूठी मिलने पर लौटा देना, मन का तप है। बड़े बुजुर्गों के आने पर खड़ा होना विनय तप है, अच्छी किताबों का पढ़ना स्वाध्याय तप है, गलती हो जाने पर माफी मांगना प्रायश्चित तप है। आती जाती श्वांसो को देखना ध्यान तप है, मच्छर काटने पर समता रखना कार्योत्सर्ग तप है।

91. प्रायः विद्यार्थी को परीक्षा में, अमीर को बीमारी में, व्यापारी को घाटे में, गरीब को भूख लगने पर, चोर को पकड़े जाने पर, नेता को चुनाव आने पर भगवान की याद आती है। संकट में याद करने पर वह हमारे संकट हर लेता है। काश हम भगवान को हमेशा याद करना शुरु कर दे तो.....

92. जैसे हजार के नोट को चाहे मोड़ दो, सड़क पर फेंक दो, मिट्टी में मिला दो, फिर भी उसकी कीमत कम नहीं होतीं पर उसके टुकड़े हुये कि उसकी कीमत कम हो जाती है। वैसे ही जो परिवार, समाज, धर्म और राष्ट्र संगठित रहेगा वह सबके लिये मिसाल रहेगा अथवा उसका अस्तित्व घूमिल हो जायेगा।

93. यह कितनी गजब की बात है कि व्यक्ति जिनके साथ मात्र तीन साल रह लेता है उन्हे अपना मानने लग जाता है, और जिन मां बाप, भाई बहनों के साथ तेईस साल रहता आ रहा है उन्हे अपना मानना भूल जाता है।

94. रविवार को भाई, भाई के यहां भोजन करे। भोजन करने का संकल्प लें।

95. धरती को देखे तो सोचें एक दिन मिट्टी में मिल जाना है, आकाश को देखे तो सोचें एक दिन, ऊपर चले जाना है, फिर किस बात का अहंकार और बैर

96. घर में परिवार में रहन की कला राम से सीखो, जीवन में उन्नति को खोलने के पाठ कृष्ण से सीखें, साधना और संसार के बीच संतुलन साधने का मार्ग बुद्ध से सीखें और जीवन में मुक्ति पाने का रास्ता भगवान महावीर से सीखें।

97. जिसके जीवन में राम जैसा त्याग आ गया वह धर्म के हर पथ को जीने का उत्तराधिकारी बन गया। राम वनवास की घटना के समय भी सहज थे और रावण से युद्ध के समय भी।

98. महावीर का म महादेव का, ह हनुमान का व विष्णु का और र राम का वाचक हैं महावीर का नाम लेने से चारों महापुरुषो को एक साथ प्रणाम हो जाता है।

99. महावीर का म महान बनने, ह हिम्मत न हारने, व वचन निभाने और र जीवो पर रहम करने की प्रेरणा देता है।

100. महात्मा गांधी भारत के राष्ट्रपिता है पर महावीर भगवान भारत के प्राण हैं क्योंकि गांधी ने महावीर प्रदत्त अहिंसा से भारत को आजादी दिलाई।

101. जानवर बेजुबान हैं पर बेजान नहीं। अगर हमारे शरीर में पिन चुभ जाय तो हम कराह उठते हैं। सोचो जिन जीवों पर आरी चलती होगी तो कितनी पीड़ा होती होगी उन्हें?

102. चारों गतियों में घूमते-घूमते अनादि काल बीत गये। अब गति नहीं आत्मा की प्रगति करें।

103. रिश्ता वो नही जो दुनिया को दिखाया जाता है, रिश्ता वो है जो दिल से निभाया जाता है।

104. खुशी उन्हें नहीं मिलती जो रिश्तो को अपनी शर्तों पर जीते हैं, खुशी उन्हें मिलती है जो परिवार की खुशी के लिये अपनी शर्तों को बदल देते हैं।

105. रिश्ता और शीशा दोनों नाजुक होते हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि शीशा गल्ती से टूटता है और रिश्ता गलत फहमी से।

106. हम रिश्तों को गाय की तरह जिये, सांप की तरह नहीं। गाय घास खाकर दूध देती है और सांप दूध पीकर जहर उगलता है।

107. रिश्तो में समझौता करना भी सीखिये। क्योंकि थोड़ा झुक जाना अच्छा है किसी रिश्ते को हमेशा के लिये तोड़ने की अपेक्षा।

108. पत्थर अक्सर उसी पेड़ पर मारे जाते हैं जिन पर फल लगे होते हैं।

109. कोई अमीर हो जाये तो अपने कठिनाई के दिन न भूले ताकि, दूसरों की कठिनाईयां समझ सके।

110. बिन मांगे दे दूध बराबर, मांगे दे सो पानी।

वह लेना है खून बराबर, जिसमें खींचातानी।।

111. कल की चिंता से मुक्त होना है तो संत बन जाओ। कल क्या खाना है इसकी चिंता आप नहीं आपके लिये लोग करेंगे। कहां रहना है इसकी व्यवस्था लोग स्वयं करेंगे।

112. पिता तीन-तीन लड़को की फरमाइश पूरी करते-करते ठन-ठन गोपाल रह जाते हैं। इसीलिये अर्ज करता हूँ कि बच्चों की मोह मूर्च्छा में न पड़ें अपना सहज स्वभाव से जीवन जिये।

113. आपके विवेक और मिठास से मिर्ची भी बिक जाएंगी, हल्ला करने वालो की मिठाई भी नहीं बिकती।

114. ईश्वर हमें तीन पन्नों की किताब देकर भेजता है- पहले पर लिखा होता है जन्म, अंतिम पन्ने पर लिखा है मृत्यु। बीच का पेज हमें लिखना है प्यार मुस्कान उदारता के साथ।

115. LKK (लोग क्या कहेगे) की अगर बहुत परवाह करेंगे तो आप चार कदम भी न चल पायेंगे। नया रास्ता बनाकर आप आने वाले कल के लिये प्रकाश स्तंभ बन जायेंगे, मार्ग दर्शक और आदर्श भी बन सकते हैं।

116. गुस्से के चार भेद हैं - बेहद, मामूली, और मीठा, मामूली मीठा, मामूली मीठा तो चल जायेगा। यदि आप बिल्कुल गुस्सा नहीं करते तो समझना आप संत है आगे देवता बनेंगे।

117. अपने नौकर से आप गल्ती हो जाये तो आप उसे दंड देते हैं आपका बेटा गल्ती करे तो आप उसे दंड देते हें। जब स्वयं से गल्ती हो तो स्वयं को दंड देने में कैसा परहेज।

118. मारने वाले के सौ हाथ हैं पर बचाने वाले के हजार, मारने वाले से बचाने वाला बड़ा है।

119. चिंता, भय, अति लोभ, उत्तेजना, विचारों का असामंजस्य-ये सब तनाव के कारण हैं।

120. मानसिक रूप से हारा व्यक्ति मैदान में भी हारता है। हमारी जीवन की असफलता का पहला कारण मानसिक कमजोरी है।

121. माना कि जानवर खेती नहीं कर सकते पर मनुष्य अपने लिये अन्न पाने के लिये जब खेती करता है तब धान पीछे आता है किन्तु जानवरों के लिये घास पहले उग जाती है। इस तरह मनुष्य और पशु दोनों के लिये आहार व्यवस्था प्रकृति के द्वारा हो जाती है।

122. सकारात्मक सोच ऐसा मंत्र है जिससे चुटकियों में ही तनाव मुक्त हुआ जा सकता है।

123. हँसने मुस्कुराने, प्रसन्न और आनंदित रहने से मन का मैल तो साफ होता ही है, शरीर की सम्पूर्ण कोशिकाएं और नाड़ियां भी सक्रिय हो जाती है।

124. खाली दिमाग शैतान का घर इसी लिये खाओ पिओ और व्यस्त रहो।

124. कोई भी कार्य करें तो तन्मयता और अच्छे से करें।

126. हम गरीब नहीं अमीर हैं। आंख, किडनी लाखो रू की है आत्म हत्या करने से अच्छा है कि शरीर के अंग बेच कर व्यवस्था करलें भगवान गरीब घर में पैदा करता हे पर गरीब नहीं।

127. हमें लगता है कांटा बेकार है पर फूलों की रक्षा के लिये फूल से पहले कांटे आ जाते हैं।

128. यदि कोई अंधा भी है तो उसके जन्म लेने का भी कोई न कोई उद्देश्य है- रवीन्द्र जैन।

129. हमारे अच्छे विचार हमारे मित्र और बुरे विचार हमारे शत्रु हैं। अच्छे विचार स्वर्ग और बुरे विचार नर्क ले जाते हैं।

130. पानी ही नहीं वाणी भी छानकर गृहण करें।

131. दुनिया में कोई भी चीज Imposible मत समझिये क्योंकि कोशिश करें तो Imposible शब्द खुद ही आपसे कहेगा मुझमें छिपा है I m posible।

132. खाया-पिया अंग लगेगा, लिया दिया संग चलेगा, बचा खुचा जंग लगेगा। इसलिए अपनी कमाई में से दान अवश्य करते रहे।

133. एक किलो धूल और एक किलो हीरे दोनों का वजन बराबर है पर मूल्य एक जैसा नहीं होता। हम सोचें कि हमारे जीवन में कौन हीरा है कौन धूल। घूल को इतना महत्व ना दें कि हाथ से हीरे छिटक जायें।

134. जब तक हम अपनी पुरानी गल्तियों को छोड़ने का साहस अपने भीतर पैदा नहीं करेंगे, नई प्रगति की किरण हमारे जीवन में नहीं आयेगी।

135. हर कदम पर सावधान रहियें एक कमजोर कड़ी पूरी जंजीर के लिये खतरा बन सकती है। हमारी एक चूक 99 सफलताओं पर पानी फेर देती है।

136. जीवन की हर सफलता की कुंजी DISPLINE में है। D = 4, I = 9, S = 19, C = 3, I = 9, P = 16, L = 12, I = 9, N = 14, E = 5, Total = 100

137. जो काम दूसरो से करवाया जा सकता है उसे स्वयं न करें। अपने लिये नया काम तलाश करें।

138. जीवन में आने वाली प्रतिकूलताओं से घबराइये मत।

139. एक अध्यापक अपाहिज है पर ब्रेन तो पूरी तरह काम कर रहा है। उसने सोचा अपाहिज की जिन्दगी जीने के बजाय अपनी बुद्धि का श्रेष्ठ इस्तेमाल करूँ। उसने मोहल्ले को दो बच्चो को इंजीनियरिंग पढ़ानी शुरु की, पढ़ाई के साथ अनुशासन भी सिखाया। उन दो बच्चो में से एक बच्चा सफल हो गया। मात्र छह महीने की स्थिति में उसके पास बारह तेरह लड़के पढ़ने लग गए। डेढ़ दो साल में 350 बच्चे आने लगें आज उस इंजीनियरिंग टीचर के पास पूरे 3500 बच्चे पढ़ाई कर रहे हैं।

140. कौन कहता है आसमान में छेद नहीं हो सकता।

एक पत्थ्र पूरी तबियत से उछालो तो यारो।।

141. अगर केवल क्लास में पास होना है तो मास्टर जी जितना पढ़ाते हैं उसमें

संतोष कर लीजिऐगा पर यदि आप टॉप टेन में आना चाहते हैं तो गुरु ने जितना सिखाया है उसमें कभी संतोष मत करना। उस ज्ञान को कैसे आगे बढ़ाया जायें इसके लिये पुरुषार्थ शुरु कर दीजियेगा।

142. जीवन एक चुनौती है। जूनून के जरिये व्यक्ति इस चुनौती का सामना करता है।

143. मान लो बचपन मां या बाप बिना गुजर गया या जन्म गरीब घर में हुआ यह एक चुनौती है। स्वीकार करो कुछ बन कर दिखाओ ताकि लोग यह कहें कि बिना मां बाप के लड़के ने कुछ करके दिखाया है।

144. कर्म योग के बल से खंड प्रस्थ को इंद्रप्रस्थ बनाया जा सकता है। बारह खड़ी में पहले 'क' आता है फिर 'ख' आता है। अर्थात् पहले कमाओ फिर खाओ।

145. कर्म काम धेनु की तरह है जो कि हर इंसान को अपना मन वांछित दिया करता है।

146. मनुष्य किताबों के जरिये सीखता है और प्रकृति हमें प्रतिकूल और चुनौतियों के जरिये सिखाती है।

147. आज आप वो काम कीजिये जिसे आपने कभी अधूरा छोड़ दिया था। अधूरे काम को पूरा करने से जीवन की जंजीर की एक कमजोर कड़ी और खत्म हो जायेगी।

148. मुँह पर तारीफ हर कोई करता है पर कोई आपकी पीठ पीछे तारीफ करे तो समझना कि वह दोस्त बनने लायक है।

149. गलती निकालना ''भेजे'' वालों का काम है पर गलती को स्वीकार करना कलेजे वालों का काम है। हम कलेजे वाले इंसान बनें, भेजा लड़ाने वाले तो बहुत पैदा हुये हैं।

150. देशवासियों को सरकार भले अच्छी न मिले पर सिपाही अच्छे मिलने चाहिये। ताकि देश की तरक्की हो सके।

151. सूरज बनकर दुनिया का अंधेरा न मिटा सकें पर दीपक बनकर थोड़ा अंधेरा तो दूर कर ही सकते हैं।

152. कद और पद से नहीं सोच से ऊँचे उठें।

153. यदि खाली बैठोगे तो कभी बहू टोंकेगी कभी पत्नी झल्लायेगी इज्जत नहीं रहेगी। कोई भी काम करो मगर खाली मत बेठो खाली, दिमाग शैतान का घर।

154. निठल्ला बैठना अच्छा तो लगता है पर परिणाम नहीं मिलता सक्रिय कर्मचारी ईमानदारी की जिंदगी जिया करते हैं। निठल्ला व्यक्ति बनाने का काम करता नहीं, इसीलिये बिगाड़ने की योजना बनाता है।

155. जो प्रभु के सामने झुकता है वो सबको अच्छा लगता है, जो सबके सामने झुकता है वह स्वयं प्रभु को अच्छा लगता है।

156. सदा विनम्र रहिये ताकि आप किसी के दिल से न उतरें बल्कि सब के दिलों में उतरे।

157. अगर आपके कारण किसी के आंख में आंसू आते हैं तो यह सरासर पाप है अगर आपके लिये किसी की आँख में आंसू आते हैं तो निश्चित पुण्य है।

158. ईश्वर से कुछ मांगने से ना मिले तो दुखी मत होइये क्योंकि ईश्वर वह नहीं देता जो आपको अच्छा लगता है अपितु वह देता है जो आपके लिये अच्छा होता है।

159. केवल घर के आले में मंदिर बनाना काफी नहीं है बल्कि अपने पूरे घर को ही मंदिर बनाइये यह जीवन की खुशहाली का पहला राज है। तथा मन मंदिर बने ऐसा करें।

160. अगर आप सब हिलमिल कर रहते हैं, तो समझो स्वर्ग सदा आपके साथ रहता है।

161. एक दिन इंसान ने भगवान से पूछा मेरे प्रेम और आपके प्रेम में क्या अंतर है? भगवान ने कहा पक्षी हवा में उड़े यह मेरा प्रेम है और पक्षी पिंजरे में रहे वो समझो तुम्हारा प्रेम है।

162. किसी को सजा देने से पहले दो मिनट रूकिये। याद रखिये अगर आप किसी की एक गल्ती माफ करते है तो भगवान आपकी सौ गल्तियाँ माफ करता है।

163 कभी आप दूसरो के लिए मांग कर देखो, कभी अपने लिए मांगने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

164 किसी के सुख की वजह बनो पर साथी नहीं... और किसी के दुःख के साथी बनो पर वजह नहीं।

165 जिंदगी हंसाए तो समझना कि, अच्छे कर्मो का फल है जब रूलाये तो समझना कि अच्छे कर्म करने का समय आ गया है।

166 दुनिया में 'दान' जैसी कोई 'संपत्ति' नहीं, 'लालच' जैसा कोई 'रोग' नहीं, अच्छे स्वभाव' जैसा कोई आभूषण नहीं और 'संतोष' जैसा और कोई 'सुख' नहीं।

167 फैसला लेने की शक्ति अनुभव से ही आती है पर सच्चा अनुभव गलत लिये हुए फैसलों से ही आता है।

168 मंजिल उन्हीं को मिलती है; जिनके सपनो में जान होती है; पंख से कुछ नहीं होता; हौसलों से ही उड़ान होती है।

169 कुछ ऐसा काम करो, कि आपके माता-पिता प्रार्थना करें कि हर जन्म में ऐसी संतान देना।

170 अच्छे मित्र और अच्छी किताबें चिंता दूर करने में कारण हैं।

171 जीभ के सुधरने पर भोजन और भजन दोंनो अच्छे से होने लगेंगे।

172 हर गलती को अपना गुरु बनायें और शिक्षा लें।

173 दुनिया नाम को नहीं काम को नमस्कार करती है।

174 बिना मेहनत के घास-फूँस और झाड़ झंखाड़ पैदा होते हैं, सुन्दर बाग तो मेहनत से बनाये जाते है।

175 अभिषेक और अष्टद्रव्य से भगवान की पूजा करने पर सभी ग्रहो के अशुभ प्रभाव कम होते हैं।

176 समय से पहले और भाग्य से ज्यादा ना किसी को मिला है, ना मिलेगा।

177 लोग कमरे में ए. सी. और दिमाग में हीटर लगाते हैं। जबकि कमरों से ज्यादा, दिमाग ठण्डा होना जरूरी है।

178 महान लोग कम शब्द बोलकर ज्यादा प्रभावित करते हैं और मूर्ख ज्यादा बोल कर अपनी ही बात खराब कर लेता है।

179 बिना मेहनत किये फल की और बिना काम किये सम्मान की आशा मत करो।

180 माँ के पेट में केवल शरीर का निर्माण होता है, अच्छा जीवन हमारी कड़ी मेहनत और सच्ची लगन से बनता है।

181 कौन देता है उम्र भर सहारा लोग तो अर्थी में भी कंधे बदल देते हैं।

182 छोटी-छोटी बातें दिल में रखने से, बड़े-बड़े रिश्ते कमजोर हो जाते हैं।

183 विज्ञान कहता है जीभ पर लगी चोट जल्दी ठीक हो जाती है, पर जीभ से लगी चोट कभी ठीक नहीं होती हैं।

184 श्रवण कुमार की माँ बनना आसान है पर श्रवण कुमार की पत्नी बनना कठिन है।

185 अकेले रह नहीं सकते, साथ रहना मुश्किल है, तो स्वभाव में परिवर्तन लाइये, और धर्म में मन लगाइये।

186 उड़ने के लिये पंख की जरूरत पक्षियों को है। मनुष्य तो जितना झुकेगा उतना उड़ेगा।

187 तुम्हारी शान घट जाती, कि रूतवा घट गया होता। जो गुस्से में कहा तुमने, वही हँसकर कहा होता।

188 मुख की सुंदरता से, विचारों की सुंदरता ज्यादा जरूरी है।

189 सफर का आनन्द लेना है, तो सामान कम रखिये और जिंदगी का आनन्द लेना है, तो दिल में अरमान कम रखिये।

190 बचपन का खाया शरीर और जवानी की कमाई दौलत बुढ़ापे तक काम आती है।

191 संसार की सारी चीजें ठोकर लगने के बाद टूट जाती हैं पर इंसान ठोकर खाने से बन जाता है।

192 जब पाँच सेकंन्ड की मुस्कुराहट से फोटो अच्छी बनेगी तो हमेशा की मुस्कुराहट से जिन्दगी अच्छी क्यों नहीं बनेगी।

193 इंसान की आवश्यकता की पूर्ति संभव है, किन्तु इच्छाओं की नहीं।

194 घर जैसी सुविधा हर जगह नहीं मिलेगी, परिस्थितियों से समझौता करना सीखो।

195 जीवन एक रंग भूमि है, इसे रण भूमि मत बनाइऐ।

196 जिन्दगी में बड़ा आदमी बनना अच्छी बात है, पर अच्छा आदमी बनना बड़ी बात है।

197 पानी मर्यादा तोड़े तो विनाश, वाणी मर्यादा तोड़े, सर्वनाश।

198 यदि आप घर के मुखिया है तो आपके अन्दर तीन बाते होना जरूरी है- ''समता, क्षमता और ममता''

199 वाणी तभी सार्थक है, जब वह इष्ट मिष्ट शिष्ट हो।

200 घड़ी गिर जाये तो बन्द हो जाती है, और बीबी बिगड़ जाये तो शुरू हो जाती है। ''एक चुप सौ सुख''

201 अहंकार की कार में बैठकर, प्रभु तक पहुंच पाना संभव नहीं है, वहाँ विनम्रता के विमान द्वारा पहुँचा जा सकता है।

202 मस्तक झुकाने से अभिमान मर जायेगा आँखो को भिगोने से पत्थर दिल पिघल जायेगा। जह्विा को आराम देने पर स्वास्थ्य सुधर जायेगा, इच्छाओं को घटाकर देखिये खुशियों का संसार नजर आयेगा।

203 अगर आपके पास देने के लिये है कुछ नहीं तो निराश ना होवें सबको सम्मान दें।

204 अगर किसी परिस्थिति में शब्द ना हो तो केवल मुस्करा दीजिये शब्द उलझा देंगे। मुस्कुराहट काम करती है।

205 प्रेम बचपन में मुफ्त मिलता है, जवानी में कमाना पड़ता है, और बुढ़ापे में माँगना पड़ता है।

206 बचपन में सुना था ऊन गरम होता है स्कूल में पता चला जून गरम होता है पापा ने बताया था खून गरम होता है। जिन्दगी में संघर्षो से लड़ते-लड़ते पता चला कि जुनून गरम होता है।

207 दिल लगाने से बेहतर है एक पेड़ लगायें। वो घाव नहीं तो कम से कम छाँव तो देगा।

208 अकर्म से कर्म नष्ट होता है, विशुद्धि से अशुद्धि नष्ट होती है। ज्ञान से अज्ञान नष्ट होता है। अतः धर्म के माध्यम से विशुद्धि और ज्ञान बढ़ायें।

209 जीवन को गुनगुनाते हुये जीना है या भुन भुनाते हुए। इसका फैसला हमें ही करना है। चेहरे का रंग कैसा हो इसका फैसला कर्म करते हैं। पर हमारे जीवन जीने का ढंग कैसा हो इसका फैसला हम करते हैं।

210 तनाव और दुख का एक कारण ईर्ष्या भी है वह चाहे कैसी क्यों न हो, नुकसान ही पहुंचाती है। दूसरों को बढ़ता हुआ देखकर ईर्ष्या मत कीजिये।

211 तलवार की कीमत धार से, और व्यक्ति की कीमत होती है व्यवहार से, आपके चेहरे की सुंदरता दो मिनिट सुख देती है, पर सुंदर व्यवहार पूरा जीवन सुखी कर देता है।

212 जिंदगी ऐसी जियें कि जहां आप रहें वहाँ सब आपको प्यार करें जब जाऐं सब आपको याद करें।

परम विदुषी लेखिका रत्न गणिनी आर्यिका श्री 105 स्वस्तिभूषण माता जी की मंगल प्रेरणा एवं निर्देशन में चल रहे ऐतिहासिक कार्य।

- पद्मपुरा में चौबीसी, मुख्य वेदी के शिखर का विस्तार।
- ज्ञान तीर्थ मुरैना में विशाल ऐतिहासिक पंचकल्याणक।
- श्री गोपाल दि. जैन संस्कृत महाविद्यालय, मुरैना का पुर्नोद्धार।
- मुरैना में माँ स्वस्ति इंटरनेशनल स्कूल की स्थापना।
- सिद्धक्षेत्र सोनागिर में सहस्त्रकूट जिनालय का निर्माण एवं सौन्दर्यकरण।
- बारां नसिया में नवीन मन्दिर का निर्माण।
- प्राचीन दि. जैन शांतिनाथ अतिशय क्षेत्र का जीर्णोद्धार झालरापाटन।
- डोला तीर्थ का विस्तार एवं विकास।
- श्री मुनिसुव्रतनाथ दि. जैन अतिशय क्षेत्र केशोरायपाटन का विस्तार एवं उद्धार।